बीकानेरी बोली का
भाषाशास्त्रीय
अध्ययन
(शोध-प्रबंध)



- लेखक -
डॉ॰ राम कृष्ण व्यास 'महेन्द्र'
एम॰ ए॰ (हिन्दी-संस्कृत)
पीएच॰ डी॰

प्रकाशक

श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन

बीकानेरी बोली का भाषाशास्त्रीय अध्ययन

– लेखक –

डॉ राम कृष्ण व्यास 'महेन्द्र'

मूल्य

रु. २५

प्रकाशक

श्री गणेश शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

व्यवस्थापक

डा राम कृष्ण व्यास महेन्द्र

नत्थूसर गेट के भीतर, बीकानेर

– मुद्रक –

श्री गणेश शक्ति प्रकाशन बीकानेर

भारत प्रिंटिंग प्रेस, जेल रोड, बीकानेर

BIKANERI BOLI KA BHASHA SHASTRIYA ADHYAYAN

Dr RAM KRISHNA VYAS

भूमिका

राजस्थानी के समृद्ध साहित्य की ओर विद्वानों का ध्यान आकर्षित हुआ है और उसके जैन एवं जैनेतर साहित्य के शोध में पर्याप्त कार्य हुआ है, पर उसके भाषिक स्वरूप का उतना अध्ययन नहीं हुआ है। विशाल भू-भाग में फैली राजस्थानी की मुख्य विभाषाएं एवं अनेक बोलियां हैं। इनके वैज्ञानिक अध्ययन के अभाव से न तो राजस्थानी के स्वरूप के सम्बन्ध में चरम निष्कर्ष प्रकाश में आ सके हैं और न इनकी पारस्परिक स्थितियों को सुस्पष्टता से समझा जा सका है। इससे भ्रांतियाँ उत्पन्न हुई हैं जिनके निराकरण के लिए इसकी विभाषाओं और बोलियों का वैज्ञानिक अध्ययन अपेक्षित है।

डॉ रामकरण व्यास जो बीकानेर के निवासी हैं ने बीकानेरी का अध्ययन वैज्ञानिक दृष्टि से किया है और उस बोली को प्रकाश में लाने का सफल प्रयास भी किया है जिसके बोलने वालों की संख्या 47 बताकर उसके स्वतन्त्र अस्तित्व तक को नकारा सा गया है। यह लेखक बीकानेरी भाषियों की जनसंख्या 715000 मानता है और अनुमान एवं तर्क-बल पर अपने कथन की पुष्टि करता है क्योंकि समस्त बीकानेरी भाषियों की गणना करना एक व्यक्ति के बलबूते से परे की बात है।

जब किसी बोली का अध्येता उसका भाषी भी होता है, तब उसके अध्ययन में व्यक्तिनिष्ठता आ जाने का खतरा सदा बना रहता है और उसका अध्ययन व्यक्ति बोली अध्ययन जैसा बनकर रह जाता है। ऐसे अध्ययन को वस्तुनिष्ठ बनाने के लिये लेखक ने प्रमाणित नमूने एकत्र किये हैं। वह नगर से बाहर जाकर बीकानेरी बोली के स्वच्छ नमूने ग्राम-वृद्धाओं से एकत्र कर लाया है जिनकी प्राप्ति बीकानेर नगर में सम्भव नहीं थी और जिन्हें मिलावट दूषण से मुक्त समझा जा सकता है। बीकानेर नगर के मुहल्लों (चौकों) में जाति बोलियों का अन्तर सुस्पष्ट देखा जा सकता है, जिनके आधार पर किसी मानक रूप को खोजकर उसका अध्ययन करना सर्वथा असम्भव सा कार्य था।

बीकानेरी का अध्ययन लगर ने अनेक स्तरों पर किया है । विषय प्रवेश म लगर न बीकानेरी की ध्वन्यात्मक विशेषताओं पर भी विचार किया है और कुछ नवीन ध्वनियों जो इसकी अपनी है, प्रकाश मे लाया है। ताल्य मध्यग /ध्ं/ जो हिन्दी /ध/ का स्थानापन्न है, बीकानेरी की नहीं पर गुवरणा बीकानेरी की विशेषता है उसके मानक रूप म ऐसा उच्चारण नही मिलता है । किसी भी ध्वनि को बिना भाषा वज्ञानिक प्रयोग शाला के स्थापित एव पपरिभाषित करना शोधार्थी के लिए दुसाध्य है, पर फिर भी /द/ग/ब/ जसी व्यजन ध्वनियो के जटिल उच्चारण को पकडकर उन को स्थापित किया गया है ।

वस्तुत डा यास का प्रस्तुत अध्ययन आलोच्य बोली का रूपात्मक अध्ययन है, जिसे अत्यन्त तत्परता एव मनोयोग से प्रस्तुत किया गया है । इस अध्ययन मे वह परम्परावादी नही रहा है, अपितु आधुनिक भाषा वैज्ञानिक नाधो का अपने अध्ययन मे उसने समुचित उपयोग किया हैं । नामपदो के निर्माणकारी प्रत्यय अध्याय जो पूव के तीन अध्यायो के निष्कष रूप मे लिखा गया है सुन्दर बन पडा है । उसमे लेखक की स्थापनाए मौलिक है । इसी प्रकार नियापद अध्याय भी गहन अध्ययन से प्रसूत है । अतिम अध्याय वाक्य रचना है । यदि भाषा की लघुतम सार्थक रूपात्मक इकाई धातु है तो वहतर इकाई वाक्य है । बीकानेरी वाक्य रचना, जो बोली की वाक्य रचना है लेखक ने सभी प्रकार के नमूने खोज निकाले हैं ।

डॉ यास द्वारा प्रस्तुत बीकानेर की इस उत्तरी बोली का यह अध्ययन विद्वानो एव शोधार्थियो द्वारा समादृत होगा यह मेरा विश्वास है और यही मेरी कामना भी है ।

डा कन्हैया लाल शर्मा
एम ए पीएच डी
अध्यक्ष हिन्दी-विभाग
डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

प्राक्कथन

भाषा भावो एव विचारो की वहनकर्त्री एव अभिव्यजनकर्त्री है। पावनभूमि भारतवष विश्व का वह आदि देश है जहा अत्यन्त प्राचीनकाल म ही भाषा का सूक्ष्मातिसूक्ष्म सश्लेषण विश्लेषण किया गया जिसे विश्व के ख्यातनामा भाषाविदो ने सहष स्वीकार किया है। ब्लूमफील्ड के अनुसार सस्कृत के अतिरिक्त ससार की अन्य किसी भाषा का इतना पूण वर्णनात्मक अध्ययन नही हुआ है। शिक्षा ग्रन्था, प्रातिशाख्यो तथा महर्षि यास्क के निरुक्त, आचाय पाणिनि की अष्टाध्यायी महामुनि पतजलि के महाभाष्य तथा भतहरि के वाक्यपदीय मे भाषा के तात्विक विश्लेषण का जो निदशन हमे उपलब्ध होता है वह आज न केवल भारतवष के लिए वल्कि विश्व के लिए आदश है। भाषा के सूक्ष्मातिसूक्ष्म अवयवो यथा ध्वनियो के उच्चारण स्थानो, प्रयत्नो1, पदो की व्याख्या व भेदोपभेदो, प्रकृति-प्रत्यय व वाक्यो का इतना विस्तत एव गहनतम सश्लेषण-विश्लेषण विश्व की किसी भी भाषा मे उपलब्ध नही होता। जो भाषिक काय यूरोप-अमरीका आदि मे अब हो रहा है, वह भारत में आज से लगभग ढाई हजार वष पूव ही चरम पर पहुँच गया था। इतना ही नही सस्कृत के अतिरिक्त कालान्तर मे विकसित भाषाओ मे पालि का कच्चायन न प्राकृत का वररुचि ने अपभ्रश का हेमचन्द्र ने विश्लेषण किया। आधुनिक काल मे भी यह परम्परा अक्षुण्ण है। अनेको नव्य भारतीय आय भाषाओ व बोलियो का आज भी अत्यन्त सूक्ष्म एव वैज्ञानिक अध्ययन हुआ है जिनमे मूद्धन्य भाषाविद डा सुनीतिकुमार चटर्जी कृत 'ऑरिजिन एण्ड डेवलपमेंट आफ वगाली' लेंग्वेज 'भारतीय आय भाषा व हिन्दी' डा० धीरेन्द्र वर्मा कृत व्रज,

भाषा व्याकरण', हिन्दी भाषा का इतिहास, डॉ० उदयनारायण तिवारी कृत भोजपुरी भाषा और साहित्य, हिन्दी भाषा उद्भव और विकास' डॉ० चन्द्रभान रावत कृत 'मथुरा जिले की बोली' डॉ० कन्हैयालाल शर्मा कृत 'हाड़ौती बोली और साहित्य' विशेषत उल्लेख्य है। प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध भी इसी परम्परा मे जोडी जा सकने वाली एक कडी है।

प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध मे मेरी प्रेरणा के आदि स्रोत श्रद्धेय गुरुवर डॉ० कन्हैयालालजी शर्मा हैं और यदि मैं यह कहूँ कि मेरे लेखन कृत्य के ही प्रेरणा-स्रोत श्रद्धेय गुरुवर हैं तो कोई अत्युक्ति न होगी।

जब मैं एम ए (उत्तरार्द्ध) का छात्र था उस समय डा० साहब ने ही मुझे अष्टम पत्र मे 'बीकानेरी नामपद' शीर्षक लघु शोध प्रबन्ध लिखने की प्रेरणा दी। अपने लघु प्रबन्ध को मुद्रित करवाते समय मुझे बोली के खण्ड अध्ययन का बोध हुआ। मैंने तत्काल निर्णय किया कि मैं आलोच्य बोली का सर्वांगीण अध्ययन प्रस्तुत करूगा। उसी समय मैं अनुसधान परक अपने अध्ययन कार्य मे जुट गया। मैंने अद्यावधि भाषाओ व बोलियो पर प्रकाशित प्राचीन अर्वाचीन लगभग सभी ग्रन्थो का अध्ययन किया। मैं अनवरत चार वर्ष के अध्यवसाय से प्रस्तुत प्रबन्ध लिख पाया हूँ।

अब प्रस्तुत प्रबन्ध के प्रकाशित होने के क्षणो तक मैं जिन स्थितियो से गुजरा हू उनसे भी पाठको को थोडा सा अवगत करा दू तो अप्रासगिकता न होगी। अध्ययन करने का निश्चय करके मैंने सर्व प्रथम बोली के दो-ढाई सौ गद्य पद्यात्मक नमूने ग्रामीण क्षेत्रो व शहरी निवासियो के मुख से सुनकर इकट्ठे किये। उस समय मेरे समक्ष बोली के इतने सूक्ष्म प्रारूप उपस्थित हुए कि मेरे लिए यह निर्णय करना दुरूह हो गया कि कौन से स्थल की बीकानेरी को आदर्श बोली मानू। बीकानेर शहर मे ही ब्राह्मण जाति, क्षत्रिय जाति, वैश्य

(माहेश्वरी व ओसवाल) जाति, धोबीतलाई व चूनपचो के मोहल्ले मे निवास करने वाली मुस्लिम जाति, गोस्वामियो के मोहल्ले मे निवास करने वाली गोस्वामी जाति, डूम जाति व अन्य निम्न जाति के लोगो की बोली मे ही सूक्ष्म अतर उपलब्ध हुआ। कोलायत, नोखा, लूनकरणसर, रतनगढ सरदारशहर, डूगरगढ चूरू राजगढ, तारानगर आदि की बोलियो मे भी अतर उपलब्ध हुआ परन्तु ऐसा स्थल एक भी उपलब्ध नहीं हुआ जहा इन विविध क्षेत्रो के निवासी एक दूसरे की बात को न समझें। जब मैं उनसे निजी बोली मे ही बोलकर कहानी, किस्से आदि विविध क्षेत्रो मे सुनता तो कोई भी वाक्य ऐसा नही होता था जिसे समझने मे कठिनाई हो। हा एक दो शब्द या बोलने के ढग मे अत्यन्त सूक्ष्म अतर अनुभूत होता था। अत मे मैंने अधिकाश ग्रामीण क्षेत्रो व बीकानेर नगर मे बोली जाने वाली व ग्रियसन द्वारा दत्त उदाहरण को आदर्श बीकानेरी बोली मानकर प्रस्तुत बोली का गवेषणात्मक अध्ययन प्रारम्भ किया। तत्परिणाम स्वरूप मुझे विभिन्न क्षेत्रों मे बीकानेरी की सात विशिष्ट ध्वनिया उपलब्ध हुई जो इस प्रकार है—ऍ, ऑ, ॅ ॰द, ॰ड, ॰ब, ळ। उक्त ध्वनियो मे ऍ व ऑ ध्वनिया अंग्रेजी Hat व Hot शब्दो के हैं व हॉ के सदृश उच्चरित होती है। इन ध्वनियों के उच्चारण के लिए 'International Phonetic Association की खास लिपि मे [ε ɔ] से चिह्नत किया गया है। इन दो ध्वनियो के लिए तो मुझे लिपि चिह्न उपलब्ध हो गये पर शेष के लिए नही हुए। अत सभी विशिष्ट ध्वनियो के लिए मैंने नये लिपि चिह्न निधारित किये जो इस प्रकार है-/‿ ॅ ॰/ बीकानेरी मे ‿ चिह्न विशिष्ट ध्वनि का द्योतक है यथा करकर व करकर मे उच्चारण व अर्थ भेद है। प्रथम शब्द

आदेश वाचक व शोरगुल वाचक है जबकि द्वितीय आम्ब मे रेत आदि चले जाने पर बोला जाता है। इसी प्रकार ओ ऑ मे, ए ऍ में, ब-॰ब में द ॰द में ड, ॰ड, ह में व ल ळ में भिन्नता है। ध्वनियो

के विश्लेपणोपरात मैंने बोली के विविध अवयवो– नामपदा, क्रियापदो, वाक्यो का क्रमश अध्ययन किया। इस बीच मेरे सामने जो जो सद्धातिक एव व्यावहारिक कठिनाइया आई उन्ह मैं बोली के ममज्ञ मनीषियो व भाषिक ग्रथो के आधार पर सुलझाता रहा। पाठको को यह जानकर आश्चय होगा कि मैंने यह प्रबध सात बार लिखा एव प्रत्येक आवृति में मेरे समक्ष नये नये तथ्य उजागर हुए। मेरे अध्यवसाय व अथक प्रयास के बावजूद भी यदि कही त्रुटिया रह गई है तो विद्वान गण मेरे तीनो प्रबधा (बीकानेरी–नामपद, बीकानेरी–क्रियापद बीकानेरी बोली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन का अध्ययन कर अपने बहु–मूल्य सुझावो से मुझे लाभान्वित करेंगे।

प्रस्तुत प्रबध के विषय में मैं गर्वोक्तिया लिखकर आत्मश्ल घी बनना नही चाहता पर इतना अवश्य कहूँगा कि प्रस्तुत प्रबध राजस्थानी की प्रतिनिधि शाखा मारवाडी और मारवाडी की प्रतिनिधि बोली बीकानेरी का प्रथम व मौलिक अध्ययन है। इससे पूव ग्रियर्सन महोदय ने इस बोली पर यत्किंचित प्रकाश डाला है पर वह नाममात्र का ही है।

इस अवसर पर मैं अत्यत ही हष का अनुभव कर रहा हू जब श्रद्धेय गुरुवर डॉ० कन्हैयालाल शर्मा ने अपने अत्यत व्यस्त समय में प्रस्तुत शोध-प्रबध की भूमिका लिखकर मुझे कृत कृत्य किया है। मैं अपने अग्रज डॉ० गोपालनारायण श्री शिवशकरनारायण व डा० कविवर भगवानदास किराडू के प्रति विशेष आभार व्यक्त करता हूँ, जिन्होने किसी न किसी रूप में प्रस्तुत प्रबध लेखन व प्रकाशन में सहयोग दिया है।

अत में आपरितोपाद विदुषा न साधु मन्ये प्रयोगविज्ञान व करतृनमपराद्ध मनुमर्हति सत अभ्यथनाओ के साथ अद्यावधि की श्रम साधना का यह पुष्प मा वागेश्वरी के पाद-पक्जो मे समर्पित करता हूँ—

व्यास-निकेतन
नत्थूसर गेट के भीतर
बीकानेर
जन्माष्टमी वि० स० २०३१

डॉ० रामकृष्ण व्यास 'महेन्द्र'
एम ए (सस्कृत-हिन्दी)
पीएच डी

नए लिपि एवं संकेत-चिन्ह

यह अद्ध संवृत पश्च अति ह्रस्व स्वर है। हिन्दी की ऐ, इ एवं कभी-कभी अ ध्वनि का उच्चारण बीकानेरी मे इस ध्वनि मे होता है यथा — हि० ऐसा - बी० अस्सो हि० कितना - बी० कत्तो हि० रक्षा - बी० रख्या आदि।

यह अद्ध विवृत अग्र ह्रस्व स्वर हैं। बोली मे इस ध्वनि का उच्चारण अंग्रेजी शब्द Men Then Pen आदि के ऍ ध्वनि के समान होता हैं यथा कॅण आदि।

यह अद्ध विवृत ह्रस्व पश्च स्वर है। इस ध्वनि का उच्चारण बोली में अंग्रेजी शब्द 'on' के ऑ की तरह होता है यथा बॉ, थॉ ऑ आदि। हिन्दी की अधिकाश आकारान्त ध्वनियो का उच्चारण इसमें होता हैं।

:- बीकानेरी मे इन दोनो ध्वनियो मे क्रमश ब + भ = ॰व एवं द + ध = ॰द का योग है। इन ध्वनिया का उच्चारण न तो 'ब' के समान होता है और न द के समान यथा ॰बबोर मे प्रथम ब का उच्चारण द्वितीय ब के उच्चारण से भिन्न है।

शेष ध्वनिया अधिकतर हिन्दी के समान ही उच्चरित होती है अत यहा प्रस्तुत नही की गई है।

ध्वनि प्रक्रियात्मक दृष्टि से सापरिवर्तक का द्योतक।

तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए प्रयुक्त सकेत

हलन्त

व्युत्पन्न या सिद्ध रूप का द्योतक

ऐतिहासिक पूर्व रूप से पर रूप का द्योतक

पर प्रत्यय एवं विभक्ति का विभाजक सकेत

धातु सकेत

प्रत्यय के पश्चात् लगने से पूर्व रूप एवं उसके पूर्व मे लगाने से पर रूप का द्योतक।

संक्षिप्त-रूप

अप०	अपभ्रंश
आ० भा० आ० भा०	आधुनिक भारतीय आर्य भाषा
आ० ई० ऊ० व्यं० वि०	आकारान्त ईकारान्त ऊकारान्त व्यंजनान्त विशेषण
ई०	ईसा
ई० पू० प्र०	ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी
एल० एस० आई०	लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया
गौ० ही० ओ०	गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
ति० आ० वि० प्र०	तिर्यक आधार विधायक प्रत्यय
पृ०	पृष्ठ
प०	पठित
प्रा०	प्राकृत
पु०	पुल्लिंग
पु० सं०	पुंलिंग संज्ञा
पप्र०	पर प्रत्यय
बी० रा० इ०	बीकानेर राज्य का इतिहास
भा० वा० स०	भाव वाचक संज्ञा
मू० आ० वि० प्र०	मूल आधार विधायक प्रत्यय
मू० एव वि० सं० वि० रूप	मूल एवं विकारी संज्ञा व विशेषण रूप
लि० व० का०	लिंग-वचन-कारक
सं० आ० वि० प्र०	सम्बोधन आधार विधायक प्रत्यय
स्त्री० सं०	स्त्री वाचक संज्ञा
सं०	संस्कृत

विषयानुक्रमणिका

६ अव्यय

७ क्रियापद

समर्पण

वात्सल्य, दया एव सौम्यता
की
साकार मूर्ति
पूज्य-पाद पितृश्री प प्रवर
बगसीराम जी व्यास
विद्यावाचस्पति, साहित्याचार्य, व्याकरणाचार्य
को
जिनका अथक परिश्रम, अपार स्नेह एव प्रेरणास्पद
सदुपदेश ही इस कृति का मूल कारण है
उन्ही के पाद-पकजो मे
यह कृति समर्पित
है।

अध्याय / १

विषय-प्रवेश

१ १ बीकानेर की प्रागैतिहासिक पृष्ठभूमि

भारतीय प्रान्तो म राजस्थान प्रान्त का ऐतिहासिक एव साहित्यिक दृष्टि म महत्त्वपूर्ण स्थान है। स्वर्णाभ सिकता के विशाल टीला से आवृत्त बीकानर नगर इसी प्रान्त के पश्चिम उत्तर म स्थित है। भूगर्भ शास्त्रियो का अनुमान है कि यह प्रदेश जूरेसिक क्रीटशियम एव इतासिन के युगा म समुद्राप्लावित था। टरीशरी युग म इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति म परिवतन हुआ एव पृथ्वी की आन्तरिक शक्तिया के सक्रमण से वह भाग ऊपर उठने लगा। शन शन समुद्र समाप्त हो गया एव रेतीला भाग निकल आया। वाल्मीकि रामायण म भी समुद्र से मरुस्थल की उत्पत्ति विषयक एक रोचक गाथा मिलती है।[1] वदा की ऋचाओ से भी उक्त भू विद्या

१— तस्मात् तद बाण पातन त्वच कुक्षिष्वशोषयत्। —२

विख्यात त्रिषु लोकेषु मरुकान्तार मेव तत् ॥

(युद्ध काण्ड / सग २२ / श्लोक ३६ ३७)

अन्वेषण की पुष्टि हो जाती है। ऋग्वेद की ऋचाओं में उल्लेख मिलता है कि शतद्रु व्यास और सरस्वती नदियाँ नदियों की तरह समुद्र में जाकर गिरती थी।[1] बीकानेर के बरसाती रेतीले भाग पर यद्यपि आज हम किसी भी नदी के दर्शन नहीं करते तथापि पुरातत्त्वान्वेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि इसकी पश्चिमी सीमा पर कभी सरस्वती नदी बहा करती थी जो पूरा स्रोत लुप्त हो गई है।[2] पं० विद्याधर शास्त्री की भी यही मान्यता है कि बीकानेर का उत्तर पूर्वी भाग सरस्वती-दृषद्वती की सहायता से अनुप्राणित रह चुका है।[3] स्पष्ट अतिरिक्त सिन्धु नदी की सहायक नदी घग्गर भी जो पहले हाकड़ा के नाम से विख्यात थी इसके उत्तरी भाग में बहती हुई सिन्धु में जाकर गिरती थी। सरस्वती नदी का लुप्त होना ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी से भी पूर्व मानना उचित है क्योंकि महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थों में जहाँ कहीं सरस्वती नदी का वर्णन किया है अन्तःसलीलता कह कर ही किया है एवं कालिदास का समय ई० पू० प्र० शताब्दी ही विद्वानों को मान्य है। महाभारत में भी सरस्वती नदी के लुप्त होने का उल्लेख मिलता है।[4] घग्गर के लुप्त होने का समय विद्वानों को ई० की छठी शताब्दी

१– एका चेतत्सरस्वती नदीनां शुचिर्यती गिरिभ्य आ समुद्रात्।

(ऋग्वेद, ७ म / ९५ सू० / २ मन्त्र)

इन्द्रेषिते प्रसवं भिक्षमाणे समुद्रं रथ्येव याथः।

(ऋग्वेद ३ म / ३३ सू० / २ मन्त्र)

२– गौरी शंकर ओझा बीकानेर का परिचय पृष्ठ ७

३– पं० विद्याधर शास्त्री वर्तमान बीकानेरी और संस्कृत
राजस्थान भारती अंक २, भाग ४, अक्टूबर १९५४

४– अवलोकनीय महाभारत—
दृश्यादृश्या च भवति तत्र सरस्वती।
एता दिव्याः सप्तगंगा त्रिषु लोकेषु विश्रुताः ॥

(भीष्म पर्व ६/५०)

मान्य है। उक्त नदियों के सूखने का मार्ग तो आज भी दृष्टिगत होता है। वर्षा काल में पानी इसी मार्ग से हनुमानगढ़, सूरतगढ़, होता हुआ अनूपगढ़ पहुँच जाता है जिसे आजकल "नाली" कहते हैं।

उपर्युक्त एवं अन्याय प्रमाणों से स्पष्ट हो जाता है कि समुद्र के पीछे हट जाने या सूख जाने के परिणाम स्वरूप मरु प्रदेश उद्भूत हुआ। बीकानेर प्रदेश मे आज भी कहीं कहीं समुद्र के अवशेष के रूप में शंख, सीपी, कौड़ी, गोल पत्थर आदि मिलते हैं, जो बीकानेर का किसी काल विशेष में समुद्राप्लावित होने की सूचना देते हैं एवं जो नदियां (सरस्वती, घग्गर आदि) इसकी उत्तरी पूर्वी सीमा पर प्रवाहित होती थी वे भी अब पूर्णतः लुप्त हो गई है।

१.२ बीकानेर प्रदेश का नामकरण

पौराणिक विवरणों से स्पष्ट होता है कि बीकानेर का प्राचीन नाम 'जांगल' देश था।[1]

१– (अ) गौरी शंकर हीराचंद ओझा बीकानेर राज्य का इतिहास, पहला भाग, पृष्ठ १

(ब) स्कन्द पुराण के प्रभास माहात्म्य में तीर्थाष्टक की गणना है, जिसमें पुष्कर के साथ (कुरु जांगल) का भी पाठ है। (अध्याय ८८, श्लोक २२)

(ग) अवलोकनीय महाभारत

(अ) कच्छा गोपाल कक्षाश्च जांगला कुरु वर्णकः (भीष्म पर्व, ९ / ५६)

(ब) तत्रेमे कुरु पांचाला शाल्वामाद्रेय जांगला (अग्नि पर्व, १० / ११)

(स) पैत्र्य राज्यं महाराज। कुरवस्ते स जांगला। (उद्योग पर्व ५४ / ७)

विक्रयनीर > विक्कनेर > वीकानेर

३— कनल टाड ने बीकानेर का नाम राव ' बीका " एव " नेरा " जाट दाना व्यक्तियो के नाम के मल से माना है। अपन मत की पुष्टि के लिए उन्होंने लिखा है कि " बीकानेर की राजधानी के निर्माणार्थ जो स्थान पसन्द किया गया, उसका स्वामी एक जाट था। बीकाजी न जाट से उस स्थान का माग की और आश्वासन दिया कि तुम्हारा नाम जोड कर इस राज्य का नाम रखूगा। उस जाट न बीकाजी का प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार करत हुए भूमि द दी। तत्पश्चात् उस भूमि म राजधानी का निर्माण काय प्रारम्भ हुआ और जिस राज्य की प्रतिष्ठा राव ' बीका " ने की उसका नाम बीकानर रखा गया। यह द्रष्टव्य है कि उस जाट का नाम नरा ' था।[1]

४—डॉ० गौरी शकर हीराचन्द ओझा के अनुसार टाड का यह अनुमान ठीक नही है। उनके अनुसार राव बीका न अपने नाम पर ही इस प्रदेश का नाम " बीकानेर " रखा।[2]

५— भाषा वैज्ञानिक दृष्टि से देखन पर उपयुक्त मत युक्ति सगत प्रतीत नही होत। वस्तुत " बीकानेर ' शब्द दो शब्दो बीका + नगर " के मल से बना है। प्रथम शब्द स्पष्टत राव ' बीका " का ही नाम है एव द्वितीय शब्द का विकास डा श्याम सुदर दास के अनुसार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

स० नगर > प्रा० णअरो > अप० नयर > आ० भा० आ० भा० नइर नेर[3]

" नगर ' शब्द स ' नेर ' शब्द का रूपात्मक एव ध्वन्यात्मक विकास इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

सस्कृत के " नगर " शब्द स प्राकृत म ' नो ण सवत्र [4] सूत्र स नकार का परिवतन णकार म हुआ एव ' कगचजतदपयवा

१— कनल टाड राजस्थान का इतिहास पृष्ठ ५१२
२— डा० गौ० ही० ओ० बी० रा० इ०, (पहला भाग) पृष्ठ ६६
३— डा० श्याम सुन्दर दास भाषा विज्ञान, पृष्ठ १७२
४— वररुचि प्राकृत प्रकाश २ / ४२

प्रायोलोप "[1] सूत्र से अल्पप्राण, कठय स्पश व्यजन" ग " का लोप हो गया। सोविन्दुन पु सके[2] सूत्र से ' अम " बिन्दु म परिवर्तित होने पर प्राकृत म 'णअर" रूप सिद्ध हुआ। अपभ्र श काल म णकार पुन नकार म परिवर्तित हुआ एव दो स्वरो के बीच य " श्रुति का आगम हुआ। अपभ्र श उकार बहुला भाषा है अत अ > उ म परिवर्तित हुआ। इस प्रकार अपभ्र श मे 'नयर " रूप सिद्ध हुआ। आ० भा० आ० भा० म सरलीकरण की प्रवत्ति के कारण य > इ म एव पदात स्वर लोप की प्रवत्ति के कारण अन्त्य उ का लोप हो गया एव अ + इ (गुण सन्धि) से नेर शब्द व्युत्पन्न हुआ।

इस प्रकार निष्कष रूप मे कहा जा सकता है कि " बीकानेर " शब्द की व्युत्पत्ति दो शब्द बीका + नगर " से हुई है। प्रथम शब्द तो निर्विवाद रूप से राव बीका के नाम से सम्बद्ध है एव द्वितीय शब्द नेर " न राव बीका के ज्येष्ठ पुत्र नरा ' से सम्बद्ध है और न ही ' नेरा जाट से। दोनो मत कल्पना प्रसूत ही प्रतीत होते हैं जिसे टाड जसे विद्वान ने बिना किसी गवेषणा बुद्धि के स्वीकार कर लिया। यदि टाड का मत स्वीकार कर भी लिया जाय तो अन्य प्रदेशो (भटनेर, जोधनेर, चापानेर) जिनके पीछे ' नेर ' शब्द जुडा है वहा भी " नरा ' जाट का अस्तित्व स्वीकार करना पडेगा जो इतिहास विरुद्ध है। 'नेर ' द्वारा नगरो के नामकरण करने की परम्परा सभवत १५ वी शती से पूव प्रचलित थी। इसी पूव प्रचलित परम्परा के अनुसार बीका ' ने अपने नाम के पीछे नगर वाचक नर शब्द जोडकर इस प्रदेश का नाम बीकानेर ' रखा।

इसी बीकानेर प्रदेश म बोली जाने वाली बोली को डा० ग्रियसन[3] डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी[4] डा० भोलानाथ तिवाडी[5] प० नरोत्तमदास

१– वररुचि प्राकृत प्रकाश २ / २
२– वररुचि प्राकृत प्रकाश ५/३०
३– डाक्टर ग्रियसन एल० एस० आई भाग ६, पृष्ठ १३०
४– डॉक्टर सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा पृष्ठ ६ ७
५– डाक्टर भोलानाथ तिवाडी भाषा विज्ञान कोष पृष्ठ ५१५

स्वामी [1] प्रभृति विद्वानो ने बीकानेरी बोली नाम से अभिहित किया है क्योकि देश वाचक शब्दो के साथ "–ई प्रत्यय जोडकर भाषा या बोली वाचक शब्द बनाया जाता है यथा— महाराष्ट + –ई = महाराष्टी, पजाब + –ई = पजाबी बगाल + –ई = बगाली । इसी प्रकार बीकानेर + –ई = बीकानेरी बोली वाचक शब्द बना है।

१ ३ "बीकानेरी" शब्द के विभिन्न अर्थ और उसका बोली रूप मे प्रयोग

'बीकानरी' शब्द के विविध अर्थ हैं। यह शब्द कही सज्ञावत् एव कही विशेषणवत् प्रयुक्त होकर वस्तुओ एव प्राणियो का वाचक बनता है। परन्तु बीकानेरी शब्द से मेरा आशय उस बोली से है जो बीकानेर प्रदश मे बोली जाती है। बोली रूप म इस शब्द का प्रयाग कब हुआ निर्विवाद रूप स नही कहा जा सकता। श्री अगरचद नाहटा को जन सग्रहालयो मे तीन रचनाए उपलब्ध हुई हैं। तीसरी प्रति मे दिल्ली बीकानेर मारवाड तथा गुजरात की भाषाओ एव ढूढाडी, मेवाडी एव दक्षिणी के एक एक सवैये हैं।[2] इस प्रति का रचना काल उन्होने १७ वी शती बतलाया है। सवत् १८७३ (सन् १८१६) मे करी मार्श मैन और वाड नाम के पाश्चात्य विद्वानो ने भारतीय आय भाषाओ के सम्बन्ध म एक रिपोर्ट प्रकाशित की जिसमे भारतवष मे बोली जाने वाली ३३ भाषाओ एव बोलियो के नमूने दिये गये थे। उनम राजस्थानी की ■ बोलिया मारवाडी बीकानेरी उदयपुरी, जयपुरी, हाडोती और मालवी के नमूनो का समावेश किया गया था।[3] करी मार्श और वाड ने १९ वी शती के प्रथम चरण म बाइबिल के द्वितीय खण्ड (न्यू टेस्टामेन्ट) का मारवाडी उदयपुरी या मेवाडी बीकानेरी जपुरी, हाडोती तथा उज्जैनी या मालवी बोलियो मे अनु

१— प० नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी, पृष्ठ ५५

२— अगरचन्द नाहटा राजस्थान भारती भाग ३, अक ३ ४, पृष्ठ ११३, जुलाई १९५३

३— प० नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी पृष्ठ ५५

वाद किया। [1] सर जार्ज ग्रियर्सन ने बीकानेरी को उत्तरी मारवाड़ी की एक उपशाखा स्वीकार किया।[2]

उपर्युक्त उल्लेखों से स्पष्ट हो जाता है कि "बीकानेरी" शब्द का बोली रूप में प्रयोग अत्यन्त प्राचीन है परन्तु निर्विवाद रूप में यह नहीं कहा जा सकता कि सर्व प्रथम इस शब्द का बोली रूप में प्रयोग कब हुआ। भारतीय आर्य भाषाओं में प्रायः देशवाचक शब्द के साथ "ई" प्रत्यय जोड़ कर बोली या भाषा वाचक शब्द बनाया जाता है यथा मारवाड़+ई= मारवाड़ी राजस्थान+ई= राजस्थानी आदि। इसी प्रकार से बीकानेर प्रदेश वाचक शब्द के साथ 'ई' प्रत्यय जुड़कर ही "बीकानेरी" शब्द बना है और इस शब्द का बोली रूप में प्रयोग भी बीकानेर की स्थापना के पश्चात् ही हुआ है।

२.४ बीकानेरी-क्षेत्र

बीकानेरी बोली का क्षेत्र तत्कालीन बीकानेर राज्य का अधिकांश भाग है। तत्कालीन बीकानेर राज्य राजस्थान बनने के पश्चात् तीन जिलों में विभाजित हो गया— बीकानेर, गंगानगर एवं चूरू। इनमें से गंगानगर का अधिकांश भाग बीकानेरी भाषी नहीं है। वर्तमान बीकानेर जिले की चारों तहसीलें—बीकानेर, कोलायत, नोखा व लूणकरणसर बीकानेरी भाषी हैं। चूरू जिले की रतनगढ़, सरदारशहर, सुजानगढ़ व डूंगरगढ़ तो पूर्ण रूप से बीकानेरी भाषी तहसीलें हैं पर राजगढ़ का एक तिहाई पश्चिमी भाग और चूरू का भी लगभग आधा पश्चिमी भाग बीकानेरी-भाषी है। इसी जिले की तारानगर तहसील बीकानेरी क्षेत्र में आती है।

२.५ बीकानेरी की सीमाएं

बीकानेरी की उत्तरी सीमा बागड़ी, राठी और पंजाबी बोलियों द्वारा

१– श्री सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी पृष्ठ ५६

२– ग्रियर्सन एल० एस० आई० भाग ६ पृष्ठ १७

बनायी जाती है। इसकी उत्तरी-पूर्वी सीमा पर पजाबी एव बागडी बोलिया बोली जाती है। बांगडी एव शेखावाटी इसकी पूर्वी सीमा बनाती है। इसके दक्षिणी पूर्वी म शेखावाटी बोली जाती है। बीकानेरी की दक्षिणी सीमा पर थाली एव आदर्श मारवाडी बोली जाती है। थाली बोली ही इसकी दक्षिणी-पश्चिमी सीमा बनाती है। पश्चिमी सीमा पर लहदा भाषी व्यक्ति मिलते हैं और उत्तरी-पश्चिमी सीमा लहदा एव राठी बोलिया द्वारा बनाई जाती हैं। बीकानेरी की पश्चिमी सीमा ग्रियसन के अनुसार केवल राजस्थान तक ही सीमित नही है बल्कि पाकिस्तान का बहावलपुर जिले का दक्षिणी-पूर्वी भाग भी बीकानेरी-क्षेत्र के अन्तर्गत आता है।[1] परन्तु वस्तु स्थिति यह है कि अब बीकानेरी की सीमाए सिमिट कर केवल भारत की सीमाओ से लग गई है। लेखक के लिए उपयुक्त तथ्या को पुष्ट प्रमाणो के आधार पर प्रमाणित करने की असम्भावना से ग्रियसन द्वारा दिये गये मान चित्र को ही आधार बनाया गया है।

१ ६ बीकानेरी-भाषी जनसख्या

डॉक्टर ग्रियसन के अनुसार बीकानेरी भाषियो की जनसख्या ५, ९३, ००० है।[2] सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार बीकानेरी भाषिया की जनसख्या भारत मे ७७ एव राजस्थान मे केवल ३९ है। १९६१ की जनगणना मे बीकानेरी भाषियों की जो जनसख्या बताई गई है, वह सवथा भ्रामक है, क्योकि यदि बीकानेरी का स्वतत्र अस्तित्व स्वीकार किया जाता है और इसे आदर्श मारवाडी से भिन्न माना जाता है तो अधिकाश बीकानेर क्षेत्र की जनसख्या की बोली बीकानेरी है एव अकेले बीकानेर नगर में लगभग २ लाख व्यक्ति निवास करते हैं, जिनमें एक तिहाई व्यक्ति ठेठ बीकानेरी भाषी हैं। मैंने बीकानेर एव निकटवर्ती ग्रामो मे बीकानेरी के भाषा वैज्ञानिक स्वरूप को दृष्टि म रखकर लोगो से प्रश्न किये और उत्तर स्वरूप जो तथ्य

१– ग्रियर्सन एल० एस० आई, भाग ९ पृ०, १२८ २९
२– " " " " " पृ० १३०
३– सेसस आफ इण्डिया सन् १९६१

मेर सामने आये उसम निर्णय स्पष्ट कहा जा सकता है कि उसम बीकानेरी भाषियो की जनसंख्या १९६१ की जनगणना मे अंकित मारवाड के आंकडो से सकडो गुना अधिक है । भाषा विषयक गलत आंकडे जनगणना के अवसर पर इसलिए एकत्र हो जाते हैं कि भाषा एव बोलियो का महत्वपूर्ण काय ऐसे व्यक्तियो के द्वारा सपन्न होता है जो भाषा एव बोलियो के स्वरूप का विश्लेषण नही कर सकते । इसका दूसरा कारण यह है कि जनगणना के अवसर पर बीकानेरी बोलन वालो ने अपनी बोली मारवाडी ही बताई है अत वतमान बीकानेरी भाषियो की जनसंख्या क्षेत्र व सीमा के आधार पर ७, १५, ००० मानी जा सकती है ।[1]

१ ७ राजस्थानी की विभिन्न बोलिया एव मारवाडी

राजस्थानी की विभिन्न बोलियो मे बीकानेरी का स्थान कहा है ? इस निष्कष पर पहुँचने के लिए यदि हम अधिकारी विद्वानो द्वारा किया गया राजस्थानी बोलियो का वर्गीकरण प्रस्तुत करें तो अप्रासंगिक न होगा । डॉ० ग्रियसन ने एल० एस० आई० भाग ९ म राजस्थानी का वर्गीकरण इस प्रकार किया है–

१– पश्चिमी राजस्थानी– इसमे ये बोलिया आती हैं– जोधपुर की स्टैंडड या 'खडी राजस्थानी' अर्थात् शुद्ध पश्चिमी मारवाडी ठटकी, तथा थली, और बीकानेरी, बागडी शेखावटी मेवाडी, खराडी सिरोही की बोलियाँ (' आबू रोड की बोली या राठी, तथा साएठ की बोली इनम हैं), गोडवाडी और देवडावाटी ।

२– उत्तर पूर्वी राजस्थानी अहीरवाटी और मेवाती ।

३– मध्य पूर्वी राजस्थानी (ढूढाडी) – तोरावाटी, " खडी जयपुरी " काठडा राजावाटी अजमेरी किशनगढी, चौरासी (शाहपुरा), नागर चाल हाडौती (रिवाडी के साथ) ।

१– स सस आफ इण्डिया सन १९६१, क्षेत्र व सीमा म दिए गये ग्रामो व तहसीलो म बीकानेरी भाषियो की जन सख्या, के आधार पर ।

४– दक्षिण पूर्वी राजस्थानी या मालवी इसके कई रूप भेद है जिनमे रागडी और सोंडवाडी हैं।

५– दक्षिणी राजस्थानी इनमें निमाडी आती है।

परतु श्री सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या उक्त वर्गीकरण को मान्यता नही देते।[1] उनके अनुसार ग्रियसन की १ तथा ३ वग की बोलियों को ही राजस्थानी नाम देना उचित है। एक को पश्चिमी राजस्थानी एव तीन को पूर्वी राजस्थानी कहना वे उचित मानते हैं। वे अहीरवाटी मेवाडी निमाडी को पछाही हिन्दी से सम्बन्धित मानते हैं और अपनी इस मान्यता की संदिग्धावस्था के साथ चरम निष्कर्ष की अपेक्षा रखते हैं। परतु चाटुर्ज्या के इस निष्कर्ष से बीकानेरी की स्थिति मे कोई परिवतन नही आता और ग्रियसन के अनुसार उसे पश्चिमी राजस्थानी के अन्तगत रखा जा सकता है। पश्चिमी राजस्थानी की प्रधान बोली मारवाडी है।

१ ७ १ मारवाडी की विभिन्न शाखाए एव बीकानेरी तथा उनमे अन्तर

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि मारवाडी पश्चिमी राजस्थानी की प्रमुख बोली है। प्रमुख रूप से मारवाड की भाषा होने के कारण इसका नाम मारवाडी है। यह नाम नया नही है। अबुल फजल के 'आइने अकबरी' तथा कुछ अन्य प्राचीन पुस्तको मे भी यह आया है।[2] मारवाडी का क्षेत्र मारवाड, मेवाड पूर्वी सिंध, जैसलमेर, बीकानेर दक्षिणी पजाब तथा जयपुर का पश्चिमी-उत्तरी भाग है। मारवाडी अपने भौगोलिक विस्तार की दृष्टि से राजस्थानी की अन्य सभी बोलिया के योग से बडी है।[3] बीकानेरी इसी मारवाडी की एक प्रमुख बोली है। डॉ० भोलानाथ तिवारी ने मारवाडी का वर्गीकरण इस प्रकार किया है।

परिनिष्ठित मारवाडी-यह मारवाड मे बोली जाती है। इसके अतिरिक्त

१– श्री सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा, पृष्ठ ६ १०

२– डा० भोलानाथ तिवाडी भाषा विज्ञान कोष, पृष्ठ ५१५

३– वही पृष्ठ ५१५

पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी तथा उत्तरी ये चार रूप हैं जिनके अन्तर्गत प्रसिद्ध उप बोलियां इस प्रकार है—

पूर्वी मारवाडी—मगरा की बोली, मेरवाडी-मारवाडी, गिरासिया की बोली मारवाडी ढूढाडी, गोडावाटी मेवाडी। मेरवाडी-मारवाडी।

दक्षिणी मारवाडी—गोडवाडी सिरोही, देवड़ावाटी, मारवाडी गुजराती

पश्चिमी मारवाडी थली ठटकी

उत्तरी मारवाडी-बीकानेरी, नेपावाटी बागडी।

डॉ० भोलानाथ तिवाडी के उक्त वर्गीकरण से स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी उत्तरी मारवाड़ी की एक प्रमुख उप शाखा है।

१ ७ २ मारवाडी एव बीकानेरी मे अन्तर—

वतमान बीकानेरी एव आदश मारवाडी म निम्नलिखित अन्तर मिलता है—

१— मारवाडी म अस्तित्वाचक क्रिया के सामान्य वतमान कालिक रूप एव भूतकालिक रूप छो हो हैं पर बीकानेरी म छो का सवथा अभाव है।

२— मारवाडी मे सयोजक समुच्चय बोधक अव्यय 'और' के लिए न का प्रयोग होता है पर बीकानेरी मे इसका पूर्ण रूपेण अभाव है।

३— मारवाडी की अधिकांश अल्प प्राण ध्वनियां बीकानरी म महाप्राण हो गई है—

मारवाडी	बीकानेरी
कन	खन
कावडी	खाखडी
ऊट	ऊठ
माटो	माठो

४— बीकानरी म व्यजनान्त ध्वनियो का बाहुल्य हो गया है, पर मारवाडी

के आदर्श रूप मे इसकी अत्यल्पता है।

५– बीकानेरी म " ण " ध्वनि का प्रयोग आदर्श मारवाडी की अपेक्षा बहुत कम हो गया है।

मारवाडी	बीकानेरी
इणनै	इनें
उणनै	बेनें
इण	इयें
जिण	जिकें

६– निश्चयाथ भाव को प्रकट करने के लिये बीकानेरी मे भविष्याथ क्रिया के साथ /ईज/ का प्रयोग होता है जबकि आदर्श मारवाडी मे केवल क्रिया के साथ / सी / प्रयुक्त होता है–

मारवाडी	बीकानेरी
खासी	खाईसीज
जासी	जाईसीज
लासी	लाईसीज

१ ८ आदर्श बीकानेरी

डा० भोलानाथ तिवाडी के अनुसार बीकानेरी एक उपबोली है। इस बोली के यहाँ अनेक रूप देखने को मिलते है। बीकानेर नगर मे मुख्य रूप से चार वर्ण निवास करते हैं– ब्राह्मण, क्षत्रिय, वश्य एव शूद्र (विभिन्न निम्न कोटि की जातियाँ)। इन चारा वर्णो की बोली म भेद पाया जाता है। यह भेद अत्यन्त सूक्ष्म है और विभिन्न वर्गों की तत्स्थानीय भाषाओ की विशेषताओ पर आधत है जहा से वे आकर यहाँ बसे हैं। चार पाच सौ वष साथ रहने से यह अन्तर अत्यन्त सूक्ष्म रह गया है। प्रश्न है, कहा की बीकानेरी आदश मानी जाय ? इस सन्दभ में लेखक ने पद्धति यह अपनाई है कि जो क्षेत्र मध्यवर्ती हैं एवं अन्य भाषा क्षेत्रो तथा भाषा भाषियो के प्रभाव से अलग हैं उन्ही क्षेत्रो की बोली को आदर्श बीकानेरी माना गया है। इस

दृष्टि से वर्तमान बीकानेर जिले का अधिकांश भाग आदर्श अथवा परिनिष्ठित बीकानेरी का क्षेत्र माना जा सकता है। इस क्षेत्र में भी बीकानेरी का आदर्श स्वरूप ग्रामों में ही मिलता है क्योंकि इस क्षेत्र के निवासी अन्य भाषा भाषियों से कम प्रभावित है।

१ ६ बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताए

बीकानेरी की प्रमुख ध्वन्यात्मक एव रूपात्मक विशेषताए निम्नलिखित है–

१ ६ १ ध्वन्यात्मक विशेषताए

बीकानेरी की ध्वन्यात्मक विशेषताए निम्नलिखित हैं।

१– अन्त्य ध्वनि की दृष्टि से बीकानेरी ओंकार बहुला है–

बीकानेरी	हिन्दी
घोड़ों	घोड़ा
मीठों	मीठा
दादों	दादा
गयों	गया
छोटों	छोटा

२– बीकानेरी में नासिक्य ध्वनियों से पूर्व आने वाली 'आ' ध्वनि 'आँ' में परिवर्तित हो जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
राँम्	राम
कोँम्	काम
काँन	कान
होँण	हानि
आँम्बो	आम

३– बीकानेरी म शब्दा के आदि स्वर, विशेषकर अ के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
पाडोसी	पडोसी
खाखडी	ककडी
बान्दरो	बन्दर
आँधो	अन्धा

४– बीकानेरी म हिन्दी के सयुक्त स्वर "ऐ" एव "औ" क्रमश "अ" एव "ओ" म परिवर्तित हो जाते हैं—

बीकानेरी	हिन्दी
अस्सो	ऐसा
कस्सो	कैसा
बस्सो	वैसा
जस्सो	जैसा
दोँड	दौड
फोँरन्	फौरन
ओँरत्	औरत

५– बीकानेरी मे आरम्भ का "य" प्राय "ज" म परिवर्तित हो जाता है—

बीकानेरी	हिन्दी
जुग्	युग
जम	यम
जोग	योग

६– बीकानेरी मे अन्त्य "य" का सयुक्त व्यजन होने पर लोप हो जाता है—

बीकानेरी	हिन्दी
पुन्	पुण्य
भाग्	भाग्य

यदि अन्त्य " य " संयुक्त व्यंजन न हो तो उसका लोप नहीं होत

यथा—

बीकानेरी	हिन्दी
लाय	आग
दाय	पसन्द
गाय	गाय

७– मध्यवर्ती " ह् " ध्वनि बीकानेरी में " व " एवं कभी-कभी " य " में परिवर्तित हो जाती है—

बीकानेरी	हिन्दी
सोवन	सोहन
मनवार	मनुहार
लोवार	लुहार
पोंवणा	पाहुना
ग्रायक	ग्राहक

यदि ' ह ' ध्वनि ' व ' या ' य " में परिवर्तित नहीं होती तो लुप्त होकर पूर्ववर्ती ध्वनियों को दीर्घ कर देती है—

बीकानेरी	हिन्दी
शँर्	शहर
नँर	नहर
जँर्	जहर
काँणी	कहानी
पाड़	पहाड़

अधिकांश अन्त्य ' ह ' ध्वनि भी लुप्त हो जाती है—

बीकानेरी	हिन्दी
मा	माह
मो	मोह
मो	

८— बीकानेरी मे 'क्ष' ध्वनि का प्रयोग नही होता । 'क्ष' के स्थान पर 'छ' अथवा 'ख' का प्रयोग होता है—

बीकानेरी	हिन्दी
लछमी	लक्ष्मी क्ष>छ
राखस्	राक्षस क्ष>ख
रख्या	रक्षा क्ष>ख

९— स 'श', 'ष', ऊष्म व्यजनों मे केवल दन्त्य 'स' ध्वनि ही उपलब्ध होती है।

बीकानेरी	हिन्दी
सल्ला	शिला
सुसरो	श्वशुर
भासा	भाषा

१०— बीकानेरी की अपनी कतिपय विशेष ध्वनिया है, जो ध्वनि ग्राम रूप म प्रतिष्ठित हैं —

१— न्ह	न्हावणो (नहाना)
२— म्ह्	म्हे (हम) म्हारमा
३— ल्	बाल (जलाना)
	गाल (गाली)

११— बीकानेरी म 'ल' का उच्चारण दो प्रकार से होता है । 'ल' हिन्दी के समान ही है पर ळ उच्चारण के आधार पर दोनो मे कही उत्क्षिप्त कहीं मूर्द्धन्य एव कहीं पार्श्विक ध्वनियो की तरह व्यवहृत होता है —

ल		ळ	
काल	(कल)	काळ	(अकाल)
गाल	(कपोल)	गाळ	(गाली)
व्हालो	(प्यारा)	बाळो	(जलाना)
बोली		बोळी	(बहरी)
बोलो	(कहो)	बोळो	(बहरा)

बीकानेरी	हिन्दी
म्हैं रोटी खाई।	मैंने रोटी खाई।
छोरों दूध पियां।	लड़का ने दूध पिया।
म्हैं ॰क्ताब पढ़ाई।	मैंने पुस्तक पढाई।

कर्म कारक की अभिव्यक्ति के लिए "नैं" परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
रॉम् नैं पढाय दे।	राम को पढा दो।
कुत्ते नैं काढ।	कुत्ते को निकालो।

सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति के लिए "रै", "नैं" परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
घोडैं रै घास् लायो हूं।	घोडा के लिए घास लाया हूँ।
छोरां नैं आसीस।	लडकों के लिए आशीर्वाद।

करण एवं अपादान कारक में "सूं" परसर्ग का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
पंडत् जी सूं बात्यों होई।	पंडित जी से बातें हुई।
डागलै सूं पड्यों।	छत पर से गिर गया।

सम्बन्ध कारक की अभिव्यक्ति के लिए रो, रा, री परसर्गों का प्रयोग होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
रॉम रो घोडो।	राम का घोडा।
रॉम् री घोडी।	राम की घोडी।
रॉम् रा घोडा।	राम के घोडे।

अधिकरण कारक की अभिव्यक्ति के लिए "में" परसर्ग का व्यवहार

होता है —

बीकानेरी	हिन्दी
घर में कोय नी ।	घर में नहीं है ।
शै'र में जाव ।	शहर में जाओ ।

३— बीकानेरी में निकटवर्ती एवं दूरवर्ती दोनों प्रकार के निश्चय वाचक सर्वनामों के एक वचनीय रूप लिंग से प्रभावित होते हैं —

दूरवर्ती पुलिंग	निकटवर्ती पुलिंग
बो	ओ
दूरवर्ती स्त्री लिंग	**निकटवर्ती स्त्रीलिंग**
बा	आ

४— बीकानेरी में उत्तम एवं मध्यम पुरुष सर्वनाम के एकवचन एवं बहुवचन के रूप निम्नलिखित हैं —

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हूं म्हैं	म्हे म्हां
मध्यम पुरुष	तू, थूं	थे थां

इसके अतिरिक्त बीकानेरी में एक विशेष सर्वनाम 'आपां' भी उपलब्ध होता है । यह श्रोतृ सापेक्ष सर्वनाम शब्द है जिसमें श्रोता और वक्ता दोनों समाहित हो जाते हैं । यथा —

बीकानेरी	हिन्दी
'आपां दस बजी जीमांला'	हम दस बजे खाना खायेंगे

इसका अर्थ होगा हम अपने मित्र के साथ (श्रोता सहित) दस बजे खाना खायेंगे ।

५— बीकानेरी में पूर्णांक गणना सूचक ओकारान्त विशेषणों (दो सौ आदि) के अतिरिक्त समस्त ओकारान्त विशेषणों में अपने विशेष्य के-लिंग-वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तन होता है । अन्य विशेषणों (आकारान्त, ईकारान्त

ऊकारात एव व्यजनात) म अपने विशेष्य के लिग-वचन एव कारक के अनुरुप परिवतन नही होता ।

६– बीकानेरी मे वतमान काल म तिङ तीय क्रिया पद प्रयुक्त होत हैं यथा–

बीकानेरी	हिन्दी
छोरॉ करॅ है ।	लडका करता है ।
छोरी आवें है ।	लडकी आती है ।
छोरा खावें है ।	लडके खाते हैं ।

७– बीकानेरी म वतमान निश्चयाथ, वतमान कृदन्त की सहायता से बनाये जान के स्थान पर सामान्य वतमान के साथ सहायक क्रिया द्वारा बनाया जाता है –

बीकानरी	हिन्दी
हू मारू हू ।	मैं मारता हूँ ।
हू जाऊ हू ।	मैं जाता हूँ ।

८– वतमान कालिक सहायक क्रिया √ह घातु बीकानेरी मे अन्य स्वतन्त्र क्रिया रूपो के समान ही तिङ प्रत्यय ग्रहण करती है, यथा–

	एकवचन	बहुवचन
(अन्य पुरुष)	है	है
(मध्यम पुरुष)	है	हा॑
(उत्तम पुरुष)	हू	हॉ

९– बीकानेरी मे भूतकालिक सहायक क्रिया रूप घातु म कृत प्रत्यय के योग से बनते हैं। साथ ही हिन्दी की भाति सहायक क्रिया धातु ही मानी जा सकती है। किन्तु ओकारात बोली होने के कारण बीकानेरी मे जहा आकारातता बहुवचन का बोघ कराती है वहा हिन्दी म एक वचन का, यथा–

छोरॉ हा॑	(लडका था)
छोरा हा	(लड़का था)

छोरी ही	(लड़की थी)
छोरो´ थो	(लड़का था)
छोरा था	(लड़के थे)
छोरी थी	(लड़की थी)

१०– हिन्दी की √ कृ धातु के भूत कालिक कृदन्त रूप किया, किये, की, के स्थान पर पर बीकानेरी म क्रमश कियो, करिया, करिया, करी रूप उपलब्ध होते हैं।

११– बीकानेरी म भूत काल के निर्माण के लिए प्राय धातु म -यो´ प्रत्यय (स्वरान्त धातु एक वचन म य + आँ) एव बहुवचन म –या (स्वरान्त धातु बहुवचन म य+आ) प्रत्यय जोडे जाते हैं। इयाँ प्रत्यय व्यजनान्त एकवचन म एव –इया प्रत्यय व्यजनान्त बहुवचन म जोडा जाता है। यथा–

स्वरान्त धातु

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	बे´ आयो´	बाँ आया
मध्यम पुरुष	तू आयो´	थे आया
उत्तम पुरुष	म्हूँ आयो	म्हाँ आया

व्यजनान्त धातु

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	बे´ मारियो´	बाँ मारिया
मध्यम पुरुष	थू पढियो´	थे पढिया
उत्तम पुरुष	म्हें काढियो´	म्हाँ काढिया

१२– बीकानेरी में भूतकालिक कृदन्त की रचना के लिए '–ड' स्वार्थक प्रत्यय का बहुलता से प्रयोग होता है, यथा—

एकवचन	बहुवचन
खायोड़ो´ केलो´	खायोड़ा केला
तलियोड़ा´ पापड़	तलियोड़ा पापड़

[सूचना –

स्वार्थक प्रत्यय –ओड भी माना गया है क्योंकि –ओ, पर लिंग-वचन–कारक का प्रभाव नहीं पड़ता ।]

१३– बीकानेरी में भविष्यत् काल का निर्माण दो प्रकार से होता है –

(अ) सामान्य वर्तमान में 'लों' या 'ला' के योग से –

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	मारें लाँ, ला	मारें ला
मध्यम पुरुष	मारें लाँ	मारों ला
उत्तम पुरुष	मारु ला, ला	मरों ला

(आ)	एक वचन	बहु वचन
अन्य पुरुष	मारसी	मारसी
मध्यम पुरुष	मारीस्	मारसों
उत्तम पुरुष	मारीस्	मारसों

निश्चयार्थ भाव का बोध कराने के लिए बीकानेरी में ईज प्रत्यय का प्रयोग क्रिया रूप के भविष्यत् काल में होता है –

वों आसीज्, खाईसीज् आदि

–१४ बीकानेरी में पूर्व कालिक क्रिया के निर्माण के लिए –'र' क्रिया के अंत में लगाया जाता है। स्वरान्त धातु से पूर्व –य् श्रुति का आगम होता है–

स्वरान्त	व्यंजनान्त
खायर्=खाकर	पढर्=पढकर
आयर्=आकर	जीमर्=भोजन करके
जायर=जाकर	रमर् =खेलकर

अध्याय / २

संज्ञा-पद

संज्ञा उस विकारी शब्द को कहते हैं जिससे प्रकृत किंवा कल्पित सृष्टि की किसी वस्तु का नाम सूचित हो[1] यथा राम, मकान, गोपाल भगवान आदि। उक्त परिभाषा में 'वस्तु' शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थ में प्रयुक्त हुआ है यह केवल प्राणी व पदार्थ का ही बोधक नहीं, अपितु उनके धर्मों का भी बोध कराता है।

बीकानेरी' में संज्ञा-पद प्रातिपदिक अंश (अभिप्राय बोधक) तथा लिंग-वचन कारक सम्बन्धी विभक्ति प्रत्यय (व्याकरणिक अर्थ बोधक) के योग से निर्मित होता है। सर्व प्रथम ऐसे संज्ञा प्रातिपदिक अंशों के निर्धारण की आवश्यकता है जो व्याकरणिक अर्थ के व्यंजक विभक्ति प्रत्ययों (लिंग वचन-कारक सम्बन्धी) को ग्रहण करके पद की कोटि में पहुंचते हैं। इस प्रकार संज्ञा-पद रचना में दो तत्त्वों प्रातिपदिक अंश (अभिप्राय) तथा विभक्ति प्रत्यय (व्याकरणिक अर्थ) के सम्बन्ध में विचार किया जाता है। अतः संज्ञा पद रचना सम्बन्धी अपने अध्ययन की दिशा को हम निम्न चार वर्गों के अन्तर्गत विभाजित कर सकते हैं —

१— प्रातिपदिक अंश

१— कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ० ६३

२– लिंग
३– वचन
४– कारक

बीकानेरी संज्ञा-पदों को स्वतन्त्र रूपांग संयोग की दृष्टि से दो वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

(अ) एक स्वतन्त्र रूपांग युक्त नामवाची-पद (संज्ञा पद)

(आ) दो या दो से अधिक स्वतन्त्र रूपांग युक्त नामवाची-पद (समस्त संज्ञा-पद)

२ १ एक स्वतन्त्र रूपाँग युक्त नामवाची-पद (संज्ञा-पद)

जैसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि संज्ञा पद की रचना प्रातिपदिक अंश में लिंग वचन-कारक सम्बन्ध दर्शी विभक्ति प्रत्ययों (व्याकरणिक अर्थ बोधक) को जोड़ कर की जाती है। इसीलिए जब संज्ञा पदों पर विचार किया जाता है तो सर्व प्रथम प्रातिपदिक अंशों का निर्धारण किया जाता है, जो व्याकरणिक अर्थ के व्यक्ता विभक्ति प्रत्ययों (लिंग वचन-कारक सम्बन्धदर्शी) को ग्रहण कर 'पद' की कोटि में पहुँचते हैं एवं तदनन्तर लिंग वचन कारक पर विचार किया जाता है। अतः क्रमशः प्रातिपदिक लिंग, वचन कारक, का विवेचन नीचे किया गया है।

२ १ १ प्रातिपदिक

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्[1]

अर्थात् धातु भिन्न (अधातु) और प्रत्यय भिन्न (अप्रत्यय) अर्थवान प्रातिपदिक संज्ञक होता है। दूसरे शब्दों में प्रातिपदिक संज्ञा के लिए निम्न लिखित बातें आवश्यक हैं –

१– सार्थक शब्द ही प्रातिपदिक हो सकता है, निरर्थक शब्दों की प्रातिपदिक संज्ञा नहीं होती।

१— पाणिनि सिद्धान्त कौमुदी /१/२/४५/

लिं व का रहित नाँन् नोँन्
सना पद माँमाँ मोँमा
लिं व का रहित माँम् मोँम्

(ख) स्त्री लिंग

सना पद	नोँनी	नोँयाँ
लिं व का रहित	नान्	नाँन्
सना पद	मोँमी	मोम्या
लिं व का रहित	मोँम्	माँम्

उपयु क्त सना पदा (नाँनाँ, माँमाँ नाँनी, माँमी) मे स यदि पु एव व वा आँ, पु व व वायक आ स्त्री लिं ए व बोधक -ई एव स्त्रीलिंग बहुवचन (ब व) बोधक आँ, लिं व का विभक्ति प्रत्यया को निकाल दिया जाय तो नाँन्, माँम् प्रातिपदिक अ श के रूप मे अवशिष्ट रहते है जिनका वाली म काई अथ नहा है।

(३) प्राचीन भारतीय आय भाषा काल म कारक बोधक विभक्तियो का प्रयोग संश्लिष्ट कोटि का था परन्तु आधुनिक भारतीय आय भाषाओ व बोलियो की भाति बीकानेरी म भी परसर्गों का प्रयोग विश्लिष्ट कोटि का है अत परम्परा-गत प्रातिपदिक अ शा का निर्धारण नही किया जा सकता।

४– इस आधार पर प्राप्त प्रातिपदिक अ शो के कारण बोली म श्लेपार्थी अ शो का बाहुल्य हो जायगा जिससे अथ बोध मे अस्पष्टता आ जायगी, यथा—

बीकानेरी	हिन्दी पर्याय
१– घोड +ओँ (घोडाँ)	घोडा
घोड	त वगो क या के लिय प्रयुक्त शब्द
२– तार + आँ (ताराँ)	तारा

पात	[illegible]
३- [illegible] (ग [illegible])	[illegible]
मात	[illegible]

इसी प्रकार प्रातिपदिक [illegible] के विभिन्न [illegible] का भाव [illegible] [illegible] [illegible] प्रातिपदिक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्रातिपदिक [illegible] ([illegible]) प्रातिपदिक [illegible] [illegible] [illegible] प्रातिपदिक [illegible] [illegible] ।

संज्ञाओं के [illegible] के मूल रूप [illegible] प्रातिपदिक [illegible] [illegible] बोलियों में अन्त्य ध्वनि की दृष्टि से प्रातिपदिक [illegible] इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है —

२ १ १ १ स्वरान्त प्रातिपदिक

आकारान्त — राजा आत्मा, माँ बाबा
ईकारान्त — दरजी मानी छाती [illegible]
ऊकारान्त — भालू लाडू [illegible] पशू
एकारान्त — दूबे [illegible] चोर
ओँकारान्त — [illegible] घोड़ों [illegible] सुआँ (तोता)

२ १ १ २ व्यंजनान्त प्रातिपदिक

क — नाक आक डाक (डाक का नाम) पाक
ख — दाख तीख पोख राख
ग — भाग (भाग्य) आग साग मूग
घ — बाघ

[सूचना— बोली में अधिकतर अन्त्य घ महाप्राण ध्वनि का उच्चारण अल्पप्राण ध्वनि ग् के समान होता है ।]

च — चंच ़मरच नाच्, काच्
छ — रीछ मूछ् पूछ, गछ
ज — दाज् राज् सूरज् तीज

[सूचना — 'भ' के स्थान पर बीकानेरी प्रातिपदिका में सामान्य रूप से अल्पप्राण ध्वनि 'ज' हो जाती है।]

ट — टाट धाट अखराट पेट्
ठ — मूठ (मुट्ठी अन्दर) सेठ जेठ काठ्
ड — राड मा', साँड हाड
ढ — पड (एक प्रकार का सप) लड राड् (लडाई)
ढ — ग' ढे',
ण — ़मरण बाँमरण बूण् लूण्
त — सँत, (शहद) चेत् परात् (स्नान करने का पात्र), खेत्
थ — नाथ (आभूषण) हाथ रथ तीरथ्
द — लीद् दाद् लाद् पँलाद्
ध — दूध, सगत साध् (उत्सव)
न — पाँन् खून् काँ!, धन्
प — सप्प ऊाप् पाप तप लप्
फ — सूफ डफ वाफ बरफ
ब — शाब (दूर्वा) जीव (जिह्वा)
भ — लाभ डाभ् लाभ
म — ़ब्राँम् नाँम् करम् ़जनम्
य — छाय, (छाछ) लाय (आग) गाय राय्
र — हार् (मानिया की माला) केँर (एक मञ्जी का नाम) तार, घर्
ल — बल् (मित्र) खाल् (चमडा) गाल् (कपाल)
ल — जाल् साँकल साल
व — तनाव गाव् आँव्
स — बाँस्, (बाँस) भैंस् नेस (बान) रस

२ १ २ लिंग

लिंग विधान की दृष्टि से बीकानेरी म दो ही लिंग उपलब्ध होते हैं।

१– पुलिंग
२– स्त्रीलिंग

परिणामत बीकानेरी सज्ञाओ को (चाहे वे जड का बोध कराने वाली हो अथवा चेतन का) उक्त दो वर्गों मे विभक्त किया जा सकता है। नपुसकलिंग का चूकि सवथा अभाव है अत जड वस्तुओ को मृदुनता एव परुषता के आधार पर पुलिंग एव स्त्रीलिंग म विभक्त कर दिया जाता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि लिंग विधान की दृष्टि से आधुनिक भारतीय आय भाषाओ म हिन्दी आदि के समान *बीकानेरी का स्थान भी मध्यवर्ती हो है क्योकि मराठी गुजराती आदि* आधुनिक भारतीय आय भाषाओ के समान न तो इसम तीन लिंग पाये जात हैं और न ही बगला उडिया जसी भाषाओ के समान लिंग भेद का सवथा अभाव ही पाया जाता है।

२ १ २ १ लिंग-ज्ञान

(क) बीकानेरी म अनेक दीर्घाकारी वस्तुए पुलिंग म तथा ह्रस्वाकारी स्त्रीलिंग म प्रयुक्त होती है –

	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग
१	माटो	मटकी
२	आलो	आली
३	मन्दरमो	पोमचाव
४	ग्रन्थ	पोथी

परन्तु अनेक वस्तुओ म स्थिति इसके विपरीत भी उपलब्ध होती है। यथा– धूडो (पु०) धूडी (स्त्री०)

(ख) बीकानेरी म पर्यायवाची शब्दो के लिंग समान नहीं होते हैं। यथा–

१ 'पाठशाला' के पयायवाची

मदरसाॅ	(पुल्लिग)
पोसवाल्	(स्त्रीलिंग)

१– पुस्तक के पर्यायवाची

गरन्थ	(पुलिंग)
पोथी	(स्त्रीलिंग)

(ग) सस्कृत के अनक शब्दो का बीकानरी मे लिंग परिवर्तित हो गया है। यथा—

सस्कृत	बीकानेरी
१ आत्मा (पु०)	आतमा (स्त्री०)
२ अग्नि (पु०)	अगनी, आगी, आग् (स्त्री)
३ दवता (स्त्री०)	दवता (पु०)

(घ) प्राणी वाचक सज्ञा शब्दो का लिंग उनके प्राकृतिक लिंग के अनुमार होता है।

१ मोर् ऊठ (पु०)
ढेनणी माँढ (स्त्री०)

कुछ एस भी शब्द हैं जो या तो केवल पुल्लिग म ही प्रयुक्त होत हैं या स्त्री लिंग म यथा—

केवल पुल्लिग मे प्रयुक्त होने वाले शब्द

	बीकानरी	हिन्दी पर्याय
१	माछर्	मच्छर
२	पपयोॅ	पपीहा
३	तीतर्	तीतर
४	ममालियाॅ	बीर बहूटी

केवल स्त्रीलिंग मे प्रयुक्त होने वाले शब्द

	बीकानेरी	हिन्दी
१	जू	यूर
२	चीलम्	चील
३	चमचेड्	चमगाज्ड
४	बतक्	बतख
५	टालोडी	गिलहरी

कुछ शब्द उभय लिंगी भी हैं यथा– टाबर्, मोतस्यां माइत् आदि।

कुछ सज्ञा शब्द ऐसे हैं जिनका लिंग बोध उनका युग्म रूप ज्ञात होने पर होता है। यथा– मोर् ढेलनी ऊंट सांडे हुलाऊ-मंरी आदि।

(ड) विदेशी शब्दों म भी लिंग परिवतन मिलता है। ये शब्द हिन्दी के माध्यम से बीकानेरी म आये है अत हिन्दी के समान ही बीकानेरी म उनका वही लिंग होता है यथा– अमानत कागद् कलम् आदि।

२ १ ७ २ रूपगत लिंग ज्ञान

सज्ञा शब्दों के वाक्य गत रूपों के आधार पर उनके लिंगों का निवचन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(क) बीकानेरी के विशेषण शब्दों म लिंग के कारण रूपगत परिवतन होता है तथा इन विशेषणों का रूप निश्चित प्राय ही है (बीकानेरी विशेषण पुलिंग एक वचन म आकारान्त एव स्त्रीलिंग एक वचन म ईकारान्त उपलब्ध होते है) परिणामत इन विशेषणों से सम्बन्धित सज्ञाओं के लिंग का ज्ञान होता है यथा–

छोटो बिन्द्
छोटी जस्

उपयुक्त वाक्यांशों म छोटो और छोटी क्रमश पुलिंग एव स्त्री लिंग हैं जो इन विशेष्यों बन्द एव जस् के पुलिंग एव स्त्री लिंग की ओर इंगित करते हैं।

(ख) संज्ञा से मेल कराने वाले कृदन्त भी लिंग बोधक होते हैं, यथा—

मरियोडा' छोरा'
रोवती छोरी

उक्त 'मरियोडा' (पुल्लिंग) एवं रोवती (स्त्रीलिंग) से मेल रखने वाली संज्ञाएं छोरा एवं 'छोरी' क्रमशः पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग हैं।

(ग) क्रिया पदों से भी संज्ञाओं के लिंग का बोध होता है यथा—

मन्नू सूतो' है
चन्द्रा सूती है

उपर्युक्त उदाहरणों में मन्नू और चन्द्रा क्रमशः पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग हैं क्योंकि उनकी क्रियाएं सूतो तथा सूती क्रमशः पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग हैं।

(घ) बीकानेरी में संबंध कारक के परसर्गों के द्वारा भी परवर्ती संज्ञाओं का लिंग बोध होता है यथा —

राम रो' मूडो'
राधा री कुरडी

उक्त उदाहरणों में 'रो' और 'री' क्रमशः पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग के बोधक हैं, जिससे सम्बद्ध संज्ञाओं 'मूडो' और 'कुरडी' का क्रमशः पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग होना इंगित होता है।

(ङ) बीकानेरी में कुछ सर्वनामों के एकवचन रूपों से तत्सम्बन्धित संज्ञा के लिंग का बोध होता है यथा—

बो' (छोरो) पेर आयो' क्या ?
बा (छोरी) पेर आई क्या ?

उपर्युक्त उदाहरणों में बो' और बा' क्रमशः पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग हैं जिनसे सम्बंधित संज्ञाओं का पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग होना निर्दिष्ट होता है।

२ १ २ ३ अन्त्य ध्वनि के आधार पर लिंग परिचय

(अ) बीकानेरी में समस्त ओंकारांत संज्ञाएं पुल्लिंग है यथा–

बीकानेरी	हिन्दी
१– दादों	दादा
२– बांदरों	बंदर
३– घोड़ों	घोड़ा
४– छोरों	लड़का
५– तावड़ों	धूप
६– आटों	आटा

(आ) –ई में अन्त होने वाली संज्ञाएं अधिकांशतः स्त्रीलिंग होती है यथा

बीकानेरी	हिन्दी
१– काकी	चाची
२– लुगाई	स्त्री
३– लाकड़ी	लकड़ी
४– छोरी	लड़की
५– रोटी	रोटी
६– दवाई	दवा

परन्तु इसके कुछ अपवाद भी उपलब्ध होते हैं यथा– नाई धोबी माली लोई (रक्त) मोती दई, (दही) दरजी आदि ।

(इ) –आ में अन्त होने वाली अधिकांश संज्ञाएं स्त्रीलिंग है यथा

बीकानेरी	हिन्दी
१– छया	छाया
२– भुवा	बूआ
३– मा	माता
४– दया	दया

५– माया माया
६– काया शरीर

अपवाद स्वरूप राजा महात्मा, देवता परमात्मा, आदि रूप भी उपलब्ध होते हैं।

(ई) –ऊ में अन्त होने वाली संज्ञाएं दोनों ही लिंगों में समान रूप में उपलब्ध होती हैं यथा–

–ऊ मे अन्त होने वाली पुल्लिग सज्ञाए

बीकानेरी	हिन्दी
१ लाडू	मोदक
२ गऊ	गेहूँ
३ आसू	अश्रु
४ आलू	आलू
५ चक्कू	चाकू
६ साडू	साली का पति

–ऊ मे अन्त होने वाली स्त्रीलिग सज्ञाए

बीकानेरी	हिंदी
१ लू	गर्म हवा
२ जू	यूक
३ बऊ	बहू
४ दारू	मदिरा
५ गऊ	गाय

(उ) बीकानेरी में समस्त एकारान्त संज्ञाएं पुल्लिंग हैं यथा– टूटे, पांडे, चौबे आदि।

[सूचना–

बीकानेरी में एकारान्त संज्ञाएं केवल जाति वाचक हैं साथ ही मात्रा

की दृष्टि से अपवाद है।]

(ऊ) बीकानेरी व्यंजनान्त संज्ञाएं भी मात्रा की दृष्टि से अपवाद हैं और लिंग की दृष्टि से ये सामान्यतः स्त्रीलिंग हैं यथा—

ग (गम) गो (स्याही)

२ १ २ ४ स्त्री-प्रत्यय

बीकानेरी में स्त्री प्रत्ययों की सहायता से विभिन्न पुल्लिंग संज्ञा शब्द स्त्रीलिंग में परिवर्तित किये जा सकते हैं। ये प्रत्यय निम्नलिखित हैं।

'-ई'

प्राणी वाचक ओंकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं में 'ई' प्रत्यय के लगने पर उनको स्त्रीलिंग में परिवर्तित कर लिया जाता है। ई लगने से पूर्व अन्त्य स्वर -ओं का लोप हो जाता है यथा—

पुल्लिंग रूप	-ओं	स्वरहीन रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१ दादों	ओं	दाद्	ई	दादी
२ सालों	-ओं	साल्	ई	साली
३ बान्दरों	-ओं	बान्दर्	ई	बान्दरी
४ छोरों	ओं	छोर्	ई	छोरी
५ काकों	ओं	काक्	ई	काकी
६ घोड़ों	-ओं	घोड़्	ई	घोड़ी

'-अण्'

कुछ पुल्लिंग संज्ञाओं में अण् प्रत्यय संलग्न करके उनके स्त्रीलिंग रूप बनाये जाते हैं। यदि संज्ञाएं स्वरान्त हो तो प्रत्यय जुड़ने से पूर्व स्वर का लोप हो जाता है और यदि संज्ञाएं व्यंजनान्त हो तो अविकारी रूप से यह प्रत्यय जुड़ जाता है, यथा—

स्वरान्त सज्ञाए व '-ग्रण' प्रत्यय

पुलिग रुप	स्वरहीन रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिग रूप
१ घाती	धात्र	अण	घोबण
२ तत्री	तल	अण	तेलण
३ भगी	भग	अण	भगण
४ स सी	मे स	अण	स सण

व्यजनान्त सज्ञाए व '-ग्रण' प्रत्यय

पुलिग रूप	प्रत्यय	स्त्रीलिग
१ खाम	अण	खामण
२ चमार	अण	चमारण
३ कु भार	अण	कु भारण

'-ग्रणी'

बीकानेरी म कुछ व्यजनात पुल्लिग स ज्ञाओ म -अणी प्रत्यय जोड कर उनका स्त्रीलिग रुप बनाया जाता है ।

पुलिग रुप	प्रत्यय	स्त्रीलिग रुप
१ टट	अणी	टटणी
२ ठग	अणी	ठगणी
३ जाट	-अणी	जाटणी
४ डूम	-अणी	डूमणी
५ नट	अणी	नटणी

कुछ व्यजनात पुलिग स ज्ञाओ म -आ णी प्रत्यय लगाकर उन्ह स्त्रीलिग परिवर्तित किया जाता है यथा–

पुलिग रुप	प्रत्यय	स्त्रीलिग रूप
१ सेठ	-आ णी	सेठा णी

२	जठ	-आँणी	जेठाँणी
३	ठाकर ~ ठक्र	-आँणी	ठकराँणी
४	देवर	-आँणी	दवराणी ~ देराणी
५	पडत्	-आँणी	पडताणी
६	नोकर	-आँणी	नोकराँणी

बीकानेरी म कुछ प्रत्यय पुरुष वाचक है जिसम स्त्रीलिग रूप पुलिग म परिणत हो जाते है यथा–

स्त्रीलिग रूप	प्रत्यय	पुलिग रूप
नणद	-आई	नणदोई
बन	-आइ	बँनोई[1]

२ १ २ ५ प्रयोग के आधार पर लिग निर्णय

उपयु क्त विवेचन के अतिरिक्त भी कुछ सज्ञा शब्द इस प्रकार के हैं जिनका लिग निर्णय लोक प्रयोग के आधार पर ही सभव है क्योंकि कोई सुविधा जनक आधार नही मिलता, अत इस सबध म कोई निश्चित नियम भी नहीं बनाया जा सकता । इस प्रकार के सज्ञा शब्दो के अन्तगत व्यजनान्त शब्द ही अधिक हैं। यहा कुछ शब्द प्रस्तुत किय जा सकते है–

पुलिग	स्त्रीलिग
बन	जन
कान	दान
पाप	छाप
माग	आग
गट (कट वश)	दूध (अ गता)

२ १ ३ वचन

वचन-विधान की दृष्टि म बीकानेरी म भाषा के दो रूप उपलब्ध होते हैं

1— यहा बन्नोई म ओ ध्वनि नगगाइ सादृश्य के कारण है ।
बन + ओ + -आई = बनोइ

१– एकवचन
२– बहुवचन

एकवचन से वस्तु के एकत्व का बोध होता है, और बहुवचन में एक से अधिकत्व का। यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि संज्ञा–पदों में पाये जाने वाले वचन के विभक्ति प्रत्ययों को कारक सम्बन्धों के द्योतक विभक्ति प्रत्ययों से पृथक् करके नहीं देखा जा सकता।

२ १ ३ १ वचन-विधान

(अ) पुंलिंग

१ बीकानेरी में पुंल्लिंग व्यंजनान्त शब्दों के बहुवचन में रूप अधिकांशतः अपरिवर्तित ही रहते हैं यथा—

एकवचन	बहुवचन
१ पाँव्	पाँव्
२ वार	वार
३ चावल	चावल
४ ऊठ	ऊठ
५ सरप्	सरप
६ रींछ	रीछ

२ बीकानेरी में पुंल्लिंग ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों के रूप भी बहुवचन में कुछ अपवादों को छोड़कर अपरिवर्तित ही रहते हैं यथा—

'पुंल्लिंग ईकारान्त'

एकवचन	बहुवचन
१ दरजी	दरजी
२ नाई	नाई

३ धोबी	धाबी
४ माली	माली

'पुंल्लिग ऊकारान्त'

एकवचन	बहुवचन
१ आलू	आलू
२ बच्छू	बच्छू
३ गऊ	गऊ
४ डाकू	डाकू

३– पुंलिंग एकारान्त नामों के बहुवचन के रूपों में अन्त्य ए लुप्त होकर -आ में परिणत हो जाती है।

एकवचन	स्वरहीन रूप		बहुवचन
१ पांडे	पांड	आ	पांडा
२ दूबे	दूब	आ	दूबा
३ चौबे	चाबे	आ	चौबा

४– पुंलिंग ओंकारान्त नामों के एकवचन को बहुवचन के रूपों में परिवर्तित करते समय अन्त्य ओं के स्थान पर आ जुड़ जाता है।

एकवचन	बहुवचन
१ काकाँ	काका
२ घाड़ाँ	घाड़ा
३ [illegible]	[illegible]
४ छोराँ	छोरा
५ मग्गुआँ	मग्गुआ

[सूचना –

उपर्युक्त सभी पुंलिंग के शब्द विकारी बहुवचन में आँ प्रत्यय लगता है—]

(क) पुल्लिंग व्यंजनांत शब्दों के विकारी बहुवचन में -ओं प्रत्यय अविकारी रूप से जुड़ता है यथा–

१ पांन् + -आं = पांनां
२ चोर् + -आं = चोरां
३ चावल + आं = चावलां
४ ऊठ् + आं = ऊठां
५ सरप + आं = सरपां
६ रीछ + -आं = रीछां

(ख) ईकारांत व ऊकारांत शब्दों के बहुवचन विकारी रूपों में अन्त्य ई और -ऊ लुप्त हो जाते हैं, और आं प्रत्यय लगने से पूर्व क्रमश 'य' और 'व' श्रुति आ जाती है,[1] यथा–

ईकारान्त पुल्लिग

दरजी
१- दरज + ई + आं = दरज + य + आं = दरज्यां
धोबी
२- धोब + ई + आं = धोब + य + आं = धोब्यां
माली
३- माल + ई + आं = माल + य + आं = माल्यां

ऊकारान्त पुल्लिग

आलू
१- आल् + ऊ + आं = आल् + व + आं = आलवां
बच्छू
२- बच्छ् + ऊ + आं = बच्छ् + व + आं = बच्छवां

१— पाणिनि इकोयणचि /६/१/७७/

अर्थात् अच् परे होने पर इक् के स्थान पर यण् आदेश होता है। बीकानेरी में संस्कृत की यह प्रक्रिया अब भी क्रियान्वित होती है। यथा–
दरज + ई + आं = दरज्यां, आल + ऊ + आं = आलवां आदि।

३ धार्री	धार्री
४ मार्री	माला

'पुल्लिंग ऊकारान्त'

एकवचन	बहुवचन
१ आलू	आलू
२ बच्छू	बच्छू
३ गऊ	गऊ
४ डाकू	डाकू

३— पुल्लिंग एकारान्त शब्दों के बहुवचन के रूपों में अन्त्य ए लुप्त होकर आ में परिणत हो जाती है।

एकवचन	स्वरान्त रूप		बहुवचन
१ पाँड़े	पाँड़	आ	पाँड़ा
२ दूबे	दूब	आ	दूबा
३ चौबे	चौब	आ	चौबा

४— पुल्लिंग ओंकारान्त शब्दों के एकवचन को बहुवचन के रूपों में परिवर्तित करते समय अन्त्य ओ के स्थान पर आ जुड़ जाता है।

एकवचन	बहुवचन
१ बाबों	बाबा
२ घोड़ों	घोड़ा
३ दादों	दादा
४ छोरो	छोरा
५ ससुरों	ससुरा

[सूचना —

उपर्युक्त सभी पुल्लिंग के शब्द विकारी बहुवचन में 'ओं' प्रत्यय लगता है—]

(क) पुंल्लिग व्यंजनान्त शब्दों के विकारी बहुवचन में -ओं प्रत्यय अविकारी रूप से जुड़ता है, यथा–

१ पाँव् + -ओं = पाँवों
■ बोर + -ओं = बोरों
३ चावल + ओं = चावलों
४ ऊठ् + ओं = ऊठों
५ सरप् + -ओं = सरपों
६ रीछ + -ओं = रीछों

(ख) ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों के बहुवचन विकारी रूपों में अन्त्य ई और ऊ लुप्त हो जाते हैं, और ओं प्रत्यय लगने से पूर्व क्रमश य' और 'व' श्रुति आ जाती है,[1] यथा–

ईकारान्त पुंल्लिग

दरजी
१– दरज + ई + ओं = दरज + य + -ओं = दरज्यों
धोबी
२– धोब + ई + ओं = धोब + य + ओं = धोब्यों
माली
३– माल + ई + ओं = माल + य + ओं = माल्यों

ऊकारान्त पुंल्लिग

आलू
१– आल् + ऊ + ओं = आल + व् + ओं = आलवों
बच्छू
२– बच्छू + ऊ + ओं = बच्छ + व + ओं = बच्छवों

१— पाणिनि इकोयणचि /६/१/७७/
अर्थात् अच् परे होने पर इक् के स्थान पर यण् आदेश होता है। बीकानेरी में संस्कृत की यह प्रक्रिया अब भी क्रियान्वित होती है। यथा–
दरज + ई + ओं = दरज्यों, आल + ऊ + ओं = आलवों आदि।

५ छोरी	छोर्‌या ँ
६ डोकरी	डोक्‌रया ँ

ऊकारान्त स्त्रीलिंग

एकवचन	बहुवचन
१ ॰बऊ	॰ब्वो ँ
२ गऊ	गवो ँ
३ सासू	सासवो ँ

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में -ओं प्रत्यय लगने से पूर्व क्रमशः 'य' और 'व' श्रुति का समावेश हुआ है। विश्लेषण पृ० ईकारान्त व ऊकारान्त शब्दों के अन्तर्गत दिया जा चुका है।

उपर्युक्त विवेचन के अतिरिक्त यहाँ पर उल्लेख कर देना नितान्त आवश्यक है कि बोली में वचन विधान की इस संश्लिष्ट विधा के अतिरिक्त विश्लिष्ट विधा भी है। कुछ ऐसे संज्ञा शब्द हैं जिनके साथ कभी अनिवार्य रूप से और कहीं वैकल्पिक रूप से स्वतन्त्र शब्दों को रखकर अनेकत्व का बोध कराया जाता है। ये बहुवचन द्योतक शब्द निम्नलिखित हैं—

ओर लोग हर, ॰जणा जण ।ँ आदि।

उपर्युक्त सभी शब्द सर्वनाम पदों में अधिकतर प्रयुक्त होते हैं और संज्ञा शब्दों के साथ अधिकतर लोग, ओर आदि शब्द ही प्रयुक्त होते हैं—

राँम ओर आया था

साधु लोग भेला होया है

उपर्युक्त उदाहरणों में 'ओर' तथा लोग बहुत्व का बोध कराते हैं।

२ १ ४ कारक

संज्ञा अथवा सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया अथवा दूसरे शब्द के साथ सूचित किया जाता है उसे कारक कहते हैं।

मुख्य रूप से बीकानेरी म सज्ञा के दो कारक भेद उपलब्ध होते हैं –

१ अविकृत कारक
२ विकृत कारक

२ १ ४ १ अविकृत या मूल कारक

अविकृत या मूल कारक सज्ञा का वह रूप है जो यथावत (अपरिवर्तित) रूप म रह कर ही कुछ कारक सम्बन्धो को अभिव्यक्त करता है। यथा—

छोरो भेंड ग्यों = लडका भाग गया।
छोरो पाछो आय ग्यों = लडका वापिस आ गया।

२ १ ४ २ विकारी या विकृत कारक

विकारी या विकृत कारक सज्ञा का वह रूप है, जो मूल रूप की तुलना मे कुछ परिवर्तित (विकृत) रूप म प्रयुक्त होता है और वाक्यान्तगत सदव परसर्गों को ग्रहण करता है यथा—

रो`म ने काढ दीयो	राम को निकाल दिया
घर सू आय ग्या	घर से आ गया
हरिय रै लायो हू।	हरि के लिए लाया हूँ

मूल और विकृत (कारक) रूपो के अतिरिक्त बीकानेरी मे सज्ञाओ का सबोधन रूप भी प्राप्त होता है जो उपयुक्त दोनो रूपो से अलग विशेषता रखता है। अत यहाँ उन्हें अलग (मूल और विकारी कारको स) स्वीकार किया गया है।

सबोधन रूप सज्ञा का वह रूप है जिसस किसी प्राणी विशेष को, यदा कदा भावुकता म जड पदार्थों को भी सबोधित किया जाता है। वस यह रूप भी विकारी रूप (कारक) माना जा सकता है (सरचना की दृष्टि स) किन्तु इस सम्बन्ध म उल्लेखनीय बात यह है कि इनके साथ कारक चिह्नो का प्रयोग न होकर कुछ विस्मयादि बोधक चिन्हो का प्रयोग किया जाता है। यथा—

हे रो`म ! हे राम !

अरे छोरा !	अरे लडके ! (एकवचन)
अरे छोरों !	अरे लडको ! (बहुवचन)

इस प्रकार बोली मे मूल और विकारी रूपों के अतिरिक्त सम्बोधन रूप भी स्वीकार किया गया है । अत अब विविध (लिंग एव अन्त्य की दृष्टि से) सज्ञा शब्दों की (उपयुक्त तीनों रूपों- मूल विकारी-सम्बोधन की) रूप रचना को शेला वचना म इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है-

२ १ ४ १ पुल्लिंग सज्ञा शब्द

ईकारान्त – धोबी

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	धोबी	धोबी	-०(शून्य)	-०(शून्य)
विकारी रूप	धोबी	धोब्यां	०(शून्य)	-आं
सम्बोधन रूप	धोबी	धाब्यों	०(शून्य)	-ओं

ऊकारान्त–आलू

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	आलू	आलू	०(शून्य)	०(शून्य)
विकारी रूप	आलू	आलवों	०(शून्य)	ओं
सम्बोधन रूप	आलू	आलवो	०(शून्य)	ओं

एकारान्त–दूबे

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	दूबे	दूबा	०(शून्य)	-आ

विकारी रूप	दूवे	दूवां	०(शून्य)	-आँ
सम्बोधन रूप	दूवे	दूवां	०(शून्य)	-आं

ओकारान्त–छोरो

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	छोरो	छोरा	०(शून्य)	-आ
विकारी रूप	छोरं	छोरां	ए (अं)	-ओं
सम्बोधन रूप	छोरा	छोरा	आ	-ओं

व्यंजनान्त – घर्

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	घर	घर	०(शून्य)	०(शून्य)
विकारी रूप	घर	घरों	०(शून्य)	-आं
सम्बोधन रूप	घर	घरां	०(शून्य)	ओ

२ १ ४ २ स्त्रीलिंग संज्ञा शब्द

आकारान्त-भूवा

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	भूवा	भूवायां	०(शून्य)	ओ
विकारी रूप	भूवा	भूवायां	०(शून्य)	-आं
सम्बोधन रूप	भूवा	भूवायों	०(शून्य)	ओ

ईकारान्त – छोरी

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	छोरी	छोर्या	०(शून्य)	-आँ

विकारी रूप	छोरी	छोरयाँ	०(शून्य)	ओं
सम्बोधन-रूप	छोरी	छोरयाँ	-०(शून्य)	ओं

ऊकारान्त - सासू

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	सासू	सासवो ँ	-०(शून्य)	-ओं
विकारी रूप	सासू	सासवो ँ	०(शून्य)	-आं
सम्बोधन-रूप	सासू	सासवाँ	०(शून्य)	-आँ

व्यजनान्त–लात्

	रूप		प्रत्यय	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मूल रूप	लात्	लात्या	०(शून्य)	-आं
विकारी रूप	लात्	लात्यां	०(शून्य)	-ओं
सम्बोधन रूप	लात्	लात्याँ	०(शून्य)	-आँ

२ १ ४ ३ परसर्ग

बीकानेरी के कारकीय रूपों की रचना के लिए निम्न परसर्गों का प्रयोग होता है।

१ कर्ता	०
२ कर्म	नैं
३ करण	सू
४ सम्प्रदान	रै नैं
५ अपादान	सू
६ सम्बन्ध	रा रा, री
७ अधिकरण	मँ, मोँय पर
८ सम्बोधन	ए ओ, अर, हरे

उपयुक्त परसर्गों की प्रयोग प्रक्रिया बीकानेरी में इस प्रकार है—

२ १ ४ ३ १ कर्त्ता कारक[1]

बीकानेरी में कर्त्ता कारक के विकारी या अविकारी रूपों के साथ कोई भी परसर्ग प्रयुक्त नहीं होता, यह इसकी अपनी निजी विशेषता है। साधारणतः कर्त्ता कारक का प्रयोग किसी काम के साधक के रूप में ही होता है यथा—

१ छोरी आवें है	लड़की आती है।
२ छोरो दौड़ें है	लड़का भागता है।

२ १ ४ ३ २ कर्म कारक—नें

बीकानेरी में कर्म कारक की अभिव्यक्ति नें परसर्ग को विकारी रूपों के पर रख कर की जाती है यथा—

१ बलधों नें काढ	बलों को निकालो
२ टोगडिय नें पो णी पाव	बछड़े को पानी पिलाओ
३ रो म् नें बुला	राम को बुलाओ
४ छोरों नें पढाव	लड़कों को पढ़ाओ

२ १ ४ ३ ३ करण—कारक[2]

बीकानेरी में सूं परसर्ग करण कारक की अभिव्यक्ति के लिए व्यवहृत

संस्कृत में कारकों की संख्या केवल छ ही बताई गई है।
अपादान सम्प्रदान करणाधार कर्मणाम्
कर्तुश्च भेदत षाढा कारक परिकीर्तितम् हिन्दी कारकों का विकास
पृ० २० प० शिवनाथ

१— प्रातिपदिकार्थलिंगपरिमाण वचन मात्रे प्रथमा।'
अष्टाध्यायी २/३/४६/

२— साधकतमं करणम्
अष्टाध्यायी /१/४/४२/ पाणिनि

ता है साथ ही तुलनात्मक अभिव्यक्ति में भी 'सू' परसग हीं प्रयुक्त होता है था-

१ हाथ सू रोटी खावै है	हाथ से रोटी खाता है।
२ मदन दूध सू रोटी खावै है	मदन दूध से रोटी खाता है।
३ रोंम पोंणी सू हाथ धोवै है	राम पानी से हाथ धोता है।
४ मनार सू मक्खणियों तक्डो है।	मनोर से मक्खन (लाल) बलिष्ठ है।

२ १ ४ ३ ४ सम्प्रदान कारक[1]

बीकानेरी में सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति रै' 'नै' परसर्गो को विकारी रूपो के परे रखकर की जाती है, यथा-

१ मदन रै लायों हूं	मदन के लिए लाया हू।
२ रोंम रै ,दवाई लायों	राम के लिए दवाई लाया।
३ बडों नै पगेलागणा	बुजुर्गो के लिए प्रणाम।
४ छोरां नै आसीस	लडका के लिए आशीर्वाद।
५ गुरुजी नै दडोत	गुरुजी के लिए प्रणाम।

२ १ ४ ३ ५ अपादान कारक[2]

बोली मे 'सू' परसर्ग ही अपादान कारक की अभिव्यक्ति के लिए व्यवहृत होता है और साथ ही तुलनात्मक स्थितियो मे भी सू परसग प्रयुक्त होता है। यथा-

१ छोरो डागले सू पडग्यो	लडका छत से गिर गया।
२ रोंम अठै सू गयों परो	राम यहा से चला गया।

१— 'कर्मणा यमभि प्रैति स सम्प्रदानम्' —अष्टाध्यायी १/४/३२/ पाणिनि

२— ध्रुवमपायेऽपादानम्' —अष्टाध्यायी १/४/२४/ पाणिनि

३ वसनॅ सू हरियो बडोॅ है	किसन से हरि बड़ा है।
४ बोॅ म्हारॅ सू छोटोॅ है	वह मेरे से छोटा है।

२ १ ४ ३ ६ सम्वन्ध कारक

बीकानेरी मे सम्बन्ध कारक की अभिव्यक्ति के लिए पुल्लिग एकवचन में 'रो' बहुवचन मे 'रा' तथा स्त्रीलिंग एकवचन व बहुवचन मे 'री' परसग का प्रयोग होता है, यथा–

१ मदन रॉ छोरोॅ है	मदन का लडका है।
२ मदन रा छोरा है	मदन के लडके हैं।
३ सीता री घोडी है	सीता की घोडी है।
४ सीता री घोड्योॅ	सीता की घोडिया है।

रो, 'रा', 'री', आदि परसर्गों के अतिरिक्त बीकानेरी मे सम्प्रदान कारक का परसग 'रॅ' भी प्रयोग मे आता है। विशेषत यह संतान आदि की सूचना देने के लिए एव नीचॅ ऊपर, आगे लारॅ आदि शब्दो के पूव व्यवहृत होता है, यथा–

१ रॉम रॅ तीन छोरा है	राम के तीन लडके हैं।
२ मदन रॅ दो छोरा एक छोरी है	मदन के दो लडके एव एक लडकी है।
३ हरियॅ रॅ एको टाबर कोयनी	हरि के एक भी बच्चा नहीं है।
४ घर रॅ आगॅ खाडॉ है	घर के आगे खडडा है।
५ घर रॅ लारॅ नूट्योॅ है	घर के पीछे नल है।
६ रुंखडॅ रॅ नीचॅ	वृक्ष के नीचे
७ मन्दर रॅ ऊपर	मदिर के ऊपर

२ १ ४ ३ ७ अधिकरण कारक

बीकानेरी म मॅ, माथॅ, ऊपर, आदि परसग अधिकरण कारक की अभिव्यक्ति के लिए प्रयुक्त होते हैं।

में परसग सामान्यत स्थान (अन्दर या बाहर) तथा समयावधि की सूचना देता है।

१ म्हारों घर गाँव में है — मेरा घर गाव मे है।
२ राँम दुकाँन में है — राम दुकान मे है।
३ डागलें मायें पडियों है — छत पर पड़ा है।
४ अलमारी ऊपर पडियों है — आलमारी पर पड़ा है।

२ २ दो या दो से अधिक स्वतत्र रूपांश युक्त नामवाची-पद (समस्त-सज्ञा-पद)

एक स्वतत्र रूपाश युक्त नामवाची पदो म केवल एक ही शब्द म विविध लिंग-वचन-कारक बोधक आवद्ध अ शो को जोडकर पद रचना की जाती है परन्तु दो या दो से अधिक स्वतत्र रूपाशों मे परस्पर भिन्न दो स्वतत्र रूपाशों के योग म विविध लिंग-वचन-कारक बोधक आवद्ध अ शो को जोड कर पद रचना की जाती है और इस सयोग के परिणाम स्वरूप उसम अर्थ अभिनवता आ जाती है। पारिभाषिक शब्दावली म इसे 'समस्तपद' की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। परन्तु प्रश्न यह उठता है कि समस्त पदो का नाम पदो के अध्ययन मे क्यो स्वीकार किया जाय? उत्तर स्वरूप हम निम्नलिखित तक उपस्थित कर सकते हैं —

१— जिस प्रकार शब्द के अन्त मे विविध अर्थ बोध कराने वाले व्याकरणिक कोटि के आबद्ध अ शो का योग होता है उसी प्रकार समस्त-पद में भी इनके योग के द्वारा विविध व्याकरणिक कोटि के अर्थों की व्यजना की जाती है।

२ यद्यपि समस्त पद की रचना दो या दो से अधिक स्वतत्र रूपांशो के योग मे होती है परन्तु ये दोनों स्वतत्र रूपाश मिल कर वाक्यान्तिगत एक स्वतत्र रूपाश युक्त पद के समान एक ही अर्थ को व्यक्त करते हैं यथा— राजकवर (राजकुमार)।

इस उदाहरण म राज (राजा) और कवर (कुमार) दो भिन्न भिन्न पद है जब वे मिलकर एक हो जाते हैं तो एक ही शब्द के समान अर्थ को व्यक्त करते हैं।

३ शब्द मे बल एक ध्वनि के ऊपर ही प्रमुख होता है, उसी प्रकार समस्त पद मे भी एक ही ध्वनि के ऊपर बल की प्रधानता रहती है।

४ वाक्य रचना एव अय शब्द सरचना मे शब्द के समान समस्त-प ं भी योग्यता विद्यमान रहती है।

५ शब्द का जो स्वरूप और सक्षण होता है उसके अनुरूप ही समस्त पद का स्वरूप होता है।

६ शब्द के समान समस्त पद म भी उच्चारण के दोनो भेद युक्त एव मुक्त सक्रमण विद्यमान रहते हैं।

७ उच्चारण मे श्वास का एक झटका [1]

इस प्रकार उपयु क्त तथ्यो के आधार पर समस्त पदो को भी नाम पदो के अध्ययन मे स्थान दें तो किसी प्रकार की अत्युक्ति न होगी। इस अध्याय म केवल समस्त सज्ञा पदो का ही विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

'समस्त-पदों के तात्विक निष्कर्षों पर पहुँचने के लिए यदि हम तत्सम्बधित कतिपय विद्वानो द्वारा दी गई परिभाषाओ का अवलोकन करे तो अप्रासंगिक न होगा–

'समर्थ पदविधि अर्थात् पदविधि समर्थ होती है।[2]

समस्यते अनेकम पदमिति समास अर्थात् अनेक पदो को एक पद म मिला देना ही समास है। [3]

१— इस श्वास के झटके को अक्षर उच्चारण के झटके म भिन्न समझना चाहिए। श्वास प्रवाह वाक्यान्त या वाक्यांश तक पहुँचने स पूर्व अनेक छोटी बडी तरगों में बट जाता हैं। यदि अक्षर उसकी लघु तरग है तो समस्त शब्द गत तरग उससे दीर्घतम तरग है।

२— पाणिनि — अष्टाध्यायी २/१/१।

३— सिद्धात कौमुदी बाल मनोरमा टीका

'दो या दो से अधिक शब्दों का परस्पर संबंध बताने वाले शब्दों अथवा प्रत्ययों का लोप होने पर, उन दो या अधिक शब्दों से जो एक स्वतंत्र शब्द बनता है उस शब्द को सामासिक शब्द कहते हैं, और उन दो या अधिक शब्दों का जो संयोग होता है वह समास कहलाता है ।[1]

अनेक शब्द मिलकर एक पद जब बन जाते हैं तो वह समास कहलाता है ।[2]

समास रचना में उन दो शब्दों का योग होता जो वाक्य के स्वतंत्र अंग होते हैं परंतु समास रचना में वाक्य के प्रत्येक शब्द का योग प्रत्येक शब्द के साथ नहीं हो सकता । केवल संनिकट रचनाओं के साथ ही समास रचना हो सकती है ।[3]

धातु तथा प्रत्यय के योग से शब्द बनते हैं और जब एक से अधिक शब्द मिलकर वृहद शब्द की सृष्टि करते हैं तब उसे समास कहते हैं ।[4]

शब्दों का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार आपस में मिल कर एक होना ।[5]

दो या अधिक पदों को एक करने पर समास होता है ।[6]

दोय के दोय सू घणा शब्द, आपणा सम्बंधी शब्दां ने छोड एक साथै मिल जावे तो अंडा मेल सू बणियोडा शब्दां ने समास' केवीज ।[7]

---

1 — कामता प्रसाद गुरु – हिन्दी व्याकरण नागरी प्रचारणी सभा काशी पृ० ४८१
2 — किशोरीदास वाजपेयी – हिन्दी शब्दानुशासन न ० प्र० स० पृ० ३०६
3 — डॉ० रमेश चन्द्र जैन – हिन्दी समास रचना का अध्ययन पृ० १०
4 — डा० उदयनारायण तिवारी – हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास पृ० ४७०
5 — डा० श्यामसुन्दर तथा अन्य (सम्पादक) हिन्दी शब्दसागर काशी नागरी प्रचारिणि सभा, पृ० ३४६०
6 — हिन्दी विश्वकोश त्रयोविंश भाग पृ० २६५
7 — सीताराम लालस राजस्थानी व्याकरण पृ० २६५

उपर्युक्त सभी परिभाषाओं में विद्वानों के मत भिन्न भिन्न शब्दों में एक ही आशय को अभिव्यक्त करते हैं तथा उदाहरणों द्वारा उन्होंने अपने मत का जो पुष्टिकरण किया है वह भी अभेद-सूचक ही है। अनेक विद्वानों के सार को लेकर डॉ० रमेशचन्द्र ने समस्त-पद के सम्बन्ध में निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं जो निम्नलिखित हैं —

(अ) दो या दो से अधिक समीपी संघटकों द्वारा एक शब्द का अस्तित्व

(ब) सृष्ट समस्त पद में अर्थ अभिनवता

(स) समीपी संघटकों के अर्थ से भिन्नता

इस प्रकार निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जब दो या दो से अधिक स्वतंत्र रूपों के योग से व्युत्पन्न एवं स्वतंत्र रूपीय अस्तित्व ग्रहण करता है और संयोग के परिणाम स्वरूप जब उसमें अर्थ अभिनवता आ जाती है तो पारिभाषिक शब्दावली में उसे समस्त-पद कहा जा सकता है।

अस्तु 'प्रकृतमनुसराम'। बीकानेरी के समस्त-नाम-पदों का अध्ययन क्रमशः ध्वन्यात्मकता एवं रूपात्मकता की दृष्टि से नीचे प्रस्तुत किया गया है। ध्वन्यात्मक विश्लेषण के अन्तर्गत मूल समीपी संघटकों में ध्वन्यात्मक परिवर्तन होकर समस्त पद में जो परिणाम लक्षित हुए हैं उन्हें प्रस्तुत किया गया है। उपलब्ध सामासिक पदों का विग्रह करने के उपरान्त समीपी संघटकों में ध्वन्यात्मक परिवर्तन के प्रयोग तथा संयोग के परिणाम स्वरूप ध्वनि नैकट्य का भी विवेचन प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार का विश्लेषण बीकानेरी के मूल नाम पदों के स्वरूप को हमारे समक्ष प्रस्तुत करता है। रूपात्मक विश्लेषण के अन्तर्गत शब्द के व्याकरणिक स्वतन्त्र रूप निर्माण की प्रक्रिया एवं प्रयोग को स्वीकार किया गया है। अर्थ विज्ञान की दृष्टि से समस्त पदों में अर्थ अभिनवता की दिशा एवं उसके स्वरूप पर प्रकाश डाला जाना है जो मेरे 'लघु शोध प्रबंध' की सीमा के बाहर है अतः अर्थ विज्ञान को विश्लेषण के अन्तर्गत स्वीकार नहीं किया गया है। समस्त पदों के इस विश्लेषण के साथ साथ समीपी संघटकों की प्रधान अप्रधानता पर भी विचार किया गया है।

समस्त पदों के स्वरूप निर्धारण में मैंने संस्कृत एवं हिन्दी की प्रचलित रूढ परम्पराओं को पूर्ण रूपेण अंगीकार नहीं किया है यदि ऐसा

तो मेरा 'प्रबंध' गडुलिका प्रवाह मात्र ही सिद्ध होता है । अद्यावधि प्रचलित मान्यताओं के विश्लेषण के उपरान्त सामान्य मान्यताओं का निर्धारण कर उन्हीं के आधार पर समस्त-पद-स्वतन्त्र रूपांश का निर्धारण किया गया है।

२ २ १ बीकानेरी मे प्रयुक्त समस्त-सज्ञा-पद

बीकानेरी मे समास रचना के परिणाम स्वरूप समीपी संघटको के मूल रूप मे ध्वनि परिवर्तन होता है, पर कुछ समस्त-पद ऐसे भी हैं जिनमे संयोग उपस्थित होने पर भी ध्वनि की दृष्टि से विकार उत्पन्न नही होता है । अत अध्ययन की सुविधा के लिए हम बीकानेरी समस्त सज्ञा पदो को दो वर्गो मे विभक्त सकते हैं –

१ अविकृत समस्त-सज्ञा-पद
२ विकृत समस्त सज्ञा पद

२ २ १ १ अविकृत समस्त-सज्ञा-पद

अविकृत रूपो से हमारा तात्पर्य उन समस्त सज्ञा-पदो से हैं, जिनमें ध्वनि की दृष्टि से दोनो समीपी सघटको मे किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होता है वरन वे अपने मूल रूप में प्रयुक्त हुए हैं। बीकानेरी म उपलब्ध समस्त सज्ञा-पदो के अविकारी रूप निम्नलिखित हैं –

ऊन्दरों ऊन्दरी कलजुग, कण-कण, कालीमरच्याँ, कुजाली, काँटी कोडी, खाटों मीठों, घरजंवाई घर-बार घर घर जनमभूमि, भगलाँ टागी मन्साल फलफूल जीवणों मरणों मायाजाल, मोरमुगट रायवंवरी, रोटी बाटी, लट-पट, व्यास, सुख-दुख, हाल-चाल मार कूट, बोल चाल उठ-बठ तोड-फोड, माँ-बेटा, बाप-बेटों माँ बाप, भाई बेंन हाथ मूडों, आँख नाक रसोईघर, काम चोर लाल-पीलो, पाप-पुन हाली दीयाली, सूझ-बूझ, सूतों सूतों सावली सूरत, सरग वासँ ई, ।

२ २ १ २ विकृत समस्त-सज्ञा-पद

विकृत समस्त सज्ञा-पदा से हमारा तात्पय उन समस्त पदो से हैं जिनमे

ध्वनि की दृष्टि से दोनों समीपी संघटकों की आदि मध्य अथवा अन्त्य ध्वनि में किसी न किसी प्रकार का विकार दृष्टिगत हुआ है। विकृत रूपों को ध्वनि विकृति के आधार पर हम तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं –

आदि समीपी संघटक में विकार
अन्त्य समीपी संघटक में विकार
द्विसमीपी संघटक में विकार

२ २ १ २ १ आदि (प्रथम) समीपी संघटक में विकार

कौंसोंकाँस, लठमीठाँ, देईदेवता, नकटी, पाड़पाड़ोस, रजपूताँ, रातोरात, हायोहाय, मोंरतम, बडबोर, धक्कमधक्का,

उक्त सामासिक पदों में ध्वनि परिवर्तन के विभिन्न रूप हमें देखने को मिलते हैं। इनका विश्लेषण निम्नलिखित हैं –

ध्वनि लोप–

(क) स्वर लोप
बडबोर—बड्+आ+बोर= बडाबोर
लोप / आ / बड्+आ+बोर=.बडबोर

(ख) व्यंजन लोप
देईदेवता—देव+ई+देवता=देवीदेवता
लोप / व् / देव+ई+देवता=देईदेवता

(ग) अक्षर लोप
नकटी=नाक+कटी=नाककटी
लोप—नाक+कटी=नकटी

(घ) स्वर व्यंजन लोप
पाडपाडोस—पाडोस+पाडोस=पाडोसपाडोस
लोप—पाड+ओ+स्+पाडोस=पाडपाडोस

ध्वनि आगम

(क) स्वरागम

रातोरात, कोंनोकोंन, हाथोहाथ

रात+रात=रातरात

आगम — रात+ओ+रात=रातोरात

कोंन+कोंन=कोंनकोंन

आगम — कोंन+ओ+कोंन = कोंनोकोंन

(ख) व्यंजनागम

धक्कमधक्का

धक्का+धक्का=धक्काधक्का

आगम — धक्क+म्+धक्का=धक्कमधक्का

२ २ १ २ २ अन्त्य (द्वितीय) समीपी सघटक मे विकार

रावडी-वावडी, आठोंनी च्यारांनी दोयांनी, एकांनी, गणगोंर, मोतीचूर गणपत, बोल वालो, मनलजमारां, लातयमूका मूछ मरोडा

उपर्युक्त सामासिक पदो के द्वितीय समीपी सघटक इकाईयो म विकार उत्पन्न हुआ है। वह कई प्रकार का है जिसके कारण मूल रूप म ध्वन्यात्मक परिवतन हुआ है।

ध्वनि लोप

(क) अन्त्य लोप

/ई/ गणपत

गण+पत्+ई= गणपती

लोप— गण+पत्+ई= गणपत

/आँ/ मोतीचूर

मोती+चूर+ओ=मोतीचूरां

लोप— मोती+चूर+आ=मोतीचूर

(ख) मध्य ध्वनि लोप

/ह/ होठों बार

होठों+बा+ह+र=होठों बाहर

लोप— होठों+बा+ह+र=होठों बार

ध्वनि आगम

अन्त्य ध्वनि आगम

/आ/ बोलबाला मूंछ मरोड़ा

बोल+बाल+आ=बोलबाला

मूंछ+मरोड़+आ=मूंछमरोड़ा

संज्ञा शब्दों की पुनरुक्ति से बनने वाले समासों में भी ध्वनि विकार द्वितीय संयोगी अवयव में देखा जाता है। ध्वनि विकार की दृष्टि से इस वर्ग के दो रूप उपलब्ध होते हैं –

(क) ई ए तथा ओ > आ यथा–

/ई > आ/ भीड़ भाड़	समूह आदि
/ई > आ/ बील बाल	बेल (फल) आदि
/ए > आ/ डेरें डारं	डेरे आदि
/ओ > आ/ छोरों छारों	लड़के आदि

(ख) आ > ऊ यथा–

/आ > ऊ/ बालबूल	जलाकर
/आ > ऊ/ खाटखूट	खाटादि
/आ > ऊ/ दालदूल	दालादि
/आ > ऊ/ सागसूग	सब्जी आदि
/आ > ऊ/ ताला तूनां	ताला आदि

संज्ञा प्रातिपदिक की द्विरुक्ति से निर्मित ऐसे भी समस्त-पद उपलब्ध होते हैं जिनके द्वितीय संयोगी अवयव ध्वनि विकार की दृष्टि से व्यंजन विहीन

हो गये हैं। यथा–

रोटी-ओटी	रोटी आदि
साग-आग	सब्जी आदि
माइ-आई	माई आदि
सालाँ आलाँ	साले आदि

किन्तु यदि आदि रूप स्वर से आरम्भ होने वाला है तो पुनरुक्ति म 'व' श्रुति का आगम आदि भाग मे हो जाता है –

आटोँ-वाटोँ	आटा आदि
आलू-वालू	आलू आदि
इ ट-वींट	ई ट आदि

२ २ १ २ ३ द्विपद समीपी सघटक मे विकार

ऊनालोँ (उष्ण + काल), कनफडा, चाँवारा, चोँमासोँ, झूमाझूमी रजपूतए, सीयालाँ हथलेवो, होडाहोडी, मडभू जोँ, घक्का घक्की, तणा-तणी, बउरूपियाँ

प्रथम पद विकार	द्वितीय पद विकार
लोप — /ओ/ – घू घरमाल	लोप – /आ/ घू घरमाल
आगम— /आ/ होडाहोडी	आगम– /ई/ होडाहोडी
आगम— /आ/ तणातणी	आगम– /ई/ तणातणी
आगम— /आ/ झूमाझूमी	आगम– /ई/- झू माझूमी
लोप — /ओ/- कनफडा	लोप – /आ/ कनफडा
अल्पप्राणीकरण उनालोँ	लोप /आँ/- (ऊनोँ-आलोँ) = ऊनालोँ
आगम— /ई य/-सीयालोँ	लोप- /आ/ (सी+आलोँ) = सीयालाँ
लोप — /र/- चाँमासाँ	आगम— /आँ/ चो मासोँ
लोप — /र/ चोँवारोँ	आगम— /ओँ/ -चाँवारा
लोप — /र/ – चो रायोँ	आगम— /आ-ओ/, लोप /ह/ श्रुति /य/ -चाँरायोँ

लोप — /आ/ हथलेवो | आगम — आ/- हथनेवो
लोप — /ओ/ पखवाडो | आगम — /ओ/-पखवाडो

उपयु क्त ध्वनि विकारा पर दृष्टिपात करने पर विदित हागा कि इन विकारा के पीछे मुख-सुख, मृदुता, नादसौदय, अवारणता अनुकरण, अलकरण आवेश आदि प्रवृत्तिया प्रमुख हैं। अन्य विकार का प्रमुख कारण यह है कि बोली म आ कार बहुला की प्रवृति प्रमुख है। जिसका उल्लेख अध्याय १ के अन्तगत किया जा चुका है।

२ २ १ ३ सश्लिष्ट एव विश्लिष्ट समस्त-सज्ञा-पद

ऊपर हमने बीकानेरी समस्त पदा के ध्वनि के आधार पर विकारी और अविकारी दो भेद किये थे। इन विकारी और अविकारी रूपा के अतिरिक्त बीकानेरी समस्त पदा के दो अन्य भेद भी हमारे समक्ष उपस्थित होते हैं –

१ सश्लिष्ट समस्त-सज्ञा-पद
२ विश्लिष्ट समस्त-सज्ञा पद

सामान्य रूप से समस्त-पद श्वास के एक झटके1 मे उच्चरित होता है पर कुछ कारणवश श्वास के उस निरन्तर प्रवाह म आदि या अन्त के समीपी सघटको की अन्त या आदि ध्वनियो म किसी प्रकार के ध्वनि गुण के प्रभाव के कारण व्यवधान उपस्थित हो जाता है और ध्वनि सयोग स्तर म इसी श्वास प्रवाह के कारण व्यवधान के आधार पर विभिन्न रूप हमारे समक्ष प्रस्तुत होते हैं। जहाँ ध्वनि सयोग म किसी प्रकार का व्यवधान लक्षित नही होता वहा समस्त सज्ञा पद सयोग को सश्लिष्ट और जहाँ व्यवधान उपस्थित होता है वहा 'विश्लिष्ट' नाम से अभिहित किया गया है।

१— जसा कि उल्लेख किया जा चुका है कि इस श्वास के झटके को प्रसार उच्चारण के झटके से भिन्न समझना चाहिए। श्वास प्रवाह वाक्यांत तक या वाक्यांश तक पहुँचने के पूव अनेक छोटी बडी तरगों में बट जाता है। यदि अक्षर उसकी लघुतम तरग है तो समस्त शब्द गत तरग उससे अपेक्षाकृत दीघ है।

जहाँ भाषा या बोली के लिखित रूप मे यह व्यवधान मुक्तसक्रमण के द्वारा किया जाता रहा है वहा पर हम सामासिक पदों के इन दो ही रूपो का स्वरूप सश्लिष्ट एव विश्लिष्ट प्रस्तुत कर सकते हैं। भाषा या बोली के उच्चरित रूप मे यह सक्रमण विभिन्न मात्रा म घटित होता है। अत लिपि के अन्तर्गत इस प्रकार के व्यवधान को प्रस्तुत करने के लिये हमारे पास पर्याप्त ध्वनि सकेत उपलब्ध नही हैं। इस प्रकार की प्रवृत्ति प्राय ससार की सभी भाषाओं मे लक्षित होती है। बीकानेरी के उच्चरित रूप को ध्यान म रखकर ध्वनि-सयोग का विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है जिसका आधार सश्लिष्ट और विश्लिष्ट पद है। ध्वनि लक्षण को दृष्टि पथ म रखकर विश्लिष्ट वर्गा के स्थूल भेद किये गये हैं। यह कार्य सरल नही हैं फिर भी कतिपय अनुमानो क आधार पर निष्कर्षों तक पहुचने का प्रयास किया गया है। परिणामत विश्लिष्ट पदों को दो भागा मे विभाजित किया गया है—आशिक और पूर्ण। इसी प्रकार सश्लिष्ट पदा को भी दो भागों में विभाजित किया गया है। इसका आधार भी प्रथम, जहाँ ध्वनि-परिवर्तन सधिगत नियमा के अन्तर्गत हुआ है और दूसरा वहाँ जहां ध्वनि परिवर्तन सधिगत नियमा से पृथक् और परे है।

२ २ १ ३ १ सश्लिष्ट समस्त-सज्ञा-पद

सधि नियमो से प्रभावित सजातीय वर्ग दीर्घत्व को प्राप्त होते हैं। तत्परिणामस्वरूप समीपी सघटको के अन्यान्य स्वरो मे सधि हो जाती है। ह्रस्व के स्थान पर दीर्घ ध्वनियाँ स्थान ग्रहण कर लेती हैं। यथा सीशालो ऊनालो आठाँनी दीओँनी, एकाँनी आदि।

समीकृत सम ध्वनिया का सधि म प्राय लोप होता है। सामासिक पदा के सयोग में भी इस प्रकार की प्रवृत्ति उपलब्ध होती है।

ध्वनि सयोग मे सश्लिष्ट पद का दूसरा उदाहरण आद्य त समीपी सघटका की अन्त्य एव आदि ध्वनिया से ध्वनि सयोग निकटवर्तीता होता है, पर सधि विधान स प्रभावित नही होता। इस प्रकार का नैकट्य बीकानेरी मे समीपी सघटको में एक सघटक एकाक्षरीय एव ध्वनि लक्षण से प्रभावित है यथा चौंमासों चौंबारों आदि।

२ २ १ ३ २ विश्लिष्ट समस्त-संज्ञा-पद

बीकानेरी के अधिकांश उपलब्ध समस्त संज्ञा पद विश्लिष्ट हैं। यह विश्लिष्टता तब होती है जबकि सामासिक पदों की दोनों समीपी सघटक इकाइयों में प्रथम के उपान्त्य या अन्त्य एवं द्वितीय की आदि या द्वितीय ध्वनि पर बलाघात हो। प्राय इस बलाघात की प्रवृत्ति का क्रम बीकानेरी में क्रमश दीर्घ-ह्रस्व, महाप्राण, अल्पप्राण, सघोष अघोष, संघर्षी—स्पर्शसंघर्षी, स्पर्श उच्चारण में देखने को मिलते हैं।

दीर्घ-ह्रस्व

(क) दीर्घ—दीर्घ — कारोबारयाँ, माँमामीयाँ
(ख) दीर्घ-ह्रस्व — चटाचट लपालप, भचाभच
(ग) ह्रस्व—दीर्घ — देहखेवता, पद्धवाडों, बउवेदा

कभी कभी इस प्रकार के समीपी सघटकों की इकाइयों का योग होता है जिसमें प्रथम समीपी सघटक इकाई व्यंजनान्त है वहां ह्रस्वता की मात्रा अत्यल्प हो जाती है। इसी कारण इसे पृथक वर्ग में प्रस्तुत किया गया है।

अति ह्रस्व-दीर्घ

खटमीठों, रजपूतों आदि। अति ह्रस्व ध्वनियों में यदि समीपी सघटकों की अन्त्य या आदि ध्वनि में से एक उत्क्षिप्त हो तो अति ह्रस्वता की मात्रा में अन्तर उपस्थित हो जाता है। दीर्घत्व ह्रस्व के नैकट्य को प्राप्त कर लेता है। यथा पाडपाडोसी भडभूंजा

अनुनासिक ध्वनियों की भी यही स्थिति देखी जाती है—

गरणपत कनफडों गीनदयाल। यही प्रवृत्ति लुंठित एवं पार्श्विक ध्वनियों में भी देखी जाती है। *यथा—बालबूटियों।*

महाप्राण-अल्पप्राण

प्रथम समीपी सघटक की प्रथम इकाई के अन्त्य वर्ण में महाप्राणता पर बल का प्रयोग होता है। यथा मनखजमारों हथलेवों आदि। द्वितीय समीपी सघटक के आदि में महाप्राणता के आधार पर भी ध्वनि संयोग में बल के परिणाम

स्वरूप ह्रस्वता मे अन्तर उपस्थित हो जाता है–
सालपमूका, गळथन, कनफडों ।

सघोप–अघोप

सघोप ध्वनियो के उच्चारण मे श्वास के अवरोह म स्वर तत्रियो द्वारा बल का प्रयोग होता है। तत्परिणामस्वरूप इनमे उच्चारण मात्राकाल अधिक होता है। अत सामासिक पदो की समीपी सघटको की आद्यन्त इकाइयो के अन्त्य या उपान्त्य एव आदि वर्ग में घोषता के परिणाम स्वरूप सामासिक सयोग की विश्लिष्टता में अन्तर उपस्थित हो जाता है। यथा–अरथभडारों ।

सघर्षी-स्पर्श सघर्षी

सघर्षी ध्वनियो मे उच्चारण मात्रा काल अधिक होने के कारण बलाघात की सभावना इन्ही ध्वनियो पर अधिक है। तत्परिणाम स्वरूप उष्म ध्वनि के सामासिक पदों के समीपी सघटना की इकाइयों के अन्त्य या आदि ध्वनियो की विश्लिष्ट पद स्थिति मे अन्तर उपस्थित हो जाता है। यथा गपसप, रद्दीसद्दी आदि।

उपयुक्त विवेचन विश्लिष्ट पद समीपी सघटको की अन्त्य एव आदि ध्वनियों के उच्चारण मात्रा काल को दृष्टि मे रखकर प्रस्तुत किया गया है। इसके अतिरिक्त विश्लिष्टता के अन्य कारण भी हैं जिन पर नीचे सक्षेप मे प्रकाश डालने का प्रयास किया गया है।

विशेषण-विशेष्य एव समानाधिकरण पदों की विश्लिष्टता म दोनो सघटको का सहयोग अधिक नकटय को प्राप्त करता है। यथा
सागीनराद सोनचड़ी ।

द्विरुक्ति म अलकार प्रियता के कारण ध्वनि साम्य के आधार पर भी विश्लिष्टता की सामान्य परिस्थितियो से भी अन्तर उपस्थित हो जाता है क्योकि बल का प्रयोग समध्वनियो के ऊपर केन्द्रित हो जाता है। यथा भूलचूक, सूजबूज, कणकण।

अनुकरण वाची द्विरुक्तियो मे भी इस प्रकार का प्रभाव लक्षित होता है। यथा लट्पट्, खटपट, झटपट, रमकझमक्। विरोधी लिंगबोधक द्विरुक्तियो मे

भी यही प्रभाव सा रा होता है। यथा–ऊन्री–ऊन्री ।

जहां कहीं सम्बन्ध सूचक का लोप हुआ है, इस प्रकार के सुप्तन समास पदों के ध्वनि संयोग म पूर्ण विश्लिष्टता विद्यमान रहती है। भेद भेदक, सम्बन्ध सूचक प्रत्ययों के लोप म इसी प्रवृत्ति के दर्शन होते हैं। यथा

धरमभंडार, धणी बऊ, घरधणी, बैकुण्ठवास म क्रमश / रा /, / और /, / रों /, / में / सम्बन्ध सूचक हैं।

संयोग म व्यवधान कभी कभी विशेषण विशेष्य संबंध के द्वारा भी उपस्थित होजाता है। अत जिस प्रकार का संयोग विशेषण–विशेष्य क्रम से होना चाहिये उस प्रकार का संयोग विशेष्य में नहीं हो पाता। यथा धनरपों म।

उपयु क्त विवेचन से स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी समास संज्ञा पदों के समीपी संधानों के ध्वनि संयोगों म मात्रा काल के अनेक स्तर हैं।

२ २ १ ४ समस्त-संज्ञा-पद स्रोत मूलक विश्लेषण

इस शीर्षक के अन्तर्गत बीकानेरी के समस्त पदों के मूल स्रोतों पर विचार किया है। सामान्यत स्रोत स आशय मूल शब्द की उत्पत्ति और तत्सम्बन्धित भाषा से है। इसे एतिहासिक विश्लेषण के अन्तर्गत रखा जाता है। वर्णनात्मक सामासिक संरचना मे दूसरे प्रकार का स्रोत ही विद्वानों ने स्वीकार किया है जिसके अनुसार प्रचलित भाषा में ही उसके स्रोतों को सार्थक स्वतंत्र रूपों की इकाई के रूप में खोजने का प्रयास किया जाता रहा है। प्रस्तुत लघुशोध प्रबन्ध म विषयानुकूल द्वितीय प्रकार के स्रोत पर ही अपनी दृष्टि केन्द्रित रखी गई है। इसके अनुसार बीकानेरी म उपलब्ध स्वतंत्र रूपांश जिनका अधुनातम प्रयोग प्रचलित हैं– ध्वन्यात्मक विकार की दृष्टि से अपने मूल स्रोत से कितनी दूर हैं ? या मूल रूप में प्रयुक्त हैं। अत ध्वनि विकार मात्रा एवं तज्जन्य स्वतंत्र रूपांश में मूल शब्द से दूरी जिसके कारण शब्द विशेष का मूल शब्द के साथ साम्य स्थापित करने म क्रमश दुरूहता की मात्रा बढ़ती जाती है,–को विभिन्न स्तरों मे विभाजित कर विवेचन प्रस्तुत किया गया है। साथ ही अध्ययन की सुविधा के लिए उनका वर्गीकरण निम्नलिखित पंक्तियों के अन्तर्गत प्रस्तुत किया जा सकता है–

(१) तत्सम (२) अर्द्ध तत्सम (३) तद्भव (४) अर्द्ध तद्भव (५) अनुकारवाची (६) देशज (७) विदेशी

१- तत्सम

तत्सम शब्दों से मेरा आशय उन समस्त पदों से है जिनका ध्वन्यात्मक विकार से रहित बीकानेरी मे प्रयोग उपलब्ध होता है।

२- अर्द्ध तत्सम

अर्द्ध तत्सम शब्दो मे मैंने उन समस्त पदों का स्वीकार किया है जिनमे स्वतंत्र रूप ध्वनि विकार की अल्पता के कारण अपने मूल रूप के अधिक सन्निकट दिखाई देते हैं।

३- तद्भव

तद्भव शब्दो की श्रेणी में ऐसे पदों को स्वीकार किया हैं, जिनमे ध्वनि विकार इतनी मात्रा मे उपस्थित हुआ है कि उन शब्दों का मूल रूप के साथ ध्वन्यात्मक साम्य स्थापित नही किया जा सकता।

४- अर्द्ध तद्भव

अर्द्ध तद्भव की श्रेणी में ऐसे स्वतंत्र रूपों को स्वीकार किया गया है जो अपने मूल रूप से ध्वन्यात्मक विकार के परिणाम स्वरूप इतने दूर हो गये हैं कि विकास जन्य स्वतंत्र रूप एवं मूल रूप मे पारस्परिक ध्वनि साम्य स्थापित करना असम्भव नही तो दुष्कर व श्रमसाध्य अवश्य है।

५- अनुकारवाची

ऐसे शब्द जो ध्वन्यात्मक अनुकरण के आधार पर निर्मित हुए हैं उन्हे इस वर्ग मे स्वीकार किया गया है।

६ देशज

भरत ने तत्सम और तद्भवों के अतिरिक्त शब्दों को देशी' या देश्य भी कहा है।[१] छठी शताब्दी में चण्ड ने देशी-प्रसिद्ध' शब्द का प्रयोग अ संस्कृत

१— भरत मुनि ' नाटय शास्त्र /१७/ ३/

तथा आ-प्राकृत शब्दों के लिये किया है[1] 'देशी' शब्द अपभ्रंश का वाचक भी हो गया था। हेमचन्द्र की 'देशी नाम माला' देशी शब्दों का कोष है। पर जिन शब्दों को प्राकृत वैयाकरणों ने देशी संज्ञा दी है उनमें से कुछ की व्युत्पत्ति संस्कृत से भी है, और कुछ का स्रोत अन्य भाषाओं में हैं। एम० एन० उपाध्ये ने कुछ का स्रोत कन्नड़ में बताया है। परन्तु अधिक जटिलता में न जाकर हम सामान्य रूप से कह सकते हैं कि जिनकी व्युत्पत्ति का सही निर्धारण नहीं किया जा सके वे ही शब्द 'देशी' या देशज हैं। ऐसे शब्दों का भाषाओं की अपेक्षा बोलियों में बाहुल्य होता है। बीकानेरी में भी ऐसे शब्दों का प्राचुर्य है।

७ विदेशी

ऐसे शब्द जो विदेशी भाषाओं से गृहीत हुए हैं इस वर्ग में स्वीकार किये गये हैं।

सामासिक संरचना के अन्तर्गत मैंने संघटकों की अधुनातम उपलब्ध प्रयोग प्रक्रिया को प्रस्तुत करने का यथा सम्भव प्रयास किया है जिसका आधार ध्वनि विकार और मात्राएं हैं।

१- तत्सम+तत्सम=तत्सम यथा-
कण कण, सुख दुख, वेदव्यास बाल लीला नाग लीला।

२- तत्सम+तद्भव=तत्सम—तद्भव यथा-
गणपत घनश्याम रूपचन्द कुजगली

३- तत्सम+विदेशी=तत्सम—विदेशी यथा-
पंचकमेटी

४- तद्भव+तत्सम=तद्भव—तत्सम यथा-
जनमभूमि रत्तोंणी व्यास

५- अर्द्ध तत्सम+अर्द्ध तत्सम=अर्द्ध तत्सम यथा-
राजपूत, दूधपूत, कलजुग मरतलोक

६- अर्द्ध तत्सम+तत्सम=अर्द्ध तत्सम—तत्सम, यथा-
देइदेवता रामराज्य

१— 'आजरवेशन्स आन हेमचन्द्र' देशी नाम माला,

७– तत्सम + अद्ध तत्सम = तत्सम–अद्ध तत्सम, यथा–
एकांनो काली मरच्यां

८– अद्ध तत्सम + तद्भव = अद्ध तत्सम—तद्भव, यथा–
कालकाठरी राजकवरी, मणधारी

९– तद्भव + अद्ध तत्सम = तद्भव—अद्ध तत्सम, यथा–
चोंमासा, चोंवारो मोरमुगट

१०– तद्भव + तद्भव = तद्भव, यथा–
क जीवणों मरणों दूदई, थाली-लोटों
ख सूतां सूनां कोंना कोन, हाथो-हाथ, मनख मनख

११– तद्भव + अद्ध तद्भव = तद्भव—अद्ध तद्भव यथा–
घरजंवाई हथलेवों, भूलचूक

१२– अद्ध तत्सम + अद्धतद्भव = अद्ध तत्सम—अद्धतद्भव, यथा–
रांडसावणी, हाथकोंभ

१३– अद्ध तत्सम + तत्सम = अद्ध तत्सम—तत्सम, यथा–
नरोगीकाया दईदेवता,

१४– अद्ध तद्भव + तद्भव = अद्ध तद्भव—तद्भव, यथा–
खाटो मीठो, खटमीठों,

१५– अद्ध तद्भव + अद्ध तत्सम = अद्ध तद्भव—अद्धतत्सम, यथा–
हालतों चालतों बउरूपीयो

१६– अद्ध तद्भव + अद्ध तद्भव = अद्धतद्भव, यथा–
क आठांनी, च्यारांनी चांरायां
ख कोंडो-कांडो
ग गुत्थम-गुत्था
घ आपरी-आपरो

१७– तत्सम + अद्धतद्भव = तत्सम—अद्धतत्सम, यथा–
गलाघोट राघावंनजी

१८– अनुकारवाची + अनुकारवाची = अनुकारवाची
लट-पट, खट्-पट, झट्-पट्, गड् बड भभा भभो, भच्चा भच्ची

१९– अनुकारवाची + तद्भव = अनुकारवाची—तद्भव, यथा–
वडवडवट द

२०– तद्भव + अनुकारवाची = तद्भव—अनुकारवाची, यथा–
अणवण

२१– अद्धतद्भव + अनुकारवाची = अद्ध तद्भव—अनुकारवाची यथा–
मूछ्वूछ

२२– देशज + अनुकारवाची = देशज—अनुकारवाची यथा–
लातघमूका

२३– देशज + देशज = देशज, यथा–
(क) कचोली समोसों
(ख) होडा होडी
(ग) सगों–सगा डरती डरतो
(घ) झगलो टोपी

२४– देशज + तद्भव = देशज—तद्भव, यथा–
सागो नणद ब्याओतर कुतडो गंसजाती

२५– देशज + अद्धतद्भव = देशज—अद्ध तद्भव यथा–
वापखावणी होडयो मारनी

२६– तद्भव + देशज = तद्भव—देशज यथा–
बासणों–समोसों

२७– अद्ध तत्सम + देशज = अद्धतत्सम—देशज यथा–
मीचों गु मारियों

२८– अद्ध तद्भव + विदेशी = (अंग्रेजी) = अद्ध तद्भव—विदेशी, यथा–
गलाधों टकमेठी

२९– देशज + विदेशी = देशज—विदेशी, यथा–
भरथियों–ग्लास

३०– विदेशी + तद्भव = विदेशी—तद्भव यथा–
गुलोंमभाई

३१– अर्द्ध तत्सम + विदेशी (अरबी) = अर्द्ध तत्सम – विदेशी, यथा –
लम्बावाल

३२– तद्‌भव + विदेशी=तद्‌भव-विदेशी, यथा –
सौंवगैसूरत,

३३– विदेशी+विदेशी=विदेशी, यथा—
मीयां बीबी मीनाबजार, मोटर कार

३४– अर्द्ध तद्‌भव+निरर्थक = अर्द्ध तद्‌भव निरर्थक यथा—
तलाइ बलाई, गाल वाल

३५– निरर्थक+निरर्थक = निरर्थक यथा —
झाबड झूली, छापड छूनों बड बटन्द

३६– देशज+निरर्थक=देशज निरर्थक यथा—
रगडी बगडी

मैंने उपर्युक्त विश्लेषण में वर्णनात्मक आधार पर बीकानेरी के उपलब्ध समस्त संज्ञा पदों को प्रस्तुत किया है। बीकानेरी में इनके अतिरिक्त अन्य समस्त संज्ञा पद भी उपलब्ध हो सकते हैं जिसके परिणाम स्वरूप उनके स्रोत मूलक विश्लेषण के अन्तर्गत अन्य और वर्ग भी प्रस्तुत किये जा सकते हैं। शब्दों की मूल प्रकृति का विश्लेषण वितरण एवं वैसादृश्य के आधार पर साम्य वैषम्य स्थापित करते हुए किया गया है। इनको कई स्रोतों में विभक्त किया गया है। यहां यह स्पष्ट कर देना अप्रासंगिक न होगा कि उक्त विवेचन स्रोत की ओर संकेत तो करता ही है समस्त रचना पदों के स्वरूप पर भी प्रकाश डालता है।

२ २ १ ५ समस्त-संज्ञा-पद रचना प्रक्रिया

२ २ १ ५ १ प्रथम पद संज्ञा वाले समस्त-संज्ञा-पद

इस शीर्षक के अन्तर्गत रूप रचना की दृष्टि से समस्त संज्ञा-पदों का विश्लेषण प्रस्तुत किया जा रहा है। इसलिए समस्त संज्ञा पदों की दोनों इकाइयों के व्याकरणिक रूप को केन्द्र बिन्दु के रूप में अपनाया गया है। वितरण एवं वसुन्ध्य' के आधार पर इस प्रकार के वर्गीकरण में निम्न उपलब्धियां हुई हैं। वर्गीकरण में प्रथम पद संज्ञा को केन्द्र बिन्दु बनाया गया है।

१ घरबार, फलफूल, सलालोनें देईन्देना, दूधपूत, ऊँरी ऊरी, खाँड भात, राटी बाटी, लूण मरच, कमलों टोपी, होली दीवाली,

उपर्युक्त समस्त संज्ञा पदो पर दृष्टि डालने से विदित होता है कि इन समस्त संज्ञा-पदो के दोनो पद संज्ञा है । सयोजक द्वारा दोना का मेल एव सयोजक का लोप हुआ है । यह द्विपद प्रधान समस्त संज्ञा पद हैं ।

उपर्युक्त समस्त संज्ञा पदो म दोना शब्दो की प्रधानता के कारण लिंग वचन के रूपो मे स्वतत्रता है । जहा पर दोना शब्दो म लिंग भेद है वहाँ क्रिया के साथ अन्वय करने पर क्रिया बहुवचन एव पुल्लिग होती है । इनके समीपी सघटको म परिवतन भी सम्भव है । कुछ इस प्रकार के भी समस्त संज्ञा पद हैं जो सयोजको द्वारा एक होते हुए भी अथ की दृष्टि से लाक्षणिकता को प्राप्त कर मुहावरो का रूप धारण कर लेते हैं । उनमे शब्द क्रम परिवतन असम्भव प्रतीत होता है । सामाजिक परम्परानुगत प्रयोग प्रवृत्ति के परिणाम स्वरूप भी शब्दो के क्रम म परिवतन सम्भव नही होता क्योकि इस प्रकार के शब्दो का नाद सौदर्य की दृष्टि से विशेष महत्त्व है ।

२ खटपट, लटपट रमक झमक आदि ।

उक्त सभी समस्त संज्ञा पद अनुकारवाची हैं । यद्यपि प्रथम पद के समीपी सघटको मे प्रथम इकाई नाम शब्द है पर यहा इसका प्रयोग ध्वनि अनुकरण के रूप मे हुआ है । द्वितीय समस्त संज्ञा पद की इकाईया अनुकरणात्मक हैं । इन समस्त पदो का सम्बन्ध सयोजक और' के द्वारा अभिव्यक्त हुआ है जो यहा पर लुप्त है ।

३ ४ बालगोठियो, दीनानाथ नंदलाल ,वेदव्यास भोलानाथ, रपचन्द आदि मे समस्त संज्ञा-पद व्यक्ति वाचक रूप धारण करते हैं । इनम कुछ पद विशेषण विशेष्य सबध बोध कराते हैं यथा भोलानाथ आदि । कुछ शब्द भेदक भेद्य सबध के बोधक हैं यथा बालगोठियों नदलाल आदि । ,वेदव्यास शब्द व्यक्ति वाची होते हुए भी 'और' सयोजक के द्वारा भिन्न इकाईयो से निर्मित समास बन सकता है । इस प्रकार विशेषण विशेष्य सम्बन्ध सूचक पद म शब्द १ + शब्द २ = शब्द ३ हैं । भेदक व भेद्य सम्बन्ध बोध कराते हुए समस्त पदों

की प्रथम इकाईयाँ विशेषण का बोध कराती हैं यद्यपि ये दोनो पद अपने मूल रूप म सना पद हैं तथापि दोनो ही पद विशेषण विशेष्य के सम्बन्ध का बोध कराते हैं । रूपचद शब्द की प्रथम इकाई विशेषण है । पर अथ की दृष्टि से य दोना श न्द मिल कर एक हो गये हैं जो व्यक्तिवाची सना का रूप धारण कर लते हैं।

५ वैकुण्ठ०वास सरग०बास

दोनों पद 'म' सम्बन्ध सूचक के द्वारा समस्तता को प्राप्त करते हैं, यहा पर इसका लोप हो गया हैं । प्रथम समस्त पद की प्रथम इकाई द्वितीय इकाई की मर्यादा बोध कराती है । अत इसका विश्लेषण विशेषण विशेष्य के अनुरूप है ।

६ मरतलोक, मायाजाल, रॉमदुवाई, गणपत, मनख जमारों,

सभी समस्त पद भेन्द भेद्य सम्ब घ बोधक हैं । जिन समासा मे द्वितीय पद प्रधान हैं उनके लिंग वचन का निर्धारण एव क्रिया का सम्बन्ध द्वितीय पद के अनुसार ही होता है। इस प्रकार के योग को व्यधिकरण के नाम से अभिहित किया है ।

७ कोडी का डी मनख मनख लुगायाँ लुगायाँ आदि ।

उपयु क्त समस्त पद द्विरुक्ति प्रधान हैं । अत प्रथम पद की प्रधानता है । इकाई सज्ञा होते हुए भी विशेषण का काम करती है अन्य सभी प्रकार के सम्बन्ध प्रथम पद की प्रथम इकाई के अनुसार होते हैं ।

८ मोटरवार आदि ।

द्विरुक्ति प्रधान समस्त संज्ञा पद होते हुए भी ध्वनि विकार उत्पन्न हुआ है । अथ म अतिशयता एव विस्तार के आवेग की गति का बोध होता है । अन्य सभी प्रकार के सबधा का विश्लेषण द्विरुक्ति प्रधान समस्त पदा के अनुरूप किया जा सकता है ।

९ हाडा-होडी, भमा भमी, रोल गदोल आदि ।

दोनो पद सज्ञा वाची होते हुए भी अन्तिम पद निरर्थकता को प्राप्त कर लेता है अत इसके सभी प्रकार के सम्बन्धों का विश्लेषण द्विरुक्ति प्रधान समस्त पदों के अनुसार अर्जित किया जा सकता है।

(ख) सज्ञा+कर्तृ वाचक सज्ञा

रंगरसियाँ गऊ घाती मनस मारणाँ आदि।

उक्त समस्त सज्ञा पद भेद्य भेदक सम्बन्ध बोधक हैं। रूप रचना की दृष्टि से इनका सम्बन्ध बोध इस प्रकार व्यक्त किया जा सकता है—शब्द १+ शब्द २ =शब्द १ २। व्याकरणिक सबध बोध कराने के सन्दर्भ में इस सूत्र का परिवर्तन शब्द १+ शब्द २ = शब्द २ होगा।

(ग) सज्ञा+कृदन्त

१ जगतारण, गरधारी राँड व्यावणा बापखावणो

इस वर्ग के सभी पद भेद्य भेदक सबध बोधक हैं। इनका व्युत्पन्न रूप कर्तृ वाचक है। रूपात्मक दृष्टि से इनका सम्बन्ध शब्द १+शब्द २=शब्द १ से व्यक्त किया जा सकता है। व्याकरणिक सम्बन्ध बोध कराते समय इस सूत्र का रूप दूसरे प्रकार का होगा। कहीं कहीं पर तो यह द्वितीय पद प्रधान भी लक्षित होता है।

२ हथलेवो देवभावना आदि।

इस वर्ग के समस्त सज्ञा पद कर्तृ वाचक सज्ञा का रूप धारण कर सामान्य सज्ञा का रूप धारण करते हैं। सभी प्रकार के सम्बन्धों का विश्लेषण विशेष्य वाची समस्त पदों के अनुरूप व्यक्त किया जा सकता है।

(घ) सज्ञा+विशेषण

घनस्याम

इस वर्ग में सज्ञा पद विशेषण विशेष्य सबध बोधक है किन्तु विशेष्य विशेषण सबध बोध कराने के कारण पृथक वर्ग में रखे गये हैं।

(ड) सना+निरथक शब्द

१ रानी-बावडी, पोंणी वाँणी पोथी बोथी

य द्विरुक्त प्रधान पद हैं जिसका द्वितीय पद रूप एव अथ दाना दृष्टिया स निरथक है ।

२ धक्का धक्की

ध्वन्यात्मकता के कारण निरथकता की व्याप्ति हा गई है ।

(च) सज्ञा+अव्यय

हेठाँ-बार (बाहर) आदि ।

इस वग म भेद्य भेदक सबध बोधक समस्त सज्ञा पद की रचना हुई है ।

२ २ १ ५ २ प्रथम पद विशेषण वाले समस्त-सज्ञा-पद

रूपात्मक दृष्टि से जिन समस्त पदों का यहाँ विश्लेषण किया जा रहा है उनका प्रथम पद विशेषण है तथा द्वितीय पद इतर व्याकरणिक रूप लिए हुए हैं । इतर व्याकरणिक रूपा के योग से समस्त पद का प्रयोग सज्ञा रूप म हुआ है । अत जो समस्त पद विशेषण का रूप धारण किय हुए हैं यहाँ उनका प्रयोग सज्ञावाची पद मे हुआ है । इसलिए इन्हें इस वग में स्थान दिया है । इनका सबध निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया गया है —

विशेषण+सज्ञा = सज्ञा

एकाँनी, दोवाँनी, चउन्नीयाँ, चाँवाराँ

उक्त समस्त पदो म प्रयुक्त शब्दों मे विशेषण विशेष्य सबध हैं किन्तु पद सज्ञा बने हुए हैं। केवल एक या दो उदाहरण देकर हम स्पष्ट कर सकते हैं ।

'एकाँनी'

यहाँ एक' विशेषण है और 'आँनी सज्ञा परन्तु एकाँनी' मुद्रा

विशेष के लिए प्रयुक्त होने वाला शब्द सज्ञा है । (आजकल इस शब्द का प्रयोग भी कम प्रचलित है क्योंकि यह मुद्रा प्रयोग म नही आती। अब प्राय बोली मे 'दसपाई' (दस नये पैसे) शब्द का प्रयोग प्रचलित है) बउरूपीयो ' में बउ (बहु) रूप (सूरत शक्ल) का वाचक है। इसम एक पद विशेषण व दूसरा विशेष्य है पर 'बउरूपीयो" बीकानेरी मे एक व्यक्ति विशेष होता है जो अनेक वेश व रूप धारण करता है तथा उत्सवो पर मनोरजन का साधन बनता है। यह शब्द चालाक का भी वाचक बन रहा है । इसी प्रकार अन्य पद भी विशेषण विशेष्य की परिधि म अपने समस्त रूप म सज्ञा ही बने हुए हैं।

⊖ ⊖

अध्याय/३

सर्वनाम–पद

३ १ सामान्य विवेचन

सवनाम उन विकारी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर सम्बन्ध से किसी भी सज्ञा के बदले म आता है ।[1]

जो सबके नाम बन जाते हैं उन्हें 'सवनाम' कहते हैं। मैं, तुम, यह, वह आदि शब्द 'सवनाम' हैं, ये किसी एक ही मे सकेतित नही हैं ।[2]

व्याकरण शास्त्र मे नाम-स्वतन्त्र रूपांशो का विभाजन किया गया है। नाम' शब्दो की व्याप्ति मर्यादित करने एव इतर स्थानापन्न रहने वाले स्वतन्त्र रूपांशो को प्रतिनिधित्व के अनुसार पृथक पृथक वर्गों मे स्थान दिया गया है। इसलिए जो भी शब्द स्वतन्त्र रूपांशो के स्थानापन्न हैं वे सभी इसी वर्ग के अतगत आ जाते हैं। पुनर्विभाजन का कारण भेदकता बोधक सीमा स्थानापन्नता है। इस प्रकार उन स्थानापन्न रूपांशों का प्रयोग भी होने लगा जो केवल नाम रूपो के स्थान पर पुनरुक्ति के द्वारा होने वाले दोषों और भाषा की शिथिलता व हीनता दूर करने मे सक्षम थे। ये नाम स्वतन्त्र रूपांशो के सर्वाधित और उसी के स्थानापन्न होने के कारण सहज ही सवनाम की अभिधा पा गये।

१— श्री कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण, पृ० ७२

२— किशोरीदास वाजपेयी शब्दानुशासन, पृ० १७३

४ प्रश्न वाचक (कूण)
५ अनिश्चय वाचक (काई)
६ आदर वाचक एव निज वाचक (आप)
७ सव वाचक (सब)

३– तृतीय वग सावनामिक समस्त पद (हू यू, म्हे थे)

३ २ १ प्रथम वर्ग पुरुष वाचक सवनाम

अय आधुनिक भारतीय आय भाषाओ के समान बीकानेरी मे भी पुरुष वाची सवनामो के केवल दो ही रूप उपलब्ध होते हैं —

१ उत्तम पुरुष
२ मध्यम पुरुष

अय पुरुष म निकटवर्ती एवं दूरवर्ती निश्चय वाचक सर्वनाम ही प्रयुक्त होते हैं।

३ २ १ १ उत्तम पुरुष

हू बीकानेरी म उत्तम पुरुष सर्वनाम के एक वचन का अविकारी रूप है। बहुवचन म इसके दो रूप उपलब्ध होते हैं —

१ म्हे' श्रोतृ निरपेक्ष
२ आपों श्रोतृ सापेक्ष

बीकानेरी मे प्रयुक्त होने वाले उपलब्ध उत्तम पुरुष सवनामो की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है–

	एकवचन	बहुवचन (श्रोतृ निरपेक्ष)	बहुवचन (श्रोतृ सापेक्ष)
कर्ता	हू म्हे	म्हे म्हां	आपों
कम	मनें	म्हां नें	आपां नें
करण	म्हे सू	म्हां सू	आपों सू

सम्प्रदान	म्हारैं	म्हाँरैं	माँरैं
अपादान	म्हँनूं	म्हाँनूं	माँनूं
सम्बन्ध	म्हारी, रो रा	म्हाँरी म्हाँरा	माँरी माँरो माँरा
अधिकरण	म्हँमें	म्हाँमें	माँमें

उत्तम पुरुष सर्वनाम के उपर्युक्त रूपों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सर्वनामों के विभक्ति प्रयोग की दृष्टि से दो रूप उपलब्ध होते हैं—

१– मूल रूप
२– विकारी रूप

मूलरूप से मेरा अभिप्राय उन सार्वनामिक रूपों से है जो वाक्यान्तर्गत किसी परसर्ग को ग्रहण नहीं करते हैं एवं विकारी रूप से तात्पर्य उन सार्वनामिक रूपों से है जो वाक्य में अन्य परसर्ग ग्रहण करते हैं। इस आधार पर उत्तम पुरुष सर्वनामों के मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

		एकवचन	बहुवचन
(१)	(क) मूल रूप	हूँ	म्हे
	(ख) विकारी रूप	म्हैं	म्हाँ
(२)	(क) मू० आ० वि० प्र०	/ऊ/	/ए/
	(ख) ति० आ० वि० प्र०	/ एँ-अँ /	/आँ/

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांशों के विश्लेषण के परिणाम स्वरूप हमें विदित होगा कि इनके अन्तर्गत /ऊ/ /म् अँ/, /ए/, /आ/, आदि स्वरों का योग स्पष्ट लक्षित होता है। इन प्रत्ययों के विसर्जन के उपरान्त हमारे समक्ष उत्तम पुरुष सर्वनाम का केन्द्रक रूप / ह / सामने आता है। अतः / ह / ही केन्द्रक रूप है। उत्तम पुरुष वाचक सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांशों में /ऊ/ एवं /ए/ मू आ वि प्र है एवं /एँ/ एवं /आँ/ ति आ वि प्र है। मूल एवं तिर्यक आधार वि० प्रत्ययों में अनुनासिकता का आगमन /म्/ ध्वनि के कारण हुआ है। कभी कभी दीर्घीकरण या ह्रस्व करण की प्रवृत्ति भी यहाँ पर कार्य करती

हुई दृष्टिगोचर होती है। बीकानेरी मे भी आदर सूचकता का बोध कराने हेतु एक वचन में ही बहुवचन के रूपों का प्रयोग होता है ।

उपयुक्त सवनामो (श्रोतृ निरपेक्ष) के रूपो पर दृष्टिपात करें तो स्पष्ट होगा कि कर्ता कारक एक वचन 'हू' के अतिरिक्त शेष सभी रूपों म 'म' विद्यमान है। अत यदि यह कल्पना की जाय कि किसी समय बोली मे कर्त्ता कारक एक वचन का रूप 'म्हूं' रहा होगा (जैसा कि मारवाडी की अन्य बोलियों मे है) और हू पर बल अधिक होने से 'म्' का लोप हो गया होगा तो उत्तम पुरुष सवनाम का केन्द्रक रूप / म् / भी माना जा सकता है ।

उत्तम पुरुष (श्रोतृ सापेक्ष) रूप म भी उक्त प्रत्ययो का ही योग लक्षित होता है। अत इन प्रत्ययो का विसजन करने के उपरान्त हमारे समक्ष 'आप्' अवशिष्ट रहता है। यदि / प् / को श्रोतृ सापेक्ष बोधक मानलें तो इसका केन्द्रक रूप / आ / स्वीकार किया जा सकता है ।

३ २ १ २ मध्यम पुरुष

मध्यम पुरुष म प्रयुक्त सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपों के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं–

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	तू, थू तें थें	थे थों
कर्म	तनें थनें	थोंनें
करण	थेंसूं	थोंसू
सम्प्रदान	थारें	थोंरें
अपादान	थें सू	थोसू
सम्बन्ध	थारो थारी, थारा	थों रो, थोंरी, थोंरा
अधिकरण	तेंमें थेंमें	थोंमें

मध्यम पुरुष सवनाम के मूल एवं विकारी रूपो व प्रत्ययो का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

		एकवचन	बहुवचन
(१)	(क) मूल रूप	तू, थू	थे

(ग) विकारी रूप   मे`ने`   मां`

(२) (क) मू० आ० वि० प्र०   /ऊ/   /ए/

(ग) नि० आ० वि० प्र०   /[illegible]`अँ/   /आँ/

उपर्युक्त सार्वनामिक रूपों के प्रयोगों पर दृष्टिपात करने पर विदित होगा कि इन रूपों में भी उत्तम पुरुष के रूपों के अनुरूप ही प्रत्ययों का योग मिलता है। अतः इनके विभाजन के उपरान्त हमारे सामने केवल /त/, /थ/ ही सार्वनामिक केन्द्रक रूप उपलब्ध होता है। /थ/ /त/ का ही महाप्राण उच्चरित रूप है। अतः मध्यम पुरुष का सार्वनामिक केन्द्रक रूप /त/ ही माना जा सकता है। मूल एवं विकारी आ० वि० प्र० भी उत्तम पुरुष के अनुरूप ही है अतः पुनरुक्ति नहीं की गई है। मध्यम पुरुष सर्वनामों के मूल एवं विकारी आधार विधायक प्रत्ययों में भी अनुनासिकता प्रतिस्थापित है। इसका मुख्य कारण उत्तम पुरुष सर्वनामों का अनुकरण एवं सरलीकरण की प्रवृत्ति है।

३ २ २ द्वितीय वर्ग-संकेतवाचक (निश्चय वाचक) सर्वनाम

हिन्दी में अन्य पुरुष का काम निश्चय वाचक सर्वनामों से लिया जाता है।[1] बीकानेरी में भी अन्य पुरुष का काम निश्चयवाचक सर्वनामों से लिया जाता है तथा निश्चय वाचक सर्वनामों के दो ही रूप उपलब्ध होते हैं।

(१) निकटवर्ती   आँ

(२) दूरवर्ती   वाँ

३ २ २ १ निकटवर्ती

बीकानेरी में निकटवर्ती सर्वनाम 'ओ' के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	ओ` (पु०) आ (स्त्री०) ईय	अे ईयो
कर्म	ईनै` ईयेनै	ईयां नै
करण	ईसूं ईयेंसूं	ईयां सूं
सम्प्रदान	ईरैं ईयेंरै	ईयांरैं
अपादान	ईसूं, ईयेंसूं	ईयोंसूं

१— धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास पृ० २०३

सम्बन्ध	ईरो॑ (पु०) ईरी, (स्त्री०), ईरा	ईयाँरो॑, ईयाँरी, (स्त्री०)
	ईयॅरो॑, ईयॅरी, ईयॅरा	ईयाँरा
अधिकरण	ईमें, ईयॅमें	ईयाँमें

३ २ २ २ दूरवर्ती

बीकानेरी में दूरवर्ती सर्वनाम 'बो' के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं —

	एक वचन	बहुवचन
कर्ता	बो॑ (पु०) बा (स्त्री०)	बे, बाँ
कर्म	बेनें	बाँनें
करण	बॅसूं	बोंसूं
सम्प्रदान	बॅरें	बाँरें
अपादान	बॅसूं	बाँसूं
सम्बन्ध	बॅरो॑ बॅरी, बॅरा	बोंरो॑ बाँरी, बाँरा
अधिकरण	बॅमें	बोंमें

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपों के अन्तर्गत संयुक्त कारकों का बोध कराने वाले प्रत्ययों के विसर्जन के उपरान्त दूरवर्ती एवं निकटवर्ती सर्वनामों के मूल एवं विकारी रूपों एवं प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

निकटवर्ती

	एक वचन	बहुवचन
१ मूल रूप	ओ॑ (पु०) आ (स्त्री०)	अ
२ विकारी रूप	ईयॅ	ईयाँ

दूरवर्ती

	एकवचन	बहुवचन
१ मूल रूप	बो॑ (पु०) बा (स्त्री०)	बे
२ विकारी रूप	बॅ	बाँ

१ मू०आ० वि० प्र०	/ओँ/ (पु०) /-आ/ (स्त्री०)	/-ए/
२ ति० आ० वि० प्र०	/एँ/	/ओँ

निकटवर्ती सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांशो के विकारी रूपों का अन्वेषण करने पर विदित होगा कि ये रूपांश /ई/ के साथ लिंग-वचन प्रत्यय /य/ के संयोग से निष्पन्न हुए हैं। रूपों मे /ई/ से परे स्वर होने से बीच मे /य/ श्रुति का आगम हुआ है। /य/ के विसर्जन से विकारी रूपो में हमारे समक्ष /ई/ अवशिष्ट रहता है। अत /ई/ को यदि हम तिर्यक विधायक स्वीकार करलें तो मूल रूप म निकटवर्ती सार्वनामिक रूपांशो का केन्द्रक रूप /अ/ ही अवशिष्ट रहता है। अत /अ/ केन्द्रक रूप म स्वीकार किया जा सकता है।

दूरवर्ती सार्वनामिक रूपांशो म /ओँ/, /आ/ /एँ/, /ए/ /ओँ/ आदि स्वरों का संयोग मूल एवं विकारी रूपो के साथ हुआ है। इनके विसर्जन के उपरान्त हमारे समक्ष केवल /व्/ अवशिष्ट रहता है। अत दूरवर्ती सार्वनामिक केन्द्रक रूप /व्/ स्वीकार किया जा सकता है।

निकटवर्ती एव दूरवर्ती दोनो ही सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांशो म /-ओँ/ /-आ/ /-आ/, /ए/ मू आ वि प्र एव /एँ/ एव /ओँ/ ति आ वि प्रत्ययो का प्रयोग सम रूप से हुआ है।

३ २ २ ३ द्वितीय वर्ग सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

बीकानेरी मे सम्बन्ध वाचक सर्वनामो के उपलब्ध रूपो की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है — -

	पुल्लिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	जको जकै	जका जकै, जको	जकी	जक्यो
कर्म	जकैनै	जकानै	जकीनै	जक्योनै
करण	जकैसू	जकोंसू	जकीसू	जक्या [illegible]
सम्प्रदान	जकैरै	जकोंरै	जकीरै	जक्योरै
अपादान	जकैसू	जकोंसू	जकीसू	जक्यांसू
सम्बन्ध	जकैरो	जकोंरा	जकीरी	जक्यांरी
अधिकरण	जकैमे	जकांमे	जकीमे	जक्योमे

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम के उपलब्ध रूपों के कारक प्रत्ययों को वियुक्त करने पर इसके मूल व विकारी रूपों एवं प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

	एकवचन		बहुवचन	
(१) मूल रूप	जको (पु०)	जकी (स्त्री०)	जके (पु०)	जकयों (स्त्री०)
(२) विकारी रूप	जके		जकों (पु०)	जकयों (स्त्री०)
(१) मू०आ०वि०प्र०	/-ओ/(पु०)	/-आ/ (स्त्री०)	/ ए/ (पु०)	/ ओं/स्त्री०
(२) वि०आ०वि०प्र०	/ एँ/		/ ओं/	

सम्बन्ध वाचक सर्वनामों के उक्त रूपों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि इनके अन्तर्गत /-आ/, / ई/, /-एँ/, / ए/, / ओं/, /-ओं/ आबद्ध अंशों का योग मूल व विकारी रूपों में हुआ है एवं स्त्रीलिंग बहुवचन में ओं से पूर्व /-य/ श्रुति का आगम हुआ है। इनके विसर्जन के उपरांत सम्बन्ध बोधक सार्वनामिक केन्द्रक रूप /जक/ अवशिष्ट रहता है। /क/ को सम्बन्ध बोधक प्रत्यय की संज्ञा दी जा सकती है। अतः सम्बन्ध बोधक सर्वनाम का केन्द्रक रूप /ज/ माना जा सकता है। सम्बन्ध वाचक सर्वनाम में /-ओ/ (पु०) / ई/ (स्त्री०) एवं / ए/ /-आ/ (बहु०) मू आ वि प्रत्यय है एवं / एँ/, व /-ओं/ /-ओं/ वि आ वि प्रत्यय हैं।

सूचना –

डा० कन्हैया लाल शर्मा ने सम्बन्ध वाचक सर्वनाम 'जको' में 'ज' को केन्द्रक रूप मानकर 'क' को स्वार्थक प्रत्यय माना है। इसका कारण बताते इन्होंने लिखा है कि राजस्थानी की अन्य अधिकांश बोलियों में जो, जें जी, आदि रूप ही उपलब्ध होते हैं केवल बीकानेरी में ही यह /क/ उपलब्ध होता है अतः /क/ स्वार्थक प्रत्यय ही माना जायगा।[1]

३ २ २ ४ नित्य सम्बन्ध वाचक सर्वनाम

बीकानेरी में नित्य सम्बन्ध वाचक सर्वनाम का स्वतंत्र रूप उपलब्ध

१— डॉ० कन्हैयालाल शर्मा वीर सतसई की भाषा पृ० २१

नहीं होता उसके स्थान पर दूरवर्ती निश्चय वाचक सर्वनाम 'वो' का ही प्रयोग उपलब्ध होता है। यथा –

'जकों आयो थों वों गयो'
'जो आया था वह गया
जकों पढ़सी वों गुण पासी
'जो पढ़ेगा वह गुण पायगा

३ ७. ८ ४ द्वितीय वर्ग प्रश्नवाचक सर्वनाम

बीकानेरी में प्रश्नवाचक सर्वनाम के रूप में 'कूण' रूप उपलब्ध होता है। इसके अतिरिक्त बोली में कई क्या क्यों कयू आदि रूप उपलब्ध होते हैं।

कूण रूप की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है–

'कूण'

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कूण	कूण
कर्म	केनें	केनें
करण	केंसू	केंसू
सम्प्रदान	केरें	केरें
अपादान	केंसू	केंसू
सम्बन्ध	केंरो, केरी (स्त्री०)	केंरा, रो, री
अधिकरण	केंमें	केंमें

उपर्युक्त प्रश्न वाचक सर्वनाम के उपलब्ध रूपों के आधार पर मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

	एकवचन	बहुवचन
१ मूल रूप	कूण	–
२ विकारी रूप	केंण	–

	एकवचन	बहुवचन
१ मू० आ० वि० प्र०	/ऊ/	—
२ ति० आ० वि० प्र०	/ए॑/, /अे/	—

उपयुक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपों में ऊ, ए॑, अे आदि प्रत्ययों का योग हुआ है। इनके विसर्जन के उपरान्त हमारे समक्ष 'कण्' अवशिष्ट रहता है। यदि 'ण' को व्यक्ति बोधक मान कर इसका विसर्जन कर दिया जाय तो हमारे समक्ष /क/ केन्द्रक रूप में रह जाता है। इस प्रकार क् को प्रश्नवाचक सार्वनामिक केन्द्रक रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त बोली में कई,क्या, क्यो क्यू, आदि रूप भी उपलब्ध होते हैं जो स्पष्टतः हिन्दी के प्रश्नवाचक सर्वनाम क्या के ही विकृत व विकसित रूप हैं। 'कई' रूप बोली में वस्तु वाचक सर्वनाम के रूप में प्रयुक्त होता है।

प्रश्नवाचक सर्वनामों में /-ऊ/ मूल आधार विधायक प्रत्यय एवं /-ऐ/ अथवा अे ति० आ० वि० प्र० का प्रयोग हुआ है।

३ २ २ ६ द्वितीय वर्ग अनिश्चय वाचक सर्वनाम

बीकानेरी में प्रयुक्त अनिश्चय-वाचक सर्वनामों के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं।

'कोई'

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	कोई	कोई
कर्म	कईनें	कईनें
करण	कईसू	कईसू
सम्प्रदान	कईरें	कईरें
अपादान	कईसू	कईसू
सम्बन्ध	कईरों, रा री	कईरों रा, री
अधिकरण	कईमें	कईमें

इनके कारक बोधक प्रत्ययो के विसर्जन के उपरान्त उपलब्ध मूल एवं विकारी रूपो म प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है ।

		एकवचन	बहुवचन
(१)	(क) मूल रूप	कोइ	—
	(ख) विकारी रूप	कई	—
(२)	(क) मू०आ० वि प्र० / –ओ/		—
	(ख) ति० आ० वि० प्र० /– अ /		—

अनिश्चय वाचक सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांशो का विश्लेषण करने के उपरान्त हम / ओ/ को व्यक्ति बोधक एवं /अ/ को नियत विधायक के रूप म स्वीकार कर सकते हैं । इनके विसर्जन के उपरान्त हमें / क् / अनिश्चय वाचक सार्वनामिक केन्द्रक रूप उपलब्ध होता है । मू० एवं ति० आ० वि० प्र० के रूप म /-ओ/ एवं /–अ/ का योग क्रमश दृष्टिगत होता है।

अनिश्चय वाचक सर्वनामो पर दृष्टिपात करने पर विदित होगा कि इसके मूल रूप मे हिन्दी के समान /कोई/ रूप का प्रयोग हुआ है पर विकारी रूप मे हिन्दी के समान /किसी/ का प्रयोग नहीं हुआ है इसका मुख्य कारण यह है कि दोनों मे अनिश्चय वाचक सर्वनाम के विकारी रूपो के दो रूप उपलब्ध हैं– /कई,/ कोई/ पर अधिक प्रचलित 'कई' ही है । यदि /कोई/ रूप को ही विकारी रूप मे स्वीकार किया जाय तो मूल एवं विकारी रूपो मे भेदकता हेतु / ०/ विभक्ति की कल्पना करनी होगी ।

३ २ २ ७ द्वितीय वर्ग आदर वाचक एवं निज वाचक सर्वनाम

बीकानेरी मे आदर वाचक सर्वनाम आप के उपलब्ध रूप इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

'आप'

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	आप	आप

कर्म	आपने	आपने
करण	आपसू	आपसू
सम्प्रदान	आपरे	आपरे
अपादान	आपसू	आपसू
सम्बन्ध	आपरो, री, रा	आपरो, री, रा
अधिकरण	आपमें	आपमें

उक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपोंों पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि आदर वाचक सर्वनाम के मूल एवं विकारी दोनों रूपों के एकवचन एवं बहुवचन में 'आप' रूप ही प्रयुक्त हुआ है। विकारी 'आपने' 'आपसू, आपरो' आदि रूपों में मूल रूप 'आप' का ही प्रयोग हुआ है, जिसमें ने, सू, रो आदि परसर्ग है। अतः इनके स्वरूप निर्धारण हेतु / ० / तिर्यक विभक्ति की कल्पना की जा सकती है। तत्परिणाम स्वरूप हमें ये विकारी एवं मूल रूप उपलब्ध हुए हैं—

		एकवचन	बहुवचन
(१)	(क) मूल रूप	आप	आप
	(ख) विकारी रूप	आप	आप
(२)	मू० एवं ति० आ० वि० प्र०		। -० ।

इन रूपों के विश्लेषण के उपरान्त हमें /आ/ केन्द्र रूप में उपलब्ध होता है एवं / प / को आदर बोधक की संज्ञा दी जा सकती है। बीकानेरी में निजवाचक सर्वनाम के रूप में 'आप' का ही प्रयोग उपलब्ध होता है। परन्तु 'आप' का बोली में स्वतंत्र प्रयोग उपलब्ध नहीं होता है। आप का प्रयोग सदा सर्वत्र पुरुष वाचक सर्वनामों(उत्तम मध्यम व अन्य पुरुष)के साथही होता है। यथा हूं आप म्हें आप म्हाआप म्हेआप मनें आपनें,आदि। निजवाचकता का बोध उत्तम एवं मध्यम पुरुष के रूपों के प्रयोग से ही हो जाता है। यथा थू थारो कांम करले =तुम अपना काय करलो। हूं म्हारो कांम करलीस=मैं अपना काम करलूं गा।निज वाचकता के बोध के लिये बोली में विदेशी शब्द 'खुद' का प्रयोग भी उपलब्ध होता है जिसके रूप आप के समान ही चलते हैं।

३ २ २ ८ द्वितीय वर्ग-सर्ववाचक सर्वनाम

सर्ववाचक सर्वनाम 'सब' की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है –

'सब'

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	सब	सब
कर्म	सबनें	सबनें
करण	सबसूं	सबसूं
सम्प्रदान	सबरै	सबरै
अपादान	सबसूं	सबसूं
सम्बन्ध	सबरो, रा, री,	सबरों, रा, री,
अधिकरण	सबमें	सबमें

उक्त सभी सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांग सर्ववाचकता का अर्थ बोध कराते हैं। विश्लेषण के आधार पर कहा जा सकता है कि 'सब' में /ब/ आबद्ध अंग का तिर्यक विधायक प्रत्यय के रूप में योग विद्यमान हैं। तिर्यक रूपों को दूर करने पर हमारे समक्ष केवल /स/, रूप अवशिष्ट रहता है। इस प्रकार सर्ववाचक स्वतन्त्र रूपांगों का मूल केन्द्रक रूप /स/ स्वीकार किया जा सकता है। इस वर्ग सार्वनामिक सर्वनाम के मूल एवं विकारी रूपों में अभेदकता दृष्टिगत होती है अतः इनकी भेदकता सिद्धि हेतु /०/ विभक्ति का योग स्वीकार किया जा सकता है।

३.२.३ तृतीय वर्ग सार्वनामिक समस्त-पद

बीकानेरी में सार्वनामिक पद अपने समस्त पद के रूप में भी उपलब्ध होते हैं। यह सामासिकता सार्वनामिक पदों के ही समीपी संघटकों के रूप में विद्यमान हैं। उपलब्ध सार्वनामिक समस्त पद इस प्रकार हैं।

म्हे थे म्हां थां हूं तूं ईमें-बेमें म्हारी थारी म्हारें थारें, थोंरो म्हांरां थोंसूं म्हांसूं आं-वां।

उक्त सवनाम सघटक पदो से समस्त पद सर्वनामो की संरचना हुई है इनके प्रथम तथा द्वितीय सघटक भी सवनाम ही हैं। इस सृष्टि मे सावनामिक के अंतगत निर्विभक्तिक एव सविभक्तिक रूपों का प्रयोग हुआ है । कही कहीं इने साथ भेदक भाव सूचक आबद्ध रूपों का प्रयोग भी देखने को मिलता है,यथा

म्हारो-थारो, म्हारे-थारे आदि । कहीं-कहीं इतर कारक सम्बन्ध बोध कराने वाले आबद्ध अ शो सहित पदो का योग समीपी सघटक के रूप में समस्त सृष्टि के अंतर्गत हुआ है। यथा-ईनें-बेंनें

उपयु क्त सामासिक पदों में समस्त-पद एव समीपी सघटको के रूपात्मक सम्बन्ध को दृष्टि म रखा जाय तो प्रतीत होगा कि समीपी सघटक भी सवनाम हैं व उपलब्ध सृष्टि भी हमारे समक्ष सवनाम समस्त पद ही है ।

उपयु क्त सवनाम समीपी सघटक पदो का सम्बन्ध सयोजक अव्यय और/ द्वारा अभिव्यक्त किया गया है जो यहा पर लुप्त है ।

यौगिक विधान

उपयु क्त सावनामिक समस्त पदो के यौगिक विधान पर दृष्टिपात करने से विदित होता है कि सावनामिक समस्त पदो का निर्माण सयोजक अव्यय के लोप के परिणाम स्वरूप हुआ है। इसलिये इनम सश्लिष्टता का व्यापारक विकार हमें देखने को नही मिलता । जहा पर दोनो समीपी सघटको की पृथक पृथक् सत्ता दृष्टिगत होती है वहा पर प्राय सभी समस्त-पद विश्लिष्ट है ।

व्याकरणिक रूप एव प्रयोग की दृष्टि मे भी ये पद सवनाम स्वतंत्र रूपांश के रूप मे प्रयुक्त हुए हैं । ये पद अपना सावनामिक अ श खोकर सज्ञा का स्वरूप धारण करने में भी सक्षम हैं। इसलिये रूपात्मक दृष्टि से इन्हें इस प्रकार के प्रयोगो म अन्य पद सज्ञा स्वतंत्र रूपांश के अन्तगत स्वीकार किया जा सकता हैं यद्यपि इन पदो का प्रयोग अपने मूल रूप में भी बीकानेरी मे उपलब्ध होता हैं । बीकानेरी सावनामिक समस्त पदो की विशेषता है कि उनका व्याकरणिक रूप निर्धारण प्रयोग एव प्रकरण पर ही आधृत है । इस हेतु समस्त पदो के अंत म व्युत्पादक / ०/ विभक्ति के प्रयोग द्वारा भेदक रखा खोजी जा सकती है तथा -यु-

त्पादक प्रत्यय सार्वनामिक समस्त पद रूपांश संज्ञा स्वतंत्र रूपांश के बीच में लाया जा सकता है।

सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों की द्विरुक्ति का भी समस्त पद रूप में विशेष महत्व है। चौरासेगी में उत्पन्न होने वाले द्विरुक्ति के विभिन्न रूप निम्नलिखित हैं—

१—हइह, तूइतू थूइथू म्हेंइम्हें, म्हेइम्हे
२— वा इवा आंइआं,
३— मई-मई थूण थूण कोई कोई अकों-अकों
४— तू-त थ-थू हू-हू
१ २— यह द्विरुक्ति पैयनता बोधक है।
३— यह द्विरुक्ति समतार्थक शब्दों में भेदकता का बोध कराती है।
४— इस वर्ग में द्विरुक्ति दृढ़ निश्चय व आदेश का बोध कराती है।

उक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों के अतिरिक्त बोली में आगलो, फलाँणों ढीकड़ों आदि विविध रूप भी उपलब्ध होते हैं।

उपर्युक्त सार्वनामिक स्वतंत्र रूपांशों के विश्लेषण के आधार पर हम निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत कर सकते हैं—

१— सार्वनामिक बद्ध रूप निम्न लिखित हैं—

१— प्रथम वर्ग पुरुष वाचक सर्वनाम—

	(१) उत्तम पुरुष	/ हैं / / म् /
	(२) मध्यम पुरुष	/ त /

२— द्वितीय वर्ग (१) संकेत वाचक सर्वनाम—

	(१) निकटवर्ती	/ अ /
	(२) दूरवर्ती	/ व /
(२) सम्बन्ध वाचक सर्वनाम		/ ज् /
(३) नित्यसम्बन्ध वाचक सर्वनाम		—
(४) प्रश्न वाचक सर्वनाम		/ क् /
(५) अनिश्चय वाचक सर्वनाम		/ क् /

(६) आदर वाचक एवं निजवाचक सर्वनाम /अ/

(७) सर्ववाचक सर्वनाम /स/

२— ।१ । उपर्युक्त सभी सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपों के मूल एवं विकारी रूपों व प्रत्ययों का निष्कर्ष रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

मूल एवं विकारी रूप	मू० आ० वि० प्र० एकवचन	मू० आ० वि० प्र० बहुवचन	ति० आ० वि० प्र० एकवचन	ति० आ० वि० प्र० बहुवचन
१— उत्तम पुरुष				
हूं म्हें म्हे म्हों	/ऊं/	/ए/	/एँ अँ/	/-ओं/
२— मध्यम पुरुष—				
तू थू तें थें थे थां	/ऊ/	/ए/	/-एँ,-अँ/	/-ओं/
३— निकट एवं दूरवर्ती—				
ओ आ इयें अ ,एँ,ईयो /ओं/ वा वा वे वं वों	/आ/	/ए/	/एँ अँ/	/ओं/
४— सम्बन्ध वाचक—				
जकां, जकें, जको जके, जका जकों	/-आं/(पु०), /ई/(स्त्री०),	/ए/ आ/ /ओं/(स्त्री०)	/एँ-अँ,/	/-ओं/
५— प्रश्न वाचक—				
कूण केण	/ऊ/	/ऊ/	/एँ अँ/	/एँ अँ/
६— अनिश्चय वाचक—				
कोई कई	/आ/	/ओ/	/-अ/	/अ/
७— आदर व निजवाचक आप	/०/	/०/	/०/	/०/
८ — सर्व वाचक सब	/०/	/०/	/०/	/०/

३— इनके लिंग-वचन एवं कारक आदि का निर्धारण जिन रूपों के ये स्थानापन्न हैं उन्हीं के अनुरूप किया जा सकता है।

४— समस्त पद के रूप में सर्वनामों का प्रयोग सनावत एवं द्विरुक्ति मूलक प्रयोग सार्वनामिक रूप में हुआ है।

अध्याय/४

विशेषण–पद

४ १ सामान्य विवेचन

जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है, उसे विशेषण कहते हैं।[1]

विशेषण पद वाक्यों में अपने विशेष्य की विशेषता को प्रकट करते हैं। वाक्यान्तगत विशेष्य पद संज्ञा भी हो सकता है और सर्वनाम भी। दूसरे शब्दों में विशेषण पदों का वाक्यगत कार्य संज्ञा अथवा सर्वनाम पदों की विशेषता प्रकट करना है। अर्थ की दृष्टि से विशेषण शब्दावली गुण, परिमाण, संकेत संख्यादि भेद विभेदों में वर्गीकृत की जाती है किन्तु यदि पद रचनात्मक दृष्टि से विचार किया जाये तो स्पष्ट होगा कि लिंग-वचन और कारक सम्बन्धों को प्रकट करने वाले विभक्ति प्रत्ययों की संयोजना में ये संज्ञा तथा सर्वनाम शब्दों से भिन्न नहीं। इसलिए संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण शब्दावली को नाम के अन्तर्गत परिगणित किया जाता है।

"यल्लिगं यद्वचनं या विभक्ति विशेष्यस्य, तल्लिग, तद्वचनं सैव विभक्ति विशेषणस्यापि" इस सूत्र से प्राचीन भारतीय आर्य भाषा संस्कृत में विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप ही विशेषण में परि

१— कामता प्रसाद गुरू हिन्दी व्याकरण पृ० १२४

वर्तन होता है । मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं पालि, प्राकृत, अपभ्रंश आदि में भी यही प्रवृत्ति दृष्टिगत होती है । परन्तु अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं (हिन्दी आदि) की भांति बीकानेरी मे यह प्रवृत्ति नही है । बीकानेरी में कुछ विशेषण तो अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित होते हैं और कुछ विशेषण अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक से सर्वथा अप्रभावित रहते हैं ।

इस आधार पर बीकानेरी के समस्त विशेषण पदों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

१ विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण पद
२ विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक से अप्रभावित विशेषण पद

४ १ १ विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण-पद

इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के प्राय सभी ओंकारान्त[1] विशेषणों की गणना की जा सकती है क्योंकि ओंकारान्त विशेषण शब्दावली अपने विशेष्य के लिंग वचन कारक के अनुरूप विभक्ति प्रत्यय को ग्रहण करती है । यथा –

	विशेषण	विशेष्य	लिंग
१	कालों	घोडों	पुल्लिंग
२	काली	घोडी	स्त्रीलिंग
३	मोडो	रावडियों	पुल्लिंग
४	मोडी	रवडी	स्त्रीलिंग

१— पूर्णांक गणना वाची ओंकारान्त विशेषण (दो, सौं आदि) इसके अपवाद हैं । ये अपने विशेष्य के लिंग वचन एवं कारक से प्रभावित नहीं होते हैं । यथा दो आदमी, दो लुगायों आदि ।

परिवतन प्रक्रिया

आकारान्त पुल्लिंग विशेषणों के अन्त्य 'आ' का लोप करके तथा 'ई' प्रत्यय लगाकर स्त्रीलिंग विशेषणों के रूप बनाये जाते हैं। यथा –

	पुल्लिंग रूप	प्रत्ययहीन रूप	स्त्रीलिंग प्रत्यय	स्त्रीलिंग रूप
१	कालो॑	काल	ई	काली
२	घोडो॑	घोड	,,	घोडी
३	दूसरो॑	दूसर	,,	दूसरी
४	चोखो॑	चोख्	,,	चोखी

[सूचना – विकारी बहुवचन अर्थात् आँ सहित रूप 'कालाँ' का प्रयोग बोली में तभी मिलता है जबकि विशेषण का संज्ञावत् प्रयोग होता है। यथा–

कालाँ मों॑य सूं एक उठाय ले॑
काले (घोडे अथवा अन्य वस्तुओं) में से एक उठा लो'

४ १ २ विशेष्य के लिंग-वचन एवं कारक से अप्रभावित विशेषण-पद

इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के आकारान्त ईकारान्त, ऊकारान्त एवं व्यजनान्त विशेषणों की गणना की जा सकती है। यथा –

(क) आकारान्त विशेषण

१ बढ़िया घोडो॑	पुल्लिंग एकवचन
२ बढ़िया घोडी	स्त्रीलिंग एकवचन
३ बढ़िया घोड़ा	पुल्लिंग बहुवचन
४ बढ़िया घोडयाँ	स्त्रीलिंग बहुवचन

(ख) ईकारान्त विशेषण

१ मूंजी (कंजूस) आदमी	पुल्लिंग एकवचन

२ मू जी लुगाई	स्त्रीलिंग एकवचन
३ मू जी आदम्यों	पुल्लिंग बहुवचन
४ मू जी लुगायों	स्त्रीलिंग बहुवचन

(ग) ऊकारान्त विशेषण

१ उडाऊ (खर्चीला) छोरो	पुल्लिंग एकवचन
२ उडाऊ छोरी	स्त्रीलिंग एकवचन
३ उडाऊ छोरा	पुल्लिंग बहुवचन
४ उडाऊ छोरयों	स्त्रीलिंग बहुवचन

(घ) व्यजनान्त विशेषण

१ सुपातर बेटो	पुल्लिंग एकवचन
२ सुपातर बेटी	स्त्रीलिंग एकवचन
३ सुपातर बेटा	पुल्लिंग बहुवचन
४ सुपातर बेटयों	स्त्रीलिंग बहुवचन

४ २ सावनामिक विशेषण

बीकानेरी म पुरुष वाचक एव निज वाचक सवनामो को छोड कर शेष सवनामो का व्यवहार विशेषण रूप मे भी होता है । परिणामत हम उन्हे सावनामिक विशेषण की सज्ञा प्रदान कर सकते हैं । बीकानेरी मे सार्वनामिक विशेषणो के उपलब्ध रूप निम्नलिखित हैं –

१ निश्चयवाची सावनामिक विशेषण ओ ।
यथा – ओ छोरो

२ अनिश्चयवाची सावनामिक विशेषण कोई ।
यथा – कोई आदमी कोई बात ।

३ प्रश्नवाची सार्वनामिक विशेषण –कुण एव कई ।
यथा – कुण छोरो, कई बात

४ सम्बन्धवाची सावनामिक विशेषण – जको ।

५— समूहवाची सार्वनामिक विशेषण—अत्ता जत्ता ।

यथा- अत्ता छोरा, जत्ता आदमी ।

६— परिमाणवाची सार्वनामिक विशेषण-अतो॑क, उतो॑क

यथा- अतो॑क धारा, उता॑क आटो॑ कता॑क दूध ।

७— गुणवाची सार्वनामिक विशेषण-अस्सा॑, वस्सा॑ जस्सा॑ ।

यथा- अस्सो॑ घर (ऐसा घर), वस्सो॑ घोडो॑ (वैसा घोड़ा) जस्सो॑ आदमी (जैसा आदमी) ।

आपा॑रो॑, परायो॑ आगलो॑ लारलो॑ आदि शब्द भी सार्वनामिक विशेषण ही हैं, क्योंकि इनका प्रयोग भी विशेषणवद् होता है ।

यथा- आपो॑रो॑ छोरो॑ (अपना लड़का), परायो॑ टाबर(दूसरे का बच्चा), आगलो॑ घोडो॑ (आगे वाला घोड़ा) लारलो॑ छोरो॑ (पीछे वाला लड़का) ।

३ ४ तुलनात्मक विशेषण

अन्य आधुनिक भारतीय आर्य भाषाओं की भांति बीकानेरी में भी तरार्थी एवं तमार्थी विशेषण उपलब्ध नहीं होते हैं । बीकानेरी में तरार्थी विशेषण का भाव 'कम ज्यादा,' घणो॑ ' बेसी' आदि शब्दों को विशेषण के पूर्व रखकर एवं करणकारक के 'सू' परसर्ग का प्रयोग करके प्रकट किया जाता है । यथा—

१- ओ॑ छोरो॑ बे॑ छोरे॑ सू कम पढियोड़ो॑ है ।

२- आ छोरी बे॑ छोरी सू ज्यादा चोखी है ।

३- ईंये॑ दोनो सू ओ॑ घणो॑ फूटरो॑ है ।

४- रो॑म मदन सू बेसी दूध पीवे॑ ।

कभी कभी तुलना के लिये 'उगणीस 'ईक्कीस' एवं बीसा इक्कीसी आदि शब्दों का प्रयोग भी उपलब्ध होता है । यथा—

१- गो॑म मोवन सू इक्कीस पड़े॑ ।

२- दोए पै॑लवोनो॑ री बीसा इक्कीसी है ।

तमार्थी विशेषण का भाव बीकानेरी में सबम सगलो॑ में सगला सू आदि शब्दों के प्रयोग द्वारा प्रकट किया जाता है । यथा—

१- आ॑ छोरो॑ सबसू चोखो॑ है ।

२– आँ घोभ्ो सबसू ॒वड़िया है।
३– धाँलकी गाय सगलाँ मेँ चोखो है।

४ ४ सख्यावाचक विशेपण

बीकानेरी सख्यावाचक विशेपणो को मुख्य रूप से हम तीन वर्गो म विभक्त कर सकते हैं—

१– निश्चित सख्यावाची विशेपण ।
२– अनिश्चित सख्यावाची विशेपण ।
३– परिमाणवाची विशेपण ।

४ ८ १ निश्चित सख्यावाची विशेपण

इस वग के विशेपणा को भी हम अध्ययन की सुविधा के लिए निम्न लिखित पाच उपवर्गो के अतगत विभाजित कर सकते हैं।

क गणनात्मक विशेपण
ख क्रमवाचक विशेपण
ग आवृत्तिवाचक विशेपण
घ प्रत्येक बोधक विशेपण
च समुदाय बोधक विशेपण

उक्त सभी वर्गों एव उपवर्गो का नीचे विस्तार से विवेचन प्रस्तुत किया ज रहा है।

८ ४ १ १ गणनात्मक विशेपण

गणनात्मक विशेपणा के भी दो अवान्तर किये जा सकते हैं—
अ पूर्णांक बोधक
आ अपूर्णांक बोधक

४ ४ १ १ १ पूर्णांक बोधक

बीकानेरी म पूर्णांक बोधक विशेपण निम्न लिखित हैं—

बीकानेरी	हिन्दी
एक	एक
दो	दो
तीन	तीन
च्यार	चार
पाँच	पाच
छौ	छ
सात	सात
आठ	आठ
नौ	नौ
दस	दस
इग्यारे	ग्यारह
बारे	बारह
तेरै	तेरह
चवदै	चौदह
पनरै	पन्द्रह
सोलै	सोलह
सतरै	सत्रह
अठारे	अठारह
उगणीस	उन्नीस
बीस	बीस
इक्कीस	इक्कीस
बाइस	बाईस
तेईस	तेईस
चाईस	चौबीस
पच्चीस	पच्चीस
छाईस	छब्बीस
सत्ताईस	सत्ताईस

बीकानेरी	हिन्दी
अठ्ठाईस	अठ्ठाईस
गुणतीस	उन्तीस
तीस	तीस
इक्तीस	इक्तीस
बत्तीस	बत्तीस
तेतीस	तैंतीस
चाँतीस	चौंतीस
पैंतीस	पतीस
छत्तीस	छत्तीस
सैंतीस	सैंतीस
अड़तीस	अड़तीस
गुणतालीस या गुन्तालीस	उन्तालीस
चालीस	चालीस
इक्तालीस	इक्तालीस
बयालीस	ब्यालीस
तयालीस	तियालीस
चम्मालीस	चवालीस
पैंतालीस	पतालीस
छयालीस	छियालीस
सन्चास	सतालीस
अड़चास	अड़तालीस
गुणचास	उनचास
पच्चास	पचास
इक्यावन	इक्यावन
बावन	बावन
तेपन	तिरेपन
चाँपन	चौपन

बीकानेरी	हिन्दी
पचपन	पचपन
छप्पन	छप्पन
सत्ताँवन	सत्तावन
अठाँवन	अट्ठावन
गुणसठ	उनसठ
साठ	साठ
इकसठ	इकसठ
बासठ	बासठ
तेसठ	तिरसठ
चौंसठ	चौंसठ
पैंसठ	पैंसठ
छयासठ	छियासठ
सड़सठ	सड़सठ
अड़सठ	अड़सठ
गुणत्तर	उनहत्तर
सत्तर	सत्तर
इकोत्तर	इकहत्तर
बवोत्तर	बहत्तर
तेवत्तर	तिहत्तर
चोवत्तर	चौहत्तर
पचत्तर	पचहत्तर
छीयत्तर	छिहत्तर
सतत्तर	सतत्तर
अठत्तर	अठहत्तर
गुणियासी	उनासी

बीकानेरी	हिन्दी
अस्सी	अस्सी
इक्यासी	इक्यासी
बयासी	बयासी
तयासी	तिरासी
चौरासी	चौरासी
पच्यासी	पचासी
छयासी	छियासी
सत्यासी	सत्तासी
अठयासी	अठासी
नयासी	नवासी
नुव्वै	नब्बे
इक्योणमै	इक्यानवे
बोणमै	बानवे
तेणमै	तिरानवे
चोणमै	चौरानवे
पचोणमै	पचानवे
छाणमै	छियानवे
सताणमै	सतानवे
अठाणमै	अठ्ठानवे
नियोणमै	निन्यानवे
सौ	सौ

४ ४ १ १ २ अपूर्णांक बोधक

अपूर्ण संख्यावाचक विशेषणों से पूर्ण संख्या के किसी भाग का बोध होता है।[1] बीकानेरी में अनेक अपूर्ण बोधक संख्याओं का व्यवहार किया

१— डा० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास पृ० २७०

जाता है, जो पाव, आधा, पूर्णो आदि से या इनके योग से निर्मित होते हैं। वाक्य रचना मे ऐसी संख्याओं के साथ विशेष्य आता है

बीकानेरी में निम्नलिखित अपूर्ण बोधक विशेषण उपलब्ध होते हैं।

पाव	(पाव)
आधो	(अद्ध)
पूणो या पूणा	(पौन)
सवा	(सवा)
डेढ या दोढ	(डेढ़)
ढाई या अढाई	(ढाई)

बीकानेरी मे साढी साढा आदि शब्दों से भी अपूर्ण सख्यावाची शब्दों का निर्माण होता है। यथा– साढी पाँच ओंला, साढा चालीस रुपिया, पूणा चम्मालीस रुपिया इत्यादि।

४ ४ १ २ क्रम वाचक विशेपण

बीकानेरी म क्रम वाचक सख्याओ का निर्माण प्रथम चार अकों के उपरात समान रूप से होता है यद्यपि छट्ठो रूप म असमानता है। सख्याओं के पीछे अविकारी पुल्लिग एकवचन म वों प्रत्यय जुडता है शेष पुल्लिग विकारी रूपा मे वें प्रत्यय प्रयुक्त होता है। स्त्रीलिंग के रूपो मे -वी प्रत्यय प्रयुक्त होता है। बीकानेरी मे कतिपय सख्याओ के क्रमवाचक विशेषण निम्नलिखित हैं—

पैलो पैलडो	
दूजो दूसरो	
तीजो तीसरो	
चोंथो	
पाँचवों	पाच+ व+ओं=पाँचवों
छट्ठो	
सातवों	सात्+व+आँ=सातवों
आठवों	

नव्वाँ
दसवाँ

४ ४ १ ३ आवृत्तिवाचक विशेषण

पूर्णांक बोधक विशेषणों के आगे 'गुणों' शब्द लगाने से आवृत्ति वाचक विशेषणों का निर्माण होता है। बीकानेरी में गुणात्मक सख्याओं में 'दुगना' के भाव को 'दूणों' शब्द द्वारा भी व्यक्त किया जाता है। शेष गुणात्मक सख्याओं में त, चों, छो आदि पूर्ण सख्यावाची शब्दों का प्रयोग किया जाता है। यथा-

दूणों
दो ~ दु + -गुणों = दुगुणों ~ दुगणों
तीन ~ त + -गुणों = तगुणों ~ तगणा
च्यार ~ चों + -गुणों = चौगुणों ~ चौगणों
०वीस + -गुणों = ०वीसगुणों

४ ४ १ ४ प्रत्येक बोधक विशेषण

प्रत्येक बोधक विशेषण के द्वारा कई वस्तुओं में से प्रत्येक का बोध होता है। यथा-

'हरेक चीज नें सोच समझर कांम में लेवणी चइजें'

बीकानेरी में गणनात्मक विशेषणों की द्विरुक्ति से भी यही अर्थ ध्वनित होता है। यथा-

'दो-दो रोटयों मगतों नें बांट दों'
(प्रत्येक भीखमगे को दो-दो रोटी बाट दो)।

'पांच-पांच रुपिया मजूरी देसों'
(प्रत्येक को पाच पाच रुपये मजदूरी देंगे'

अपूर्णांक बोधक विशेषणों की द्विरुक्ति से भी यही प्रयोजन सिद्ध होता है-

डेढ डेढ रुपियाँ दे दों

ढाई ढाई ओंना ,वेंच दो"

४ ४ १ ५ समुदाय बोधक विशेषण

बीकानेरी मे कुछ समुदाय बोधक विशेषण निम्नलिखित हैं–

१– जाडा"	=	दो के लिय
२– चोंकडो	=	चार के लिये
३– छक्डो	=	छ के लिये
४– पजा"	=	पाच के लिये

इसके अतिरिक्त बीकानेरी म पूर्णा क बोधक विशेषणो के आगे निश्चित भाव प्रकट करने के लिए ऊ अथवा आ लगाकर समुदाय बोधक विशेषणो का निर्माण होता है। यथा–

(ऊ)

पूर्णांक बोधक विशेषण	प्रत्यय	समुदाय बोधक विशेषण
१— तीन	-ऊ	तीनू
२— च्यार	-ऊ	च्यारू
३— सात	-ऊ	सातू

(-आ)

पूर्णांक बोधक विशेषण	प्रत्यय	समुदाय बोधक विशेषण
१— तीन	-आ	तीनो
२— पाच	-ओ	पाचो
३— आठ	-ओ	आंठा

८ ४ ७ अनिश्चित सख्यावाचक विशेषण

बीकानेरी म सख्यावाचक शब्दो के आग 'एक' जोडकर अनिश्चित सख्यावाची विशेषण का निर्माण किया जाता है। यथा–

१— दो + एक = दोएक
२— च्यार+ एक = च्यारक
— सात + एक = सातेक
४— दस + एक = दसक

[सूचना– बीकानेरी म स्वतत्र रूप से अनिश्चित सख्या वाचक विशेपण उपलब्ध नहीं होता है ।]

इसके अतिरिक्त बीकानेरी में दा निकटवर्ती सख्याओ के योग से एव साथ ही दो दूरस्थ सख्याओ के योग से भी अनिश्चित सख्या वाचक विशेपरा के भाव को प्रकट किया जाता है । यथा–

१– पाँच + छौ = पाच छौ
२– सात + आठ = सात आठ
३– बार + तेरैं = बार-तेरैं
४– आठ + दस = आठ दस
५– तीस + चालीस = तीस चालीस
६– सौं + दोयसौं = सौं-दोयसौं

४ ४. ३ परिमाए वाचक विशेपए

बीकानेरी मे निम्नलिखित परिमाए वाचक विशेपए उपलब्ध हाते हैं —

१ पूरा	(पूरा)	२- अधूरौं	(अधूरा)
३ थोन्ने	(थोडा)	४ घरगैं	(बहुत)
५ बोत	(बहुत)	६ घराँ सारौं	(अत्यधिक)
७ सगला	(सारा)	८ कमती	(कम)
९ बेसी	(ज्यादा)	१०- अत्तौं	(इतना)
११ उत्तो	(उतना)	१२ कत्तौं	(कितना)
१३ जत्तो	(जितना	१४- अत्ताँ सारौं	(इतना सारा)
१५ घरगसौंक	(जरासा)	१६ ज्यादा	(अधिक)

४ ५ क्रियामूलक विशेपरग

रूपा के 'ओडो' प्रत्यय के योग से भी क्रियामूलक विशेषणो की रचना होती है। यदि धातु स्वरान्त हो तो -तो एव णो प्रत्ययो के पूव 'व' ध्वनि का आगम हो जाता है। ओडो प्रत्यय के पूव स्वरान्त धातु मे 'य' श्रुति का आगम हो जाता है एव व्यजनान्त धातुओ मे तो एव-णो प्रत्ययो के पूव श्रुति का आगम नहीं होता परन्तु -ओडो प्रत्यय के पूव - इय' का आगम हो जाता है। यथा-

स्वरान्त धातु एव '-तो' प्रत्यय

खा+व+ -तो =खावतो (क्रियामूलक विशेषण)

खावतो आदमी	पुल्लिग एकवचन
खावता आदमी	पुल्लिग बहुवचन
खावती लुगाई	स्त्रीलिग एकवचन
खावती लुगायां	स्त्रीलिग बहुवचन

व्यजनान्त धातु एव '-तो' प्रत्यय

पढ़+ -तो=पढतो

पढतो छोरो	पुल्लिग एकवचन
पढता छोरा	पुल्लिग बहुवचन
पढती छोरी	स्त्रीलिग एकवचन
पढती छोरयां	स्त्रीलिग बहुवचन

स्वरान्त धातु एव '-णो' प्रत्यय

रो + व + -णो=रोवणो

रोवणो छोरो	पुल्लिग एकवचन
रोवणा छोरा	पुल्लिग बहुवचन
रोवणी छोरी	स्त्रीलिग एकवचन
रोवणी छोरयां	स्त्रीलिग बहुवचन

व्यजनान्त धातु एव '-ओडो' प्रत्यय

खायोडो केलो	पुल्लिग एकवचन
खायोडा केला	पुल्लिग बहुवचन
खायोडी अनार	स्त्रीलिग एकवचन
खायोडी अनारयों	स्त्रीलिग बहुवचन

व्यजनान्त धातु एव 'ओडो' प्रत्यय

मर् + इय + ओडो = मरियोडो

मरियोडो ॰बों दरों	पुल्लिग एकवचन
मरियोडा ॰बों दरा	पुल्लिग बहुवचन
मरियोडी ॰बा दरी	स्त्रीलिग एकवचन
मरियोयी ॰गां दर्यों	स्त्रीलिग बहुवचन

[सूचना–

१— उपयुक्त प्रत्ययों –नों–णों, –ओडो मे मूलप्रत्यय द, ण, -ओड ही है जिनमे ओं, आ ई आदि लगिक वाची प्रत्ययो का योग हुआ है ।

२— क्रियामूलक विशेषण अपने विशेष्य के लिग–वचन एव कारक के अनुरूप परिवर्तित होते हैं । अत क्रियामूलक विशेषणों को वग १ 'अपने विशेष्य के लिग-वचन कारक के अनुरूप परिवर्तित विशेषण' के अन्तगत स्थान दिया जा सकता है ।]

⊖ ⊖

अध्याय/४

नामपदो के निर्माणकारी प्रत्यय

४ १ सामान्य विवेचन

संस्कृत संज्ञा प्राय तीन अंशो से मिलकर बनती है – धातु प्रत्यय तथा कारक चिह्न।[1] धातु और प्रत्यय से मिलकर मूल शब्द बनता है और फिर उसमे आवश्यकतानुसार कारक चिह्न लगाये जाते हैं।[2] आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं मे संस्कृत कारक चिह्न प्राय लुप्त हो गये हैं। आधुनिक भाषाओं व बोलियों मे कारक रचना का सिद्धान्त ही भिन्न हो गया है। गत अध्यायो म संज्ञा के मूल एव विकारी रूपो व कारक चिन्हो पर विस्तार से विचार किया गया है। इस अध्याय म बीकानेरी म नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययो पर विचार किया गया है।

शब्द के जिस अंश में स्वतंत्र अस्तित्व द्योतक कोई अर्थ गर्भित नही होता और वाक्य म स्वतंत्रता पूर्वक प्रयुक्त होने की क्षमता जिसमे नही होती तथा जो प्रकृति– मूल प्रकृति अथवा व्युत्पन्न प्रकृति अथवा पद प्रकृति– के आश्रय से

१— बीम्स कम्परेटिव ग्रामर आव दी माडर्न एरियन लग्वेज आव इण्डिया, भाग २ पृष्ठ १

२— धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास, पृ० २२२

उनके पूर्व अथवा पश्चात् आकर अर्थवान होता है उसे प्रत्यय कहते हैं।[1]

इस परिभाषा के आधार पर डॉ० उप्रति ने प्रत्ययों का वर्गीकरण इस प्रकार किया है —

(१) व्युत्पादक प्रत्यय— पूर्व प्रत्यय पर प्रत्यय (२) व्याकरणिक प्रत्यय- विभक्ति प्रत्यय पश्चाश्रयी। पश्चाश्रयी के उन्होंने पुनः दो उपभेद किये हैं — परसर्ग एवं निपात।[2]

डॉ० मुरारी लाल उप्रति द्वारा वर्गीकृत प्रत्ययों के वर्गीकरण में पूर्व पर एवं विभक्ति प्रत्यय तो प्रत्यय सीमा में आते हैं परन्तु परसर्ग एवं निपातों को प्रत्यय की सीमा में स्वीकार करना सर्वथा भ्रामक व अवैज्ञानिक है। इसके निम्नलिखित कारण हैं —

(१) प्रत्यय धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पर में जुड़कर 'पद' रचना करते हैं परन्तु परसर्ग एवं निपात तो केवल संज्ञा सर्वनाम एवं विशेषण शब्दों के विकारी रूपों के पश्चात् आते हैं इनसे 'पद' रचना नहीं होती एवं मूल रूपों के साथ इनका प्रयोग नहीं होता।

(२) क्रिया-पदों के पश्चात् परसर्गों का प्रयोग नहीं होता।

(३) वाक्यान्तर्गत निपात तो निक्षिप्त होते हैं एवं यदि निपातों को वाक्य से निकाल भी दिया जाय तो पद रचना एवं वाक्य गठन में किसी प्रकार का अन्तर उपस्थित नहीं होता। पर यदि प्रत्ययों को वाक्य में से निकाल दिया जाय तो पद रचना एवं वाक्य गठन में अन्तर उपस्थित हो जायगा। यथा— 'बेकसूर लड़का तो मर गया' वाक्य में 'बे' पूर्व प्रत्यय एवं आ विभक्ति प्रत्ययों को निकाल दिया जाय तो वाक्य होगा। कसूर लड़क तो मर गय परन्तु यदि तो निपात को निकाल दिया जाय तो पद रचना

१— डॉ० मुरारी लाल उप्रैति हिन्दी में प्रत्यय विचार पृ० २३
२— ,, ,, ,, २३ २४

एव वाक्य गठन में कोई अतर उपस्थित नहीं होगा यथा— 'लडका मर गया'।

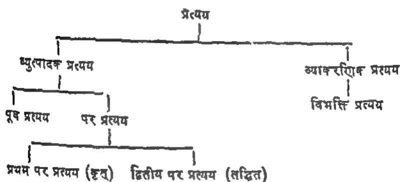
(४) प्रत्यय में 'पद' एव अभिनव शब्द सृष्टि करने की क्षमता होती है पर निपातो एव परसर्गों के द्वारा अभिनव शब्द सृष्ट नही होते।

(५) सस्कृत आदि प्राचीन आर्य भाषाओ म प्रत्ययों को मुख्य रूप से चार वर्गों मे विभाजित किया गया है — सुप्, तिङ कृत् एव तद्धित। सुप् एवं तिङ व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय हैं एव कृत् तथा तद्धित व्युत्पादक प्रत्यय हैं। निपात एव परसर्ग इनम से किसी भी श्रेणी मे नहीं आ सकते।

इस प्रकार परसर्गों एव निपातो को प्रत्यय की सीमा मे स्वीकार करना अवमानिक है। वस्तुत प्रत्यय वे आवद्ध रूप हैं जो प्रकृति (धातु प्रातिपदिक) के पूर्व अथवा पर म सलग्न होकर अभिनव शब्द सृष्टि करते हैं एव जिनका प्रयोग वाक्यान्तर्गत स्वतन्त्र रूप से नहीं होता। इस आधार पर हम प्रत्ययों को निम्न वर्गों म वर्गीकृत कर सकते हैं (१) व्युत्पादक प्रत्यय— वे प्रत्यय जो किसी धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व अथवा पर म सलग्न होकर अभिनव 'पद' की सृष्टि करते हैं व्युत्पादक प्रत्यय कहलाते हैं। व्युत्पादक प्रत्यय के दो भेद होते है — (१) पूर्व प्रत्यय (२) पर प्रत्यय। पूर्व प्रत्ययो का प्रयोग धातु अथवा प्रातिपदिक के पूर्व होता है। पर प्रत्यय के पुन दो उपभेद किये जा सकते हैं— (१) प्रथम पर प्रत्यय (कृत्) (२) द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित)। जो प्रत्यय धातुओ मे जुडते हैं वे प्रथम पर प्रत्यय (कृत्) कहलाते हैं एव जो प्रत्यय सज्ञा विशेषण आदि मे जुडकर पुन अभिनव सज्ञा विशेषण आदि व्युत्पन्न करते हैं द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित) कहलाते हैं।

(२) व्याकरणिक प्रत्यय— इसके अन्तर्गत विभक्ति प्रत्ययो की गणना की जा सकती है। वे प्रत्यय जो धातु अथवा प्रातिपदिक मे जुड कर पद रचना करते हैं एव वाक्यान्तर्गत लिंग, वचन कारक, काल, वाच्य रीति आदि का बोध कराते हैं विभक्ति प्रत्यय कहलाते हैं यथा— "लडके ने पुस्तक पढी वाक्य मे /लडके/ तथा /पढी/ क्रमश सज्ञा तथा क्रिया पद हैं तथा ये पद /लडका/ प्रातिपदिक एव /पढ/ धातु से सिद्ध हुए हैं। /लडका/ प्रातिपदिक मे लगने वाली

/ए/ विभक्ति तियक कारक पुल्लिग एक वचन की द्योतक है । /पढ/ धातु के पश्चात् लगने वाली /ई/ विभक्ति अय पुरुष, एक वचन, स्त्रीलिंग, भूतकाल आदि की द्योतक है। इस प्रकार विभक्ति प्रत्ययों के योग से सज्ञा, सवनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि पद सिद्ध होते हैं। उपयुक्त विवेचन के आधार पर बीकानेरी नामपदो के निर्माणकारी प्रत्ययो का वर्गीकरण एव प्रत्यय विधान इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —



५ २ १ व्युत्पादक प्रत्यय पूर्व प्रत्यय

बीकानेरी मे पूव प्रत्यय का प्रयोग सज्ञा विशेषण, क्रिया विशेषण एव धातुओ के पूव होता है एव इनके योग से प्रकृत्यथ मे अभिनवता आ जाती है। पूव प्रत्ययो का प्रयोग सवनामो के पूर्व उपलब्ध नहीं होता। बीकानेरी मे उपलब्ध पूर्व प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

/अ/ /अन/ /अघ/ /अन/, /ऊ/ /ओ/ /क/ /कु/ /दर/ /दु/ /दुर/ /न/ /पड/, /पर/ /वि/, /वे/, /ला/ /स/ /सर/ सु/

उपयुक्त पूर्व प्रत्ययो का वणनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

५ २ १ १ सज्ञापदो के निर्माणकारी पूव प्रत्यय

(क) पूर्व प्रत्यय + सज्ञा = व्युत्पन्न सज्ञा रूप

पूर्व प्रत्यय	संज्ञा →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	अर्थ
अ	न्याव	अन्याव	'हीनता'
अ	काल	अकाल	"
अध	कचरो	अधकचरो	'अद्ध'
अन	हित	अनहित	अभाव
अल	मस्त	अलमस्त	निश्चय
ऊ	खल	ऊखल्	वस्तु बा०
ओं	गुण ∽ गण	ओंगण	हीनता
क	पूत	कपूत	"
कु	ठोंड	कुठोंड	"
कु	टावर	कुटावर	"
दु	भाग ∽ हाग ∽ वाग	दुवाग	"
दुर	आसीस	दुरासीस	,
पड	पोतो	पडपोतो	'पूर्वपीढ़ी'
पर	देस	परदेस	'पराया'
बे	ईजत/ई	बेजती	'बिना'
बे	रहम ∽ रैम/ई	बेरेमी	"
वे	राग	०वे राग	अभाव'
ला	परवाह् ∽ परवा/ई	लापरवाई	निषेध'
स	पूत	सपूत	अच्छा'
सर	पच	सरपच	'प्रधानता
सु	मांणस	सुमांणस	'श्रेष्ठता

(ख) पूर्व प्रत्यय + धातु = व्युत्पन्न संज्ञा रूप

पूर्व प्रत्यय	धातु →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	अर्थ
अ	पच्/ओ	अपचो	बिना'
अण	बोल/आ	अणबोला	,
अण	बण	अणबण	,

५ २ १ २ विशेषण पदो के निर्माणकारी प्रत्यय

(क) पूव प्रत्यय + सज्ञा = व्युत्पन्न विशेषण रूप

पूव प्रत्यय	सज्ञा →	व्युत्पन्न विशेषण	अथ
अ	याग	अयाग	अभाव
अ	चेत	अचेत	"
अन	मोल	अनमोल	"
अण	समझ	अणसमझ	"
कु	ढब	कुढब	हीनता
दु	बल/ओं	दुबलों	हीनता
न	धडक	नधडक	बिना
न	पूत/ई	नपूती	"
नु	गुरू/गुर/आं	नुगरों	"
बे	धडक	बेधडक	"
बे	तुक	बेतुक	"
बें-	राग/ई	बेंरागी	अभाव
स	जल	सजल	सहित
स	पूत/ई	सपूती	"

(ख) पूव प्रत्यय[1] + विशेषण = व्युत्पन्न विशेषण रूप

पूव प्रत्यय	विशेषण	व्युत्पन्न विशेषण रूप	अथ
अ	छूत/ओं	अछूतों	अभाव
कु	मारग/ई	कुमारगी	हीनता
कु-	नोंम/ई	कुनामी	"
गुण[1]	तीस	तीस	,

१— 'गुण' पूर्व प्रत्यय केवल संख्यावाची विशेषणों के पूव ही लगता है जो सस्कृत के 'ऊन' से विकसित है। बीकानेरी म उन्नीस' विशेषण के स्थान पर 'उगणीस' रूप मिलता है। इस रूप में 'गुण' मे विपर्यय हुआ है।

स	नोँम/ई-	सनोमी	श्रेष्ठता

(ग) पूव प्रत्यय + धातु = व्युत्पन्न विशेषण रूप

पूव प्रत्यय	धातु →	व्युत्पन्न विशेषण रूप	अथ
अ	टल	अटल	अभाव
अ	चूक	अचूक	"
अन	पढ	अनपढ	"
अन	जाँण	अन्जोँण	,

५ २ २ पर प्रत्यय

बीकानेरी म पर प्रत्ययो का प्रयोग सज्ञा सवनाम, विशेषण, क्रिया विशेषण एव धातुओ के पश्चात होता है एव इनके योग से अनेक प्रकार के सज्ञा, विशेषण आदि रूप व्युत्पन्न होते हैं ।

५ २ २ १ प्रथम पर प्रत्यय (कृत्)

जो प्रत्यय धातु मे सलग्न होकर सज्ञाओ एव विशेषणो का निर्माण करते हैं वे प्रथम पर प्रत्यय (कृत्) कहे जाते हैं एवं इनसे निर्मित शब्द कृदन्त कहलाते हैं । बीकानेरी मे प्राय स्वरान्त धातुओ म पर प्रत्यय लगने से पूव 'व अथवा य' श्रुति का आगम हो जाता है एव व्यजनान्त धातुओ मे पर प्रत्यय लगने स पूव श्रुति का आगम दृष्टिगत नही होता । बीकानेरी मे उपलब्ध प्रथम पर प्रत्यय निम्नलिखित है ।

/ ०/ |अक/, |अत| /-अण/, |-अण/ई| |अस/, |-अ त/, |अ द/ |आ/ई/, |आक| |आप/ओँ/ |आर/ई/ |आव/ |-आव/ओँ|, |-आव/अण/ई/ |आवट/, |इय/ ओँ/ |उ/, |एज/, |एर/ओँ|, |ओड| /-ओड/ई/, |-ओट/ई/ |-ओ ण/ /-ओँण/ई/ |-ओ ण/ ओ/, |-ओत/ई|, |व/ई/ |कार/, |ट/आ/ |-ट/ई/ |-ण/ई/, |त/आ/, |त/ई| |त/इय/ओँ| |-न/ई| |-न/ओँ|, |ब/ई/ |-वार/ओँ/, |वैय/आ/, |-स/ओँ| |अक्कड/ |आ/ऊ/, |-आक/इय/ओ| |-आव/आण/ओँ|, |इयल| |इय/आ/, |एल|, |ओकडोँ/ |ओ/अँ/,

उपयुक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

५ २ २ १ १ संज्ञापदों के निर्माणकारी प्रथम पर-प्रत्यय (कृत्)

(क) धातु + पर प्रत्यय = व्युत्पन्न संज्ञा रूप

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	
/०/	तप्	-०	तप	भा०मा०सं०
	जप	०	जप	"
	नाथ्	-०	नाथ	"
/अक/	बैठ	-अक	बैठक	स्थान० वा०
	बैस्	-अक	बैसक	"
/अत/	तप	-अत/ई	तपती	भा०मा०सं०
	बस	-अत	बसत	"
	रम्	-अत	रमत	"
/-अण/	चल	-अण	चलण	"
	धड़क	-अण	धड़कण	"
	०बेल	अण	बेलण	"
/अण/ई/	मीच	-अण/ई	मीचणी	"
/अस/	मस ∽ माल	-अस	मालस	"
/-अ त/	भड़	अ त	भड़त	"
/-अ द/	तड	-अ द	तडद	"
	बड	-अ द	बडद	"
/-आ/ई/	कर्	आ/ई	कराई	
	जड	आ/ई	जड़ाई	"

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय → व्युत्पन्न संज्ञा रूप		
/आ/ई/	पढ़	-आ/ई	पढ़ाई	भा० वा० सं०
	धो /व/	-आ/ई	धोवाई	"
	सी /व/	-आ/ई	सीवाई	"
/-आर/	लड़	-आक	लड़ाक	"
	पढ़्	आक	पढ़ाक	"
/-आर/ओं/	पुज्	आर/ओ	पुजारों	"
	चढ़्	आर/आ	चढ़ारा	"
/-आर/ई/	पुज्	-आर/ई	पुजारी	कर्ता० वा०
	पसर	आर/ई	पसारी करण०	"
/-आव/	घूम	-आव	घूमाव	भा० वा० सं०
	पकड़	आव	पकड़ाव	"
/-आव/ओं/	घुम्	-आव/आ	घुमावाँ	"
	पछाड़्	-आव/आ	पछाड़ावाँ	"
/-आव/अण/ई/	पै'र	-आव/अण/ई	पै'रावणी	"
/-आवट/	जम्	-आवट	जमावट	
	सज	-आवट	सजावट	"
	˳बण	-आवट	˳बणावट	
/इय/ओं/	रमत्	इय/ओं	रमतियों	"
/ई/	हस्	ई	हसी	"
	बोल्	ई	बोली	"
/ऊ/	खा	-ऊ	खाऊ व्यक्ति० वा० सं०	
/एज/	ओंध ~ बध	एज	बधेज	भा० वा० सं०
/एर/ओं/	˳बास ~ बस	एर/ओं	बसेरों	
/-ओड/	हल	-ओड	हलोड	,

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न	संज्ञा रूप
/-ओट/ई/	मस्	-ओट/ई	मसोटी	भा० वा० स०
	मस	-ओट/ई	मसोटी	,,
/-ओड/ई/	पक	-ओड/ई	पकोड़ी	वस्तु वा० स०
/-ऑंण/	सग्	-ओँण	सगोँण	भा० वा० स०
	चढ	-आँण	चढ़ोँण	,,
/-आँण/ई/	कें ∽ क	-ओँण/ई	काँणी	,,
/ओँण/ओँ/	बछ	-आँण/ओ	बछोणोँ	वस्तु ,,
/-ओत/ई/	कट	-ओत/ई	कटोती	भा० वा० स०
/क/ई/	झप	क/ई	झपकी	
/कार/	फट	-कार	फटकार	,,
	दुत्	कार	दुतकार	,,
/ट/आ/	खर ∽ खर	ट/आ	खराटा	,,
/ट/ई/	झप	ट/ई	झपटी	,,
/-ण/ई/	कर्	-ण/ई	करणी	,,
	घट	-ण/ई	घटणी	,,
/-त/आ/	कर्	-त/आ	करता	कर्तृ वा० स०
	घर	-त/आ	घरता	,,
/त/ई/	चढ	-त/ई	चढती	भा० वा० स०
	बन्	-त/ई	बनती	,,
/त/इय/ओँ/	भर	-त/इय/ओँ	भरतियोँ	वस्तु वा० स०
/-न/ई/	चाल्	-न/ई	चालनी	,,
	मल्	-न/ई	मलनी	भा० वा० स०
/-न/ओँ/	झर	-न/ओँ	झरनोँ	कर्म वा० स०

/ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
/ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
/ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]	,
/ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]	,

४.२.२.१.२ विशेषण पदों के निर्माणकारी प्रत्यय

पर प्रत्यय (कृत्)

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय —	व्युत्पन्न विशेषण
-अक्कड़	भुख भुख	-अक्कड़	भुक्कड़
/ [illegible]	[illegible]	[illegible]	[illegible]
	[illegible]	[illegible]	[illegible]
/ अ ड़/	अड़	-आड़	अड़ाड़
	चल	-आड़	चलाड़
	वक्	-आड़	वकाड़
/ ऊ	खा	ऊ	खाऊ
/ आक/	तर	-आक	तराक
/ आव/न्य/आ /	ओप्	-आव' य/आँ	ओपाविओं
/ आक/ओ /	लड़	-आक/आँ	लड़ाको
/-आव'आण/आँ	डर	-आव/आण/आँ	डरावणों
/ इयल/	मर्	-इयल	मरियल
	अड़	इयल	अड़ियल
/ इय/आ/	घट्	-इय/आ	घटिया
	बढ़्	इय/आ	बढ़िया

/ऊ/	चा	ऊ	चाऊ
	अक्ड	ऊ	अक्ड़ू
	रट् ~ रट्ट	ऊ	रट्टू
/एल/	˳बगड्	एल	˳बगडेल
	छाँट् ~ छट्	एल	छटेल
/ओकडो/	खा	-आवडोँ	खाओकडोँ
	पी	-ओकडोँ	पीओकडोँ
	घट्	ओकडोँ	घटोकडोँ
/-आडोँ/	ली /य/	-ओडोँ	लीयोडोँ
	खा /य/	-ओडोँ	खायोडोँ
	चूट् /इय/	ओड/ओँ	चूटियोडोँ
	गल /इय/	ओड/आ	गलियोडोँ
/कार/	जाँण	-कार	जोँणकार
/-ण/ओँ	खा /व/	ण/आ	खावणो
/ण/ इयाआ	गा /व/	ण/इय/ओँ	गावणियोँ
/-व आँ/	ढल्	-व/ओँ	ढलवोँ
/व/आँ/	गा ~ ग	-वै/आँ	गवैयोँ

५ २ २ २ द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित)

जो प्रत्यय सज्ञा, सवनाम, विशेषण क्रिया विशेषण आदि शब्दों के अन्त्य भाग म सलग्न होकर पुन विविध सज्ञा सवनाम विशेषण आदि पदो की सरचना करत हैं व द्वितीय पर प्रत्यय (तद्धित) कहलाते है। बीकानेरी मे उपलब्ध द्वितीय पर प्रत्यया का योग की दृष्टि से निम्नलिखित वर्गों म विभाजित किया जा सकता है—

१— सज्ञा स सज्ञा व्युत्पान्न पर प्रत्यय
२— सवनाम से सज्ञा व्युत्पान्न पर प्रत्यय
३— विशेषण से सज्ञा व्युत्पान्न पर प्रत्यय
४— क्रिया विशेषण से सज्ञा व्युत्पान्न पर प्रत्यय

५— संज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय
६— सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय
७— विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय
८— क्रिया विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

५ २ २ २ १ संज्ञा से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में संज्ञा से संज्ञा व्युत्पन्न करने वाले पर प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

/अर/, /अण/ /-अन/, /-अ ग/आ/ /आ/ई/ /-आव/ओँ/ /-आड/ /आर/ओँ/, /आवन/ /-आर/ /-आर/ई/ /-आर/ आ/, /आल/ई/ /-इय/आ/, /इय/आ/, /इ द आ/ /ई/ /ईन/आ/,/ईय/ /ओँ/ /एड/ओ/-एस/ /आ/ई/ /-आट/आ/,/-आड/आँ/ /ओत/आ/ /-आए/ई/ /आ/ ई/ ओन/ई/, /आन/ई/ /र/, /र/ई/ /वार/, /-न/ई/ /-नर/ /-आर/, /सीर/ /गर/ई/ /-ड/आँ/, /ष/ई/ /वार/आँ/ /ड/आ/ /-ज/आँ/, /-त/ /आ/ /-त/ओ/, /-ौन/, /-न/ई/, /-ना म/ /-आ/ई/, /-पण/ /पट/आ/, /-पाल/, /-य/ओँ/ /भ/आँ/, /-यार/ई/ /र/ई/, /र/आँ/ /-स/ई/ /-स आ/ /-वाड/आँ/

उपर्युक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	
/अक/	ढोल	-अक	ढोलक	वस्तु० वा० सं०
/अण/	धोबी ∽ धोब्	-अण	धोबण	स्त्री०
	भगी ∽ भग्	-अण	भगण	
/अण/	पग ∽ पा /य/	-अन	पायन आभूषण वा० सं०	
/अ ग/आ/	आड ∽ अड्	-अ ग/आ/	अडगा भा० वा० सं०	
/-आ/ई/	लाग ∽ लुग	आ/ई/	लुगाई स्त्री० वा० सं०	
	ठाकर ∽ ठकर	आ/ई/	ठकराई भा० वा० सं०	
	पडत	आ/ई/	पडताई भा० वा० सं०	

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/-आक/ओं/	पट	-आक/ओं/	फाटकों वस्तु० वा०स०
	धम	आक/ओं/	धमाकों ,,
/-आड/	जोग ∽ जुग्	आड/	जुगाड भा० वा० स०
	सात ∽ सत	-आड	सताड
/-आप/ओं/	रॉड ∽ रड	-आप/ओं/	रडापों भा० वा० स०
/-आयत/	पंच	आयत	पंचायत भा० वा० स०
/-आर/	लो /व/	-आर	लोवार व्यवसाय वा०स०
	सोनों ∽ सोन	आर	सोनार ,,
/-आर/ई/	जूओं ∽ जू	-आर/ई	जूआरी व्यवसाय वा०स०
/-आर/ओ/	वाणियों ∽ वणज	आर/ओं/	वणजारों वस्तु वा० स०
/-आल/इ/	हाथ ∽ हथ	-आल/ई	हथाली अंग वा०स०
/इय/आ/	लोटों ∽ लुट	इय/आ/	लुटिया लघु वा०स०
/इय/ओं/	रोकड	इय/ओं/	रोकडियों व्यवसाय वा०
	आडत	इय/ओं/	आडतियों ,,
	जोंग	इय/ओं	जोंगयों वस्त्र वा० स०
/इंद/ओं/	बास	-इंद/ओं/	बासिंदो वस्तु० वा०स०
	रात	इंद/ओं/	रातिंदों रोग० वा० स०
/ई/	खेत	ई	खेती भा० वा० स०
	चोर	ई	चोरी
	तेल	ई	तेली व्यवसाय वा० स०
	परख	ई	परखी वस्तु० वा० स०
/ईन/ओं/	माह ∽ म	ईन/ओ/	महीनों भा० वा० स०
/ईच/ओं/	बाग ∽ बग	ईच/ओं/	बगीचों वृहद् वा०स०
/एड/ओं/	कोंम	-एड/ओं/	कोंमेडों सम्बन्ध वा०स०
/एल/	फूल ∽ फुल	एल	फुलेल सम्बन्ध वा०स०
/ओ/ई/	नणद	ओ/ई/	नणदोई

पर प्रत्यय	सज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/ओ/ई/	बेंन /ग/	आ/ई	बेंदोई [1] ,सबंध वा० स०
/-ओट/ओं/	लिंग ∽ लग	ओट/ओं	लगोटों वस्त्र वा० स०
/ओड/ओं/	हाथ ∽ हथ	-ओड/ओं।	हथोडों करण वा० स०
/-ओंण/ओं/	घर	-ओंण/ओं/	घरोंणों भा० वा० स०
/आंण/ई/	सेठ	ओंण/ई/	सेठोंणी स्त्री० वा० स०
	जेठ	-ओण/ई/	जेठाणी "
	देवर ∽ देर	-ओंण/ई/	देरोंणी
/ओत/ई/	बाप	ओत/ई/	बापोती भा० वा० स०
	काठ कठ	-ओत/ई/	कठोती सम्बन्ध वा० स०
/-आल/ई/	नीम ∽ नीम्ब	-ओल/ई/	नीम्बोली ,
/-क/	कण	-क	कणक अन्न वा० स०
/व/ई/	धम	-क/ई	धमकी भा० वा० स
/-कार/	फू	कार	फूकार भा० वा० स०
	हु	-कार	हुकार
/गर/ई/	नेता	गरी	नेतागरी भा० वा० स०
	बे'द	ग/ई	बेन्दी सबंध वा० स०
/-ग/ई/	सोंदों ∽ सोंदा	-गर	सोंदागर ,
/गर/	जादू	-गर	जादूगर कर्त्त वा० स०
	याद	-गार	यादगार सम्बन्ध वा० स०
/-गार/	पेसो ∽ पसा	-गीर	पेसागीर सम्बन्ध वा० स०
/-गीर/	धोबी	डों	धोबीडों हुमाय वा० स०
/ड/ओं/	तबलों ∽ तबल	च/ई/	तबलची व्यवसाय वा०
/-च/ई/	भाई	-चारो	भाईचारों भा० वा० स०
/चार/ओं/	भाई ∽ भती	-ज/ओं	भतीजों सम्बन्ध वा० स०
/-ज/ओं/	झपट	-ट/ओं	झपट्टों भा० वा० स०
/-ट/ओं/	जन	-त/आ/	जनता समुदाय वा० स०
/-त/आ/	राई ∽ राय	त/ओं	रायतों रूपान वा० स०
/-त/ओं/			

१— बन्दोई में 'द' ध्वनि का आगम नणदोई के सादृश्य पर हुआ है।

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	
/-दोन/	पोंन	दोंन	पोंनदोंन	पात्र वा०
	अतर	दोंन	अतरदोंन	,,
/न/ई/	मोर	नी	मोरनी	स्त्री० ,,
/नोम/ओं/	सोलां ∽ सोला	नोंम/ओं	सोलानोंमां	सबंध ,
/-ण/ई/	भील	-ण/ई	भीलणी	स्त्री० ,
	पोंद ∽ पोंन	-ण/ई	पोंनणी	वस्तु० ,
	हाथी ∽ हथ	ण/ई	हथणी	स्त्री० ,,
/-पण/	सगां ∽ सग	-पण	सगपण	सम्बन्ध ,
	बाल	-पण	बालपण	भा०वा०सं०
/पण/ओ/	मनख	-पण/ओं	मनखपणों	सम्बन्ध ,
/पाल/	खेत ∽ खेतर	पाल	खेतरपाल	स्वामी० ,,
/ब/ओं/	मल	ब/ओं	मलबों	सम्बन्ध ,
/म/ओं/	सूर	म/ओं	सूरमों	गु०वा०सं०
/-यार/ई/	पांणी ∽ पण	यार/ई	पणयारी	सम्बन्ध ,,
/र/ई/	बोंस ∽ बस	-र/ई	बसरी	,,
/र/ओं/	देव	र/ओ	देवरो	,
/ल/ई/	सूत	-ल/ई	सूतली	,,
	डफ	ल/ई	डफली	लघुवा०सं०
/ल/आं/	भाई ∽ भाय	-ल/आं	भायलां	सम्बन्ध
	छाज	ल/आं	छाजलां	वस्तु वा०
/वाड/ओं/	राज ∽ रज	वाड/ओं	रजवाड़ों	सम्बन्ध ,,

५ २ २ २ २ सर्वनाम से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में सर्वनाम से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित है —

-आँ, प/ओँ

इनका वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	सर्वनाम	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/ओँ/	आप	-आँ	आपाँ भा०वा०स०
/ प/ओँ/	आप ∽ अपण	-प/आ	अपणापोँ ,

५ २ २ २ ३ विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित है—

/ अक/, /-अण/ / अत/ /-अस/ / आ/ई/ / आप/आ /, /-आर/ओँ/, / आवट/ /-आस/, / इय/ओ / / ई/ / एल/ओँ/, / ओण/, / क/ओँ/, / ग/ई/, / ज/, / ज/ओ /, / ठ/, / य/, /-पण/ / म/ई/, /-प/ओँ/, /-स/,

इनका वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/ अक/	पाँच ∽ पच	अक	पचक समुदाय
/ अण/	भूठ	-अण	भूठण भा०वा०स०
/ अत/	खलाफ	अत	खलाफत ,
/-अस/,	बारेँ ∽ बार	-अस	बारस तिथि ,
	तेरेँ ∽ तेर	-अस	तरस ,,
/ आ/ई/	एक ∽ इक	-आ/ई/	इकाई भा० वा०स०
	फीटोँ ∽ फीट	आ/ई/	फीटाई ,
/-आप/ओँ/	बूढो ∽ बूढ	आप/ओँ	बूढापोँ ,
/ आर/ओ /	अ घ	आर/ओँ	अ घारोँ सबंध वा०
/ आवट/	तर	अावट	तरावट भा०वा०स०
	जम	-आवट	जमावट

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय →	व्युत्पन्न	संज्ञा रूप
/-आस/	खारो ∽ खार	-आस	खारास	भा०वा०सं०
	बाडो ∽ बाड	-आस	धाडास	,,
/इय/ओं/	पीलो ∽ पील	इय/ओं	पीलीयो	रोग०व०
/ई/	लाल	-ई	लाली	भा०वा०सं०
/-एल/ओं/	आधो ∽ अध	-एल/ओं	अधेलो	मुद्रा ,,
/-आ/	दो ∽ दू	-ओं	दूओं	सम्बन्ध ,
/-आ ण/	लम्बो ∽ लम्ब	-ओं ण	लम्बोण	भा०वा०,,
	नीचो ∽ नीच	-आं ण	नीचोंण	,,
/-क/ओं/	च्यार ∽ चो	-क/ओं	चोको	सम्बन्ध ,,
	एक	-क/ओं	एको	सवारी ,
/-ग/ई/	सादो ∽ साद	-ग/ई	साग्गी	भा०वा० ,
/-ज/	दो ∽ दू	ज	दूज	तिथि ,
/-ज/ओं/	पांच ∽ प	ज/ओं	पजो	समूह ,,
/-ठ/	छौ ∽ छ	-ठ	छठ	तिथि ,,
/-थ/	च्यार ∽ चो	-थ	चोथ	,,
/-पण/	॰बडो ∽ ॰वड	-पण	॰वडपण	भा० ,
/म/ई/	दस	-म/ई	दसमी	तिथि ,
/-य/ओं	सात	-य/ओं	सात्यों	,
/-व/आं/	बारें ∽ बार	-व/आं	बारवों	संस्कार ,
/स/	चोदें ∽ चोद	स	चोदस	तिथि वा० ,,

५ २ २ २ ४ क्रिया-विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी में क्रिया विशेषण से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्न-लिखित हैं —

/-अत/, /इय/आँ/, /ई/, /-कार/, /-वार/,

उपर्युक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है —

पर प्रत्यय	क्रिया विशेषण	पर प्रत्यय→	व्युत्पन्न	संज्ञा रूप
/-अत/	जरूर	-अत	जरूरत	भा०वा०सं०
/इय/ओँ/	फटफट	इय/आँ/	फटफटियोँ	सम्बन्ध ,,
/ई/	रोज	-ई	रोजी	भा०वा०सं०
/-कार/	पेस	-कार	पेसकार	कर्तृ ,
	रोज ∽ रुज	-कार	रुजकार	भा०वा० सं०
/वार/	पैदा	-वार	पदावार	,,

५ २ २ २ ५ संज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी मे संज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नलिखित है—

/-अल/, /-अस्वी/ /अग/, /आ/ई/ /आती/, /-आर/ऊ/, /आल/आ/, /-इयल/, /-इय/आ/ /इद/ओँ/, /ई/, /ईन/, /ईल/ओ/, /ऊ/, /एड/ई/, /-एर/ /-एल/ऊ/ /एल/, /ओँ/ /आन/आ/ /कार/, /की/, /खोर/, /गार/, /ची/, /-दार/, /नाक/, /-बाज/, /मद/ /ल/ओ/, /लू/, /-वर/, /वोँन/ /वार/, /-वी/,

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-अल/	घोटी ∽ घोट	-अल	घोटल
	घाव ∽ घय	-अल	घायल
/अस्वी/	तेज	अस्वी	तेजस्वी
	तप	अस्वी	तपस्वी
/अग/	दड	-अग	दडग
/आ/ई/	पूरब ∽ पुरब	आ/ई	पुरबाई
/-आती/	बर	-आती	बराती

र प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/आर/ऊ/	दूध	-आर/ऊ	दूधारू
/आल/आ/	घूघरा ∽ घुघर	-आल/आ	घुघराला
/इयल/	दाढ़ी ∽ दढ़	इयल	दढ़ियल
/इय/आ/	केसर	-इय/आ	केसरिया
	दूध	इय/आ	दूधिया
/इ॰/आँ/	॰बापु ∽ ॰बा	-इ द/आ	॰बाइ दाँ
/ई/	॰बास	ई	॰बासी
	देस	-ई	देसी
/ईन/	सग	ईन	सगीन
	रग	ईन	रगीन
	सोख	-ईन	सोँखीन
/ईल/आँ	जेँर	-ईल/आँ	जेँरीलोँ
	ऐंब	-ईल/ओँ	ऐंबीलोँ
/ऊ/	घर	ऊ	घरू
/एड/ई/	भाग ∽ भग	-एड/ई	भगेडी
/एर/	॰दल	एर	॰दलेर
/एल/ऊ/	घर	एल/ऊ	घरेलू
/एल/	॰बगड़	-एल	॰बगडेल
/-ओँ/	एकतरफ	-ओ	इकतरफाँ
/-ओँन/आ/	जन	-ओँन/आ	जनोँना
	मरद	-ओँन/आ	मरदोँना
/-वार/	सला	-वार	सलावार
/वी/	सन	वी	सनकी
/-खोर/	घूस	-खोर	घूसखोर
/-गार/	गुना	-गार	गुनागार
/ची/	अफीम	ची	अफीमची
/दार/	रस	-दार	रसदार

/दार/	दल	दार	दलदार
/नाक/	खतराँ ∽ खतर	नाक	खतरनाक
/बाज/	रंडी	बाज	रंडीबाज
	धोखोँ ∽ धोखा	-बाज	धोखाबाज
/मंद/	अक्ल	-मंद	अकलमंद
/ल/ओँ/	लाड	-ल/ओँ	लाडला
	घूंघ	ल/ओँ	घूंघलो
/लू/	दया	लू	दयालू
/-वर/	ताकत	-वर	ताकतवर
/-वाँन/	धन	वाँन	धनवाँन
	रूप	-वाँन	रूपवाँन
/-वार/	उम्मीद	वार	उम्मीदवार
/-वी/	माया	-वी	मायावी

५ २ २ २ ६ सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी म सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय निम्नलिखित है—त/ओँ/, स/ओँ/, -स/ई/

उपर्युक्त पर प्रत्ययो का विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	सर्वनाम	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/त/ओ/	ओँ ∽ अ	-त/ओँ	अत्तोँ
	बोँ ∽ ब	त/ओँ	बत्तो
	कुण ∽ क	त/ओँ	कत्तोँ
/-स/ई/	आप	स/ई	आपसी
/स/ओँ/	आँ ∽ अ	-स/ओँ	अस्सोँ
	बोँ ∽ ब	स/ओँ	बस्सोँ

त/ओँ/ -स/ओँ/प्रत्ययो का द्वित्व (स्त/ओँ त्त/ओँ आदि) क्रमश त एव स पर बल अधिक होने के कारण हुआ है ।

५ २ २ २ ७ विशेषण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय

बीकानेरी में विशेषण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय निम्न लिखित हैं— /-आ/ई/, /-आय/ओं/, / इय/ओं / ए/ / एल/, / ओ/, /-ओन/ / खर/, / ती/ /-णी/, / म/आं/, / लो /, /-व/ओं /

उपर्युक्त प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-आ/ई/	चोंथो ~ चोंथ	-आ/ई	चोंथाई
/-आय/ओ	पर	-आय/ओं	परायों
/ इय/आं/	पच्चीस	इय/ओं	पच्चीसियां
/ ए/	दो	ए	दोए
/ एल/ओं/	एक	एल/ओं	एकेलां
/-आ/	सात	ओ	सातो
	पांच	-ओ	पांचो
/-ओन/	,बीस	-ओन	,बीसोन
	पचास	-ओन	पचासोन
/-खर/	घणों ~ घण	-खर	घणखर
/-ती/	कम	-ती	कमती
/ णी/	तपस्वी ~ तपस्व	-णी	तपस्वणी
/ म/आं/	नो ~ न	म/आं	नमां
/-लों/	हेठो ~ हेठ	-लों	हेठलां
/-व/ओं	नो ~ न	-व/ओं	नवों

५ २ २ २ ८ क्रिया-विशेषण से विशेषण व्युत्पादक प्रत्यय

बीकानेरी में क्रिया विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्न लिखित है—

पर प्रत्यय	क्रियाविशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/आवर/	गरद	-आवर	गरदावर
/ई/	ऊपर	ई	ऊपरी
	चटपट	ई	चटपटी
/बाज/	जल्दी ~ जल्द	-बाज	जल्दबाज

५ ३ व्याकरणिक प्रत्यय विभक्ति प्रत्यय

जिन आबद्ध रूपों के प्रातिपदिक अथवा धातु मे जुडने पर पद' रचना होती हैं उन आबद्ध रूपों को विभक्ति प्रत्यय कहते है। विभक्ति प्रत्ययो द्वारा रचित पदो को मुख्य रूप से तीन वर्गों म वर्गीकृत किया जा सकता है–नामपद क्रियापद, क्रियाविशेषण पद। प्रबन्ध सीमानुसार यहाँ केवल नामपदो की निर्माणकारी विभक्तियो पर ही विचार किया गया है।

जब किसी प्रातिपदिक अथवा धातु मे कोई विभक्ति प्रत्यय लगता है तो उसके द्वारा एक साथ कई व्याकरणिक कोटियो का बोध होता है यथा—

'घोडें नें खूटें सू बाँध दे' वाक्य म /घोडें/ /खूटें/ पद द्रष्टव्य है। इन पदो मे /एँ/ विभक्ति का योग हुआ है। इस विभक्ति के द्वारा एक साथ पुल्लिग, एकवचन विकृत कारक का बोध होता है। बीकानेरी मे कुछ विभक्तिया इस प्रकार की भी है जो विविध व्याकरणिक सम्बन्ध बोध कराने के साथ-साथ व्युत्पादन क्षमता भी रखती है। उदाहरणार्थ/ बीटी/पद प्रस्तुत किया जा सकता है/इस पद म / ई/विभक्ति एक ओर तो स्त्रीलिंग एकवचन, मूलकारक का बोध कराती है एव दूसरी ओर इससे आभूषणार्थक बोध भी होता है।

५ ३ १ सज्ञापदो के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

बीकानेरी प्रातिपदिको म लिंग, वचन, कारक के अनुरूप विभक्तियो का योग होता है एव इनके योग से सज्ञापद निर्मित होते है। जैसा कि गत अध्यायो मे उल्लेख किया जा चुका है कि बीकानेरी म दो लिंग दो वचन एव तीन कारक रूप हैं। इस प्रकार एक सज्ञापद के तीनो कारको में लिंग एव वचन की दृष्टि से

बारह रूप सिद्ध होते हैं – छ पुल्लिंग रूप एव छ स्त्रीलिंग रूप परन्तु यह नियम उन सज्ञापदों के लिए है जिनके स्त्रीलिंग एव पुल्लिंग रूप दोनों वचनों मे प्रयुक्त होते हैं क्योंकि बीकानेरी मे कुछ इस प्रकार के सज्ञापद भी हैं जो या तो केवल पुल्लिंग में प्रयुक्त होते हैं या केवल स्त्रीलिंग मे।

बीकानेरी में सज्ञापदो के विभक्ति रूप भिन्न भिन्न हैं। इस दृष्टि से बीकानेरी के समस्त सज्ञापदो को मुख्य रूप से दो भागों मे विभाजित किया जा सकता है– पुल्लिंग एव स्त्रीलिंग। इनके अतगत विविध अन्त्य वाले सज्ञापदो को उपवर्गों में विभाजित किया जा सकता है। यथा —

५ ३ १ १ पुल्लिंग सज्ञापदो के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

(क) आकारात पुल्लिंग सज्ञा रूप — इस वग के अन्तगत बीकानेरी के सभी आकारान्त पुल्लिंग सज्ञा रूप आते हैं। बीकानेरी मे आकारान्त पुल्लिंग सज्ञा रूपों में निम्नलिखित विभक्तियां लगती है।

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	०	-०
ति० आ० वि० प्र०	॰	-ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-ओं

(ख) ईकारात पुल्लिंग सज्ञा रूप — इस वग के अन्तगत बीकानेरी के सभी ईकारान्त पुल्लिंग रूप आते हैं। इन रूपो म लगने वाली विभक्तिया निम्नलिखित है

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-०
ति० आ० वि० प्र०	०	-य/ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-य/ओं

ईकारान्त सज्ञा मे -आँ -ओं आदि विभक्ति प्रत्यय लगने से पूर्व य श्रुति का आगम हो जाता है।

(ग) ऊकारात पुल्लिंग सज्ञा रूप — इस वग के अन्तगत बीकानेरी के

समस्त ऊकारान्त पुल्लिंग शब्द आते हैं। इनमें लगने वाली विभक्तियाँ निम्न-लिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-०
ति० आ० वि० प्र०	-०	व/ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-व/ओं

ऊकारान्त शब्दों में विभक्ति प्रत्यय जुड़ने से पूर्व 'व' श्रुति का आगम हो जाता है।

(घ) एकारान्त पुल्लिंग संज्ञा रूप — इस वर्ग में बीकानेरी के समस्त एकारान्त पुल्लिंग संज्ञा रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	०	-आ
ति० आ० वि० प्र०	-०	-आँ
स० आ० वि० प्रा०	०	-ओ

(ङ) ओकारान्त पुल्लिंग संज्ञा रूप — इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के समस्त ओकारान्त पुल्लिंग संज्ञा रूप आते हैं। इनमें जुड़ने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-आ
ति० आ० वि० प्र०	-एँ, अँ	-ओं
स० आ० वि० प्र०	-आ	-ओ

(च) व्यंजनान्त पुल्लिंग संज्ञारूप — इस वर्ग के अन्तर्गत बीकानेरी के समस्त व्यंजनान्त शब्द आते हैं। व्यंजनान्त पुल्लिंग संज्ञा रूपों में लगने वाली विभक्तियाँ निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-ओं
ति० आ० वि० प्र०	०	-ओं
स० आ० वि० प्र०	-०	-ओं

५ ३ १ २ स्त्रीलिंग सज्ञापदो के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

(क) आकारात स्त्रीलिंग सज्ञा रूप—

इस वग मे बीकानेरी के समस्त आकारात स्त्रीलिंग सज्ञा रूप आते हैं। इन रूपों म लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-य/ओं
ति० आ० वि० प्र०	०	-य/आं
स० आ० वि० प्र०	०	-य/ओं

(ख) ईकारान्त स्त्रीलिंग सज्ञा रूप—इस वग के अतग त बीकानेरी के समस्त ईकारात स्त्रीलिंग सज्ञा रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	०	-य/आं
ति० आ० वि० प्र०	-०	-य/आं
स० आ० वि० प्र०	०	-य/ओं

(ग) ऊकारात स्त्रीलिंग सज्ञा रूप—इस वग मे बीकानेरी के समस्त ऊकारात स्त्रीलिंग सज्ञा रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	-०	-व/ओं
ति० आ० वि० प्र०	-०	-व/ओं
स० आ० वि० प्र०	०	व/आं

(घ) व्यजनात स्त्रीलिंग सज्ञा रूप—इस वग म बीकानेरी के समस्त व्यजनात

स्त्रीलिंग रूप आते हैं। इनमें लगने वाले विभक्ति प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	०	यॉ/आँ
ति० आ० वि० प्र०	-०	यॉ/आँ
स० आ० वि० प्र०	-०	-यॉ/ओं

स्त्रीलिंग के बहुवचन रूपों मे ओं विभक्ति प्रत्यय लगने से पूर्व य् श्रुति का आगम होता है परन्तु ऊकारान्त बहुवचन मे 'य' के स्थान पर व' का आगम होता है।

५ ३ २ सर्वनाम पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

सर्वनाम पदों के मूल एव तिर्यक् आधार विधायक प्रत्ययों का विश्लेषण अध्याय तीन म किया जा चुका है अत पुनरुक्ति नहीं की गई है। सर्वनाम पदों के सबोधन कारक रूप नहीं होते।

५ ३ ३ विशेषण पदों के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यय

बीकानेरी म कुछ विशेषण पदों में विभक्तिया अपने विशेष्य के लिंग,वचन एव कारक के अनुरूप लगती है एव कुछ विशेषण अपने विशेष्य की विभक्तियों से सर्वथा अप्रभावित रहते हैं। बीकानेरी मे समस्त ओंकारान्त विशेषण पदों में अपने विशेष्य के लिंग वचन एव कारक के अनुरूप विभक्तिया लगती है। ओंकारान्त विशेषणों के विभक्ति प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पुल्लिंग एव स्त्रीलिंग

	एकवचन	बहुवचन
मू० आ० वि० प्र०	०	आ,-यॉ/ओं
ति० आ० वि० प्र०	ॉ	ओं, -यॉ/ओं

बीकानेरी के आकारान्त, ईकारान्त ऊकारान्त एव व्यजनान्त विशेषण अपने विशेष्य के लिंग वचन एव कारक के अनुरूप विभक्तिया ग्रहण नहीं करते अत उन विशेषण पदों में /-०/ विभक्ति का योग स्वीकार किया जा सकता है।

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर बीकानेरी नामपदों के निर्माणकारी प्रत्ययों के अध्ययन को निष्कर्ष रूप मे इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

बीकानेरी म सना एव विशेषण पदा के निर्माणकारी विभक्ति प्रत्यया को निक्ष्प रूप म इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

मू० एव वि० स० वि० रू०, मू० आ०वि० प्र०, ति० आ०वि० प्र० स०आ०वि०प्र०

(१) आकारान्त पु० स० एक० बहु० एक० बहु० एक० बहु०

राजा राजाओं /०/, /०/, /०/, /-आं/, /०/ /-ओं/

(२) ईकारान्त पु० स०

दरजी, दरज्यों /०/, /०/, /०/, -य्/ओं/, /-०/, /य्/ओं/

(३) ऊकारान्त पु० स०

आलू आलवों /०/, /०/ /०/, /-व/ओं/, /०/, /-व/ओं/

(४) एकारान्त पु० स०

दूव दूवा दूवों /०/, /-आ/ /०/ /-ओं/, /-०/ /ओं/

(५) ओंकारान्त पु० स०

छोरों छोरा छोरें /०/, /-आ/, /ए/ /-ओं/, /-आ/, /ओं/

(६) व्यजनान्त पु० स०

घर् घरों /०/, /०/ /०/ /-आं/ /०/, /-ओं/

(७) आकारान्त स्त्री० स०

मा मायों /-०/ /-य/आं/ /०/, /-य/आं/ /-०/ /-य/ओं/

(८) ईकारान्त स्त्री०/स०

छोरी छोरयां /०/ /-य/ओं/ /०/, /-य/ओं/, /-०/, /-य/आं/

(९) ऊकारान्त स्त्री० स०

.बऊ .बवों /०/, /-व/आं/ /०/ /-व/आं/ /-०/ /व/ओं/

(१०) व्यजनान्त स्त्री० स०

पाग पाग्यों /०/ /य/आं/, /-०/ /-य्/आं/ /०/, /-य/ओं/

(११) आ ई ऊ व्य वि

केसरिया,ऊपरी घर/ ०/, /-०/, /०/ /०/ /०/, /०/

गुणातर

(१२) ओंकारान्त वि०

घोंलां, घोली /०/ /आ/(पु०) /इय/ए/ /-ओं/ (पु०) /०/ /आं/

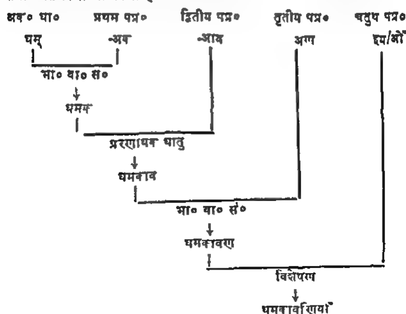
घोंला आदि /-यू/ओं/(स्त्री०) /य/ओं/(स्त्री०) /-य,आं/

बीकानेरी में पूर्व एवं पर प्रत्ययों के अतिरिक्त मध्य प्रत्ययों का योग भी उपलब्ध होता है। मध्य योग के अंतर्गत स्वर विकार ही नव अभिनवता का आधार बनता है। यथा—

संज्ञा रूप	मध्य प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
पग (पर)	अ > आ	पाग
•खड़ (पट तृण)	अ > आ	•खाड़
गीर	ई > आ	•गार
घटी	ए > आ	घाटी
डडो	अ > आँ	डाँडो

विश्लेषित प्रत्ययों के योगक्रम के आधार पर कहा जा सकता है कि कुछ प्रत्यय इस प्रकार के हैं जो एक ओर तो व्याकरणिक कोटियों के विभिन्न अर्थों का बोध कराते हैं तो दूसरी ओर विभिन्न अभिनवाधार भी हैं।

बीकानेरी में मूल शब्द के पश्चात् अधिकतम चार पर प्रत्ययों का योग संभव है। चार पर प्रत्ययों के योग के उदाहरण पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। यौगिक प्रक्रिया के साथ आने वाले चार पर प्रत्ययों का समीकृत संबंध निम्न प्रकार से प्रदर्शित किया जा सकता है—



का प्रयोग दृष्टिगत होता है परन्तु यह प्रयोग भी नवीन नहीं। संस्कृत वैयाकरणों ने भी इसका उल्लेख किया है। पाणिनि के सूत्र तद्धितश्चासर्वविभक्ति[1] में इसी ओर संकेत है। इस सूत्र की व्याख्या करते हुए संस्कृत वैयाकरणों ने लिखा है सर्वा विभक्तिर्यस्मान्न भवति तद्धितान्तोऽव्ययम् स्यादिति ... अर्थात् जिस शब्द के आगे पूरी विभक्ति नहीं आये सदा एकवचन ही आये वह तद्धितान्त शब्द भी अव्यय है। हिन्दी वैयाकरणों ने भी विभक्ति युक्त शब्दों को अव्यय माना है।[2] इसका मूल कारण यह है कि विभक्तियों का प्रयोग होने पर भी अव्यय शब्दों के अव्ययत्व की हानि नहीं होती। हिन्दी वैयाकरणों ने कुछ परिवर्तनशील क्रिया विशेषणों को भी अव्यय माना है एवं उन्हें विकृत अव्यय की संज्ञा दी है[3] परन्तु डॉ० भोलानाथ तिवारी ऐसे शब्दों को मूलतः अव्यय या क्रियाविशेषण न मानकर विशेषण अथवा कृदन्त ही मानते हैं।[4] आलोच्य बोली में भी कुछ ऐसे क्रियाविशेषण हैं जो परिवर्तनशील हैं पर उनका उल्लेख यहाँ नहीं किया गया है क्योंकि इससे अव्ययों की सीमा में दोष आ जाता है।

६.२ अर्थ एवं प्रयोग के आधार पर बीकानेरी अव्ययों को निम्नलिखित रूप से वर्गीकृत किया जा सकता है—

---

१ पाणिनि अष्टाध्यायी १/१/३८

२ क प० कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ १३६

ख प० किशोरीदास वाजपेयी शब्दानुशासन पृ २५१

३ प० कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ ३२५

४ डॉ० भोलानाथ तिवाडी हिन्दी भाषा पृ ६३७

- क्रियाविशेषण
  - मूल क्रि वि
    - स्थान वाचक
    - काल वाचक
    - रीति वाचक
    - परिणाम वाचक
    - स्वीकार निषेध वाचक
    - निश्चय एवं अनिश्चय वाचक
  - व्युत्पन्न क्रि वि
    - संज्ञा से व्युत्पन्न क्रि वि
    - सार्वनामिक केंद्रक रूपों से व्युत्पन्न क्रि वि
    - धातुओं से व्युत्पन्न क्रि वि
    - अव्ययों से व्युत्पन्न क्रि वि
  - संयुक्त क्रि वि
- संबंध सूचक
  - परसर्ग सहित: विकृत संज्ञा रूपों के पश्चात्वर्ती संबंध सूचक अव्यय
  - परसर्ग रहित: संज्ञारूपों के पश्चातवर्ती संबंध सूचक अव्यय
- समुच्चय बोधक
  - समानाधिकरण
    - संयोजक
    - विभाजक
    - विरोध दर्शक
    - परिणाम दर्शक
  - व्यधिकरण
    - कारण वाचक
    - उद्देश्य सूचक
    - संकेत वाचक
    - स्वरूप वाचक
- विस्मयादि बोधक
  - हर्ष सूचक
  - शोक सूचक
  - आश्चर्य सूचक
  - अनुमोदनार्थक
  - तिरस्कार सूचक
  - संबोधन सूचक।
- बलात्मक शब्दांश (निपात)

६ २ १ क्रियाविशेषण

जिस अव्यय शब्द से क्रिया की विशेषता बोधित होती है उसे क्रियाविशेषण कहते हैं।[1] रचनात्मक दृष्टि से बीकानेरी में तीन प्रकार के क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—

१ मूल क्रियाविशेषण २ व्युत्पन्न क्रियाविशेषण ३ संयुक्त क्रियाविशेषण

६ २ १ १ मूल क्रियाविशेषण

जो क्रियाविशेषण दूसरे शब्द से नहीं बनते वे मूल क्रियाविशेषण कहलाते हैं। अर्थ की दृष्टि से बीकानेरी मूल क्रियाविशेषणों को ६ वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

१ स्थान वाचक २ काल वाचक ३ रीति वाचक ४ परिमाण वाचक
५ स्वीकार व निषेध वाचक ६ निश्चय एव अनिश्चय वाचक

६ २ १ १ १ स्थान वाचक

बीकानेरी में दो प्रकार के स्थान वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—
१ स्थिति बोधक २ दिशा बोधक

६ २ १ १ १ १ स्थिति बोधक

बीकानेरी में स्थिति बोधक क्रि० वि० निम्नलिखित हैं
/आगे लारैं ऊपर नीचे बार मांय खनैं सो मनैं माथैं मग सागे/

प्रायोगिक स्थितियां

/बो म्हारे आगैं रैवै/ वह मेरे आगे रहता है /लारैं होसी/ पीछे होगा /ऊपर राख/ ऊपर रखो /नीचे बैठ/ नीचे बैठा /बार नाख/ बाहर फेंको /मांय बैठो है/ भीतर बैठा है /म्हारै घर रै खनैं रैवै/

---

१ प० कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृ० १३६

'मरे घर के पास रहता है' /म्हारे सांमने सूतो है/ 'मेरे सामने सोया है' -/ठमण सोंमने जाया/ 'स्टशन अगवानी हेतु जाना /वेरे साथे रेवे/ 'उसके साथ रहता है /सग छूट्यो/ 'साथ छट गया -/बेरे सागे गयो है/ उसके साथ गया है'

६ २ १ १ १ २ दिशाबोधक

बीकानरी म समस्त दिशा वाचक क्रियाविशेषण अन्य शब्द रूपो स व्युत्पन्न होते हैं अत इनका उल्लेख व्युत्पन्न क्रियाविशेषण म किया गया है।

६ २ १ १ २ काल वाचक

बीकानरी म दो प्रकार के काल वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—
१ समय वाचक २ अवधि वाचक

६ २ १ १ २ १ समय वाचक

बीकानरी म निम्नलिखित समय वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते है—
/आज काल परसू तरसू अबार पछे पैला अजकाले पैलके/

प्रायोगिक स्थितिया

/आज आम जाय/ आज आ जाना /काल दलसां/ कल देखेंगे /परसू मरियो/ परसा मरा /मे तरसू बरसियो / वर्षा नरसा हुई /अबार जा/ अभी जाओ /पछे पत्मो/'बाद म पढेंगे /पैला आ/ पहले आओ /अजकाले कठै रेवे हैं/ 'आजकल कहा रहत हो ? /पैलके जमानो होयो/ परसाल फसल हुई'

६ २ १ १ २ २ अवधि वाचक

बीकानरी म निम्नलिखित अवधि वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध है—
/हाल नत रोज हमेसा/

प्रायोगिक स्थितियां

/हाल गयो कोयनी/ 'अभी तक नही गया /नत आवे / हमेशा आता है' /रोज/ एव /हमेसा/ 'नत वे ही पर्याय हैं।

काल वाचक क्रियाविशेषणों के कालों का बोध परवर्ती वर्तमान, अतीत एव भविष्यत क्रियारूपों के अनुरूप होता है यथा आज है (वर्त०) आज हो (भू०) आज होसी (भवि०)

६ २ १ १ ३ रीति वाचक

बीकानेरी म निम्नलिखित रीतिवाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं–

/धीरै होंलै, धीमे झट जल्दी फुरती/

प्रायोगिक स्थितियां

/धीरै रा/ धीरे खाओ /हौलै चालो / धीरे चलो /धीमे पग/ कम आवाज करके अथवा मन्द्र गति से चलो /झट आ/ जल्दी जाओ /फुरती/ एव /जल्दी/ इसी के पर्याय हैं।

६ २ १ १ ४ परिमाण वाचक

बीकानेरी मे निम्नलिखित परिमाण वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं–

/खूब बोंत वस कम कमती/

/खूब दीया / खूब दिया /बोंत पढ्यों/ बहुत पढ़ा /कम कर/ कम कर' /कम लाए/ कम लाना /कमती घाले/ कम डालना'

६ २ १ १ ५ स्वीकार व निषेध वाचक

बीकानेरी म निम्नलिखित स्वीकार एव निषेध वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—

क– स्वीकार वाचक— /हाँ, अच्छया ठीक चोखो, हू हाँऊ/

ख– निषेध वाचक— /ना मत नई नी कोयनी कोनी ऊहूं/

प्रायोगिक स्थितियां

/हाँ आवरो/ 'हां आ जाओ' /अच्छया पढलें/ 'अच्छा पढलो /ठीक जाए परो/ ठीक चले जाना /चाँनाँ लेइया/ 'अच्छा न आओ' /हूं ना/ 'हां जाओ /हाऊ आयगया/ 'हां आगया' /ना ग्या/ 'मत खाओ /मन रो/ मत रोओ' /नई आवरो/ 'नहा आ जाओ /ओं ना आवैनी/ व न आन' /वाँ घर में कोयना/ 'वह घर म नही है'

६ २ १ १ ६ निश्चय एव अनिश्चय वाचक

बीकानेरी म निम्नलिखित निश्चय एव अनिश्चय वाचक क्रियाविशेषण उपलब्ध होते हैं—

क– निश्चय वाचक— /पक्कायत/ /जरूर/

ख– अनिश्चय वाचक— /सायन/ शायमद/

प्रायोगिक स्थितियां

/वा पक्कायत पडियाँ हैं/ 'वह निश्चय ही गिरा है' /जरूर जा/ निश्चित जाओ /सायन मरग्या/ 'सम्भवत मर गया'

६ २ १ २ व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

बीकानेरी म सज्ञाओं सार्वनामिक के द्रव रूपों, अव्ययों एव धातुओं म प्रत्ययों परसर्गों व अन्य शब्दों के योग म क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते हैं। योगक्रम के आधार पर व्युत्पन्न क्रियाविशेषणों को निम्नलिखित वर्गों म विभक्त किया जा सकता है—

१ सज्ञा से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण
२ सार्वनामिक के द्रव रूपों से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण
३ अव्ययों से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण
४ धातुओं से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

६ २ १ २ १ सज्ञा से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

क– पूर्व प्रत्यय + सज्ञा = व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

सामान्ये म निम्नलिखित पूवप्रत्यया के योग से क्रियाविशेपण व्युत्पन्न होत है—

/प्र न, बे पैलैं तापैलैं, हर, नर/

यौगिक विधान

पूव प्रत्यय	सज्ञा	व्युत्पन्न क्रियाविशेपण
प्र	कारण	प्रकारण
न	घडवों ~ धण्ड	नघडक
नर-	भैं	नरभैं
बे	खटकों ~ खटकें	बेखटकें
बे	मुर/मों	बेमुरो
बैं-	दन	बैंदन
पैलैं	दन	पैलैंदन
तापैलैं-	दन	तापैलैंदन
स	परवार	सपरवार
हर	साल	हर्साल
हर	रोज	हरोज
हर	घडी	हरघडी
हर	वखत	हरवखत
हर	जगैं	हरजगैं

प्रायोगिक स्थितियां

/प्रकारण लडैं/ बिना कारण ही लडता है /नघडक करनों आ/ निघडक होकर करते जाओ /नरभैं होकर जा/ निर्भय होकर जाओ /बेखटकैं

रे"/ निधडक रहो' /बेसुरो गावे"/ 'बेसुरा गाता है' /बे"दन आयो"/ 'उस दिन आया' /पि"ले"दन या तापे"ले"दन आसी/ 'परसो के एक या दो दिन बाद मे आयेगा' /बाढ मे" सपरवार डूबग्यो"/ 'बाढ मे सपरिवार डूब गया' /बो" कलक्तो" सू हूलॉल आवे"/ 'वह कलकत्ता से हूर वय आता है' ।

ख सज्ञा+पर प्रत्यय, परसग, वाक्याश=व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

सज्ञापदों मे निम्नलिखित पर प्रत्ययों परसर्गों, वाक्याशों के योग से क्रिया विशेषण व्युत्पन्न होते हैं—

/-सू, -ऊ", कार -तक, भर/

यौगिक विधान

सज्ञा	पर प्रत्यय परसग, वाक्याश	क्रियाविशेषण
प्रेम	सू	प्रेमसू
ध्यो"न	सू	ध्यो"नसू
जोर	-सू	जोरसू
भाग	-सू	भागसू
दन	ऊ"रो"	दनूगे"
सज्या	-तक	शाम तक
ऊमर भर	भर	ऊमरभर

प्रायोगिक स्थितियाँ

/सब को"म प्रेमसू करो"/ 'सारे काम प्रेम से करो /चीठी ध्यो"न्सू पढ/ चिट्ठी ध्यान से पढो /भागसू बो" बठै" पो"चग्यो"/ भाग्य से वह वहा पहुच गया' /दनूगे" आये/ सवेरे आना' /आखरकार जावणो" पडियो"/ आखिर में जाना पडा /सज्यातक आय जासी/ शाम तक आजायेगा /पसो" ऊमरभर कमायो" पण मरतीटे"म एक पसो"ई को"म को आयो"नी/ उम्र भर धन कमाया पर मरते समय एक पसा काम नहीं आया ।

६ २ १ २ २ सार्वनामिक केन्द्रक रूपो से व्युत्पन्न क्रि विशेषण

बीकानेरी म_पुरुष वाचक (उत्तम पुरुष) निश्चयवाचक (निकटवर्ती व दूरवर्ती) सबध वाचक एव प्रश्न वाचक सार्वनामिक केन्द्रक रूपा म—

/व्वें, म्मँ मूरेँ णँ म्रालेँ वके द मकी बकी ईनेँ/

के योग स स्थानवाचक काल वाचक परिमाण वाचक एव रीति वाचक क्रियाविशेषण वुत्पन्न होते है।

यौगिक विधान

क– सार्वनामिक केन्द्रक रूप+/म्मँ ण मकँ मकारेँ व्वेँ वकी बकेँ बकानी द/=कालवाचक क्रि वि

यौगिक विधान

सर्वनाम	केन्द्रक रूप	आबद्ध अश	व्युत्पन्न क्रि वि	अर्थ
उत्तम पुरुष /हू/	ह	म्मे	हम्मँ	अब
	हे	ण	हण	अभी
	ह	मकँ मकी	हमकँ हमकी	अबकी
		मकानेँ	हमकानेँ	बार
निकटवर्ती /ओँ/	अ	बव	अबव	अब
	अ	बकी बन	अबकी अबवेँ	अबकी
		बवाले	अबवालेँ	बार
सबध वाचक /जको/	ज	द	जद	जब
	ज	ण	जणँ	तब
प्रश्न वाचक /कूण/	क	द	कद	कब

ख– सार्वनामिक केन्द्रक रूप+/ठ/एँ/=स्थानवाचक क्रि वि

सर्वनाम	केन्द्रक रूप	आबद्ध अश	व्युत्पन्न रूप	अर्थ
निकटवर्ती /ओँ/	अ	ठ/एँ	अठेँ	यहाँ

दूरवर्ती /बो/	व		बठ्ठे	वहा
सबंध वा जको	ज	"	जठ्ठे	जहा
प्रश्न वाचक /कुण/	क	"	कठ्ठे	कहा

ग– सार्वनामिक केन्द्रक रूप+ठ/ठीने=दिशावाचक

सर्वनाम	केन्द्रक रूप	आबद्ध अंश	व्युत्पन्न रूप	अर्थ
निकटवर्ती /आ/	अ	ठ/ठीने	अठीने	इधर
दूरवर्ती बो	व	"	वठीने	उधर
सबंध वा /जको/	ज	"	जठीने	जिधर
प्रश्न वाचक /कुण/	क	"	कठीने	किधर

उपर्युक्त रूपों के अलावा दिशावाचक क्रियाविशेषण अथवा संज्ञा रूपों सर्वनामों मे –लें /पासें, नें /लोंनी पासी के योग से भी दिशा वाचक क्रिया-व्युत्पन्न विशेषण होते हैं यथा अठीनलें पासें वठीनलें पासें कठीनलें पास, जठीनलें पासें अठीनलें ला ना वठीनलें लांनी कठीनलें लांनी, जठीनलें लांनी, डावें खांनी जावणे खोनी इयपासा आदि।

घ– सार्वनामिक केन्द्रक रूप+य/यां=रीति वाचक क्रि वि

सर्वनाम	केन्द्रक रूप	आबद्ध अंश	व्युत्पन्न रूप	अर्थ
निकटवर्ती /आं/	अ ~ ई	य/यां	ईयां	ऐसे
दूरवर्ती /वां/	व ~ वी	"	वीयां	वैसे
संबंध वाचक /जको/	ज ~ जी	"	जायां ~ जीयों	जैसे
प्रश्न वाचक /कुण/	क ~ का		कायां	कैसे

प्रायोगिक स्थितियां

/इम्मे आयां है/ 'अब आया है' /इणें जा/ 'अभी जाओ' /घनूं

माईस/ 'अब खाऊगा /बरगा हमर्ं हमकी, हमकाले, अबकी अबकाले अबरे आसी/ वर्षा अबकी वार आयेगी /अठठ बैठ/ 'यहां बैठो /अठ्ठे जा/ 'वहां जाओ /जठठे दीखे बठडे जा/ 'जहां दिखाई दे वही जाओ /कठठे है/ 'कहां है /अठीन दौड्यो/ 'इधर भाग गया /बठीने सू/ 'उधर सोओ /जावे जठीने ई जा/ जिधर चाहो जाओ /कठीन गयो/ किधर गया' /जावण खोनी देख/ 'दाहिनी ओर देखो आदि।

६ २ १ २ ३ प्रत्ययो से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

अव्यय शब्दो मे /-तक, ईज/ के योग से अवधि एव परिधि वाचक निश्चयात्मक व केवलार्थक क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते हैं यथा—

अठै+तक=अठठ तक अठठे+ईज=अठठ ईज

प्रायोगिक स्थितिया

/वो अठठ तक आयग्यो/ वह यहा तक आ गया' /वो अठठे ईज बैठो है/ वह यही बैठा है।

६ २ १ २ ४ धातुओ से व्युत्पन्न क्रियाविशेषण

धातुओ म /ए/ एव पूर्वकालिक /र/ के योग से क्रियाविशेषण व्युत्पन्न होते है। व्यजनात धातुओ मे /ए/ के योग से पूर्व /इय/ का आगम होता है एव स्वरात धातुओ मे नही। आकारान्त व ऊकारान्त स्वरात धातुओ मे /र/ के योग से पूर्व /य/ का आगम होता है। शेष स्वरान्त व व्यजनांत धातुओ मे नही।

यौगिक विधान

धातु		आबद्ध अश	व्युत्पन्न क्रि वि
पढ	/इय/	ए	पढिये
छूट	"	ए	छूटिए

भा	×	-ए	भाए
ला	×	-ए	लाए
पढ	×	र	पढ़र
भा	/य/	-र	भायर
सू	/य/	र	सूयर
पी	×	-र	पीर

प्रायोगिक स्थितिया

/पढिये जा/ 'पढत आओ' /पढर राखिया कर/ 'पढ कर रखा करो' /पाँणी पीर आ/ 'पानी पीकर आओ'।

६ २ १ ३ सयुक्त क्रियाविशेषण

६ २ १ ३ १ द्विरुक्ति मूलक सयुक्त क्रियाविशेषण

क- सज्ञापदो की द्विरुक्ति

/दनन्न घर घर घडी घडी, घडघडियार, हाथोहाथ, बीचोबीच दनोन्न दनरात, स्न्झ सन्ज्या, घरबार/

ख- विशेषणो की द्विरुक्ति

/एक-एक दो दो च्यार-च्यार एकाएक ठीक-ठीक साफ साफ/

ग- क्रियाविशेषणो की द्विरुक्ति

१ स्थानवाचक क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति

/आगें आगें नारें-नारें उपर-ऊपर नीचें-नीचें बार-बार माँय-माँय मटें-मठें, बठें बठें, बठठें-बठठें जठठें-जठठें ग्वनें-ग्वनें/

२ काल वाचक क्रियाविशेषणो की द्विरुक्ति

/आजो-आज, कालो काल रोज रोज हमसा हमसा/

३ रीतिवाचक क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति
/धीरँ धीरँ हौँ लैँ हौ लैँ, धीमँ धीमँ, जल्दी जल्दी, झट झट/

४ परिमाणवाचक क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति
/कम-कम कम-कम कमती कमती/

५ अनुकरणात्मक क्रियाविशेषणों की द्विरुक्ति
/सरासर फटाफट हड़ाहड़ तड़ातड़ दड़ादड़/

प्रायोगिक स्थितियां

/वो बेटा नै चाल्यो घर घर गयो पण कोँ णी बेटी दी कायनी/ व पुत्री के लिए घर घर गया पर किसी ने भी नहीं दी /वैँ बेटैँ नैँ घर घर जोयलियो पण लाधियो कोयनी/ उसने पुत्र को घर घर ढूंढ लिया पर मिला नहीं /तू घड़घड़ियार मत जा/ तुम बार-बार मत जाओ /एकाएक मरग्यो/ अचानक मर गया /लायरैँ बीचोबीच पोँचग्यो/ आग के बीचोबीच पहुंच गया /हाथोहाथ कर/ हाथोहाथ करो /हौँलैँ हौँलैँ चाल/ धीरे धीरे चलो /फटाफट कर/ जल्दी जल्दी करो आदि।

६ २ १ ३ २ दो भिन्न-भिन्न क्रियाविशेषणों का संयोग

/आगैँ लारैँ ऊपर-नीचैँ आँय-बांय अठीन-बठीनैँ काल-परसूं आज-काल, जद कदे/

६ २ १ ३ ३ दो समान क्रियाविशेषणों में /-न/ का प्रयोग
/कदे-न-कदे/ कठैँ-न कठैँ/

६ २ १ ३ ४ संज्ञा+राँ+संज्ञा=संयुक्त क्रियाविशेषण
/हफ्तैँ रो हफ्ते महीनैँ राँ महीनैँ,

६ २ १ ३ ५ अव्यय+रोँ+अव्यय=क्रि वि
/आगैँ रोँ आगैँ, लारैँ रोँ लारैँ/

६ २ १ ३ ६ विशेषण+संज्ञा=क्रियाविशेषण
/एकै साथ, एकै साथै, एकवार,/

६ २ १ ३ ७ विशेषण+विशेषण+पूर्व० का० /कर/=क्रि वि
/एक एककर/

६ २ १ ३ ८ संज्ञा+धातु+ए=क्रि वि
/दनचढ़िये/

६ २ १ ३ ६ विशेषण+तरै=क्रि वि
/चोखीतरैं, म्हाछीतरैं/

प्रायोगिक स्थितियां

/रस्तैं में आगैं-लारैं ध्यो न राख/ रास्ते में आगे-पीछे ध्यान रखना /किताब ऊपर-नीचै मोंय-बार अठीनै बठीनै सबजगैं जोयली पण लाधी कायनी/ पुस्तक ऊपर-नीचे भीतर-बाहर इधर उधर सब जगह ढूंढली पर नहीं मिली' /कदेनकदे आसी/ 'कभी न कभी आयगा /महनैं रोमईनैं आय पांचे/ हर महीने आ पहुंचता है /आग रो आगे रवें/ आगे का आग रहता है' /एकै साथै आयलैं/ एकसाथ आना /थे बठठैं एकएककर आया/ तुम वहां एक एक करके आना /हूं बठठैं दनचढ़िये पोंचियो/ मैं वहां दिन चढ़े पहुंचा' /तू बठठैं चोखीतरैं बैठिये/ 'तुम वहां अच्छी तरह बठना

६ २ २ संबंध सूचक

जो शब्द संज्ञा अथवा संज्ञा के समान प्रयुक्त होने वाले शब्दों के पीछे आकर उनका संबंध वाक्य के किसी दूसरे शब्द के साथ संबंधित करते हैं वे संबंधसूचक अव्यय कहलाते हैं। बीकानेरी में अधिकांश कालवाचक एवं स्थान-वाचक क्रि वि प्रयोग के अनुसार संबंधसूचकता व कालवाचकता का भाव देते हैं। जब वे क्रिया की विशेषता की ओर द्योतित करते हैं तो क्रि वि होते हैं एवं जब

संज्ञा के साथ प्रयुक्त होते हैं अथवा शब्दों में संबंध जोड़ते हैं तो संबंधसूचक अव्यय कहे जाते हैं। प्रयोग तत्र ग्रंथ के आधार पर बीकानेरी संबंधसूचक अव्ययों को दो भागों में विभाजित किया जा सकता है।

१ परसर्ग सहित विकृत संज्ञा रूपों के पश्चातवर्ती संबंध सू॰ अ॰
२ परसर्गरहित विकृत संज्ञा रूपों के पश्चातवर्ती स॰ सू॰ अ॰

६ २ २ १ परसर्ग सहित विकृत संज्ञा रूपों के पश्चातवर्ती संबंध सू॰ अ॰

बीकानेरी में निम्नलिखित अव्यय परसर्ग सहित विकृत संज्ञा रूपों के साथ प्रयुक्त होते हैं—

/मागे लारे पछा ऊपर नीचे सामने रानें नैड़ा, अठठे, बीच बार दूर माय खानी, खातर वास्तें भनामें सवा ∽ स्वाय ∽ स्वा (सिवाय) बना/

उपर्युक्त संबंध सूचकों के पूर्व अधिकांशतः /रें/ एवं /सूं/ परसर्ग का प्रयोग होता है।

६ २ २ २ परसर्ग रहित विकृत संज्ञारूपों के पश्चातवर्ती संबंध सू॰ अ॰

बीकानेरी में निम्नलिखित सं॰ सू॰ विकृत संज्ञा रूपों के साथ प्रयुक्त होते हैं—

/भर तक समेत सरीसों जस्सों/

६ २ ३ समुच्चयबोधक अव्यय

जो अव्यय शब्द एवं वाक्य को दूसरे वाक्य में संयुक्त करते हैं समुच्चयबोधक अव्यय कहलाते हैं। बीकानेरी बोली में इसके दो भेद उपलब्ध होते हैं—

१ समानाधिकरण (समान वाक्यों को संयुक्त करने वाले)
स॰ बो॰ अ॰
२ व्यधिकरण (एक या अधिक आश्रित वाक्यों को संयुक्त करने वाले)
स॰ बो॰ अ॰

६ २ ३ १ समानाधिकरण

समानाधिकरण स० यो० अव्ययों के चार उपभेद किये जा सकते हैं—

१ संयोजक २ विभाजक ३ विरोधदर्शक ४ परिणामदर्शक

६ २ ३ १ १ संयोजक /ओ र ~ अर ~ र/

/हूं ओ र मा पढसां/ /थू र वा जाया/

६ २ ३ १ २ विभाजक /कन, या, के, यास्तां-यास/

/चाए-चाए, ना-ना या-या/

/वा पढियो कन को पढियो नी/ वह पढा या नहीं पढा

/वा आयो या कई केवायो/ 'वह आया या कुछ कहलवाया'

/कम्तां आसी के ठ को आवे नी/ 'या तो आयेंगे या नहीं आयेंगे'

/चाए आया चाए जाया/ 'या तो आओ या जाओ'

/ना तो आयो ना पढियो/ न तो वह आया न ही पढा'

/यास्तों आ यास जा/ या तो आओ या जाओ'

६ २ ३ १ ३ विरोधदर्शक

/पण/

जो शब्दांश दो वाक्यों में पहले का निषेध या परिमिति सूचित करते है विरोधदर्शक अव्यय कहलाते है। बीकानेरी में विरोधदर्शक अव्यय /पण/ है। इसकी प्रायोगिक स्थितियां निम्नलिखित हैं।

/हूं जाईस तो परो पण लारली तू संभालजीये/

मैं चला तो जाऊंगा पर पीछे की तू संभाल लेना'

६ २ ३ १ ४ परिणामदर्शक

बीकानेरी में स्वतन्त्र रूप से परिणामदर्शक अव्यय उपलब्ध नहीं होता अपितु इसके लिए निकटवर्ती सर्वनाम के तिर्यक रूप के साथ /वास्ते/ का प्रयोग किया जाता है अथवा उच्चारण में अल्पकालीन रुकाव से भी इसका बोध होता है यथा—

/वो हम्मे आसी, तू जापरो/ वह अब आयेगा, तुम जाओ'

/वो आयग्यो इण वास्ते [illegible] तो गयो परो/ वह आगया इसलिए मैं तो चला गया।

६ २ ३ २ व्यधिकरण

जब एक वाक्य में एक या अधिक आश्रित वाक्य जिन अव्ययों के योग से जुड़ जाते हैं वे व्यधिकरण समुच्चयबोधक कहलाते हैं। इनके भी चार भेद हैं—

१ कारणवाचक २ उद्देश्यवाचक ३ संकेतवाचक ४ स्वरूपवाचक

६ २ ३ २ १ कारणवाचक

/क्या के कारण/

/हू पढ़सकियो कोयनी क्योंके म्हारे बाप कन्नै पूंजी हो कायनी/

मैं पढ़ नहीं सका क्योंकि मेरे पिता के पास धन नहीं था'

/हू बठै आऊं कोयनी कारण वै मनै देखतै ई बळै/

'मैं वहां नहीं आऊंगा क्योंकि वे मुझे देखते ही जलते हैं।

६ २ ३ २ २ उद्देश्यवाचक

/ताकि जकैसू/

/हू जोरसू बोलू ताकि तनै सुणीजजावै/

मैं जोर से बोलता हू ताकि तुझे सुनाई दे जाय'

/हू पैला सूं ई कैदू जकैसू पछै कोई नइ बोलै/

'मैं पहले ही कह देता हू जिससे बाद में कोई न बोले'

६ २ ३ २ ३ संकेतवाचक

/जे-तो, हालांकि-पण चाए-पण/

/जे तू गयो परो तो थारै-म्हारै बणसी कायनी/

'यदि तू चला गया तो तेरे-मेरे बनेगी नहीं'

/जे तू आवतो तो तूई खायलेवतो/

'यदि तू आता तो तू भी खा लेता'

/हालांकि [redacted] आयो तो हो पण तू गयो परो/

'यद्यपि मैं आया तो था पर वह चला गया'

/चाए तू रै चाए जा पण म्हे तो जासा/

'चाहे तुम रहो चाहे जाओ हम तो जायेंगे'

६ २ ३ २ ४ स्वरूपवाचक /कै, जाणै कोए, जों एं कोई/

/वं कैयो कै म्हारो तो बाल बच्चाई थारै द्वार को चढ़े नी/

'उसने कहा कि मेरा तो बाल बच्चा भी तुम्हारे द्वार नहीं चढ़ेगा

/ग्रैस्यां दीसै जाणं कोए राक्स आयग्यो होवै/

ऐसा दिखाई देता है मानो कोई राक्षस आ गया हो'

६ २ ४ विस्मयादिबोधक अव्यय

इन अव्ययों के द्वारा विविध मनोविकारों या भावों की अभिव्यक्ति होती है—

हर्षसूचक— /आहा, ओहो वारे वा-वा, धन धन, सबास/

शोकसूचक— /ऊं, ओयरे, हेराम, ओयमा, रामराम/

आश्चर्यसूचक— /हूं हैं, क्या, अच्छया ना/

अनुमोदनबोधक— /ठीक हां हामो/

संबोधनसूचक— /ओ अरेरे अरे/

तिरस्कारसूचक— /दर धत, हट दर दट/

६ २ ५ बलात्मक शब्दांश (निपात)

जिन शब्दांशों का कोशात्मक अर्थ नहीं होता पर वे वाक्यान्तर्गत अन्य शब्द रूपों के साथ बलाघातपूर्वक प्रयुक्त होकर अभिनव अर्थों का बोध कराते हैं बलात्मक शब्दांश (निपात) कहलाते हैं।

बीकानेरी में निम्नलिखित बलात्मक शब्दांश (निपात) हैं—

/तों सगे सई ईंज ई बी थके/

इनकी प्रायोगिक स्थितियां इस प्रकार है—

/तों/ यह निपात किसी भी शब्द भेद के साथ प्रयुक्त हो सकता है यथा—रोम नों आसी (सं० नि०) हूं तो आयग्यों (सं० पु०) बकरियों तो मरायों (वि० पु०) अठै तो कोयनी (अ० नि०), पढ़ै तों हैं (कि० नि०)। इससे निश्चय आग्रह का बोध होता है यथा—म्हे तो बठ्ठै जासां (नि०) थे तो जीम जावो (आ०)। इसका प्रयोग प्रश्नवाचकता के रूप में भी होता है यथा—तो हूं आऊ ? प्रत्यक्ष विध्यर्थ में वाक्यान्त में इसका प्रयोग होने पर धमकी का अर्थ

व्यक्त होता है यथा—थू आतो॑। इसके प्रयोग से अनुमान की अभिव्यंजना भी होती है—म्हों बरसूँ रो बेटो तो कोनी हूँ। सकेतार्थक वाक्यों में इसका प्रयोग होता है—थू पढतो तो पास होय जावतो।

/सरी, सई/— ये निपात /तो/ के पश्चातवर्ती है। स्वतन्त्र रूप से इन निपातों का प्रयोग नही होता। जब इनका प्रयोग वाक्यान्त में होता है तो इनमें आग्रह व संभावना की पूर्ति का बोध होता है—आयो तो सरी सद (स० पू०) आया तो सरी सई (आ०)। विरोधदर्शक वाक्यों में इनका प्रयोग /तो/ के पश्चात एवं पण के पूर्व होता है—म्हे आया तो सरी पण पार पड़ी कायनी। भविष्यत्-कालिक क्रियाओं के साथ इनका प्रयोग निश्चय का बोध कराता है—हू आऊलो तो सरी। जा तो सई।

/ईज/— यह निपात किसी भी शब्द के साथ प्रयुक्त होने पर निश्चय एवं अवलाधकता का बोध कराता है यथा—हरियो ईज दोड़सी (नि०) थू ईज आय (अ०)
/ई/—प्रार्थनात्मक वाक्यों में सज्ञा विशेषणादि के पश्चात /ई/ का संश्लिष्ट प्रयोग का होता है—/पनी दे कताबी दे/ सज्ञा, सर्वनामो के साथ इसका प्रयोग होने पर समेनाथकता का बोध होता है यथा— /रावी खायलें/ /खीचड़ो ई खायलें/ द्विरुक्तिमूलक वर्तमानकालिक कृदन्तीय रूपों के साथ इसका प्रयोग होने पर प्रसगानुकूल अर्थों का बोध होता है /पढतां पढतां ई आ/ सूतो सूतो ई मरग्यो/ /सायत्/ के साथ प्रयुक्त होने पर असभावना का बोध होता है सायत् ई आवे /, /सायत ई हासी/

/बी/— यह निपात /ई/ का पश्चातवर्ती एवं हिन्दी /भी/ का स्थानापन्न है। इसमें समेनाथकता का बोध होता है— /थू ई बी आये/ /लूण बी लाणो है/

/धके/— यह निपात अस्तित्वद्योतक है एवं अधिकांशत वाक्यारम्भ में ही इसका प्रयोग होता है, यथा—/धकें धन भूखो मरे/ वाक्य के मध्य में भी इसका प्रयोग होता है पर अन्त में कभी नही। थारे धकें म्हों नै कुण मार सकें/

अध्याय / ७

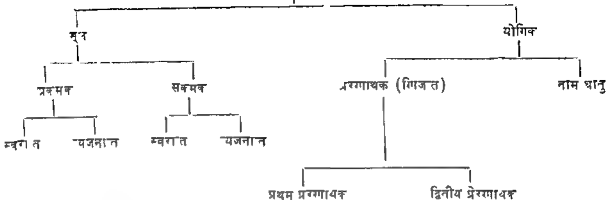
क्रियापद

७ १ जिस पद के प्रयोग मे हम किसी वस्तु के विषय म विधान करत है उसे क्रियापद कहते हैं यथा—/छोरो गयो/ वाक्य म /गयो/ क्रिया पद द्वारा लडके के विषय म विधान किया गया है। बीकानेरी क्रियाओ को प्रयोग के आधार पर निम्नलिखित तीन वर्गों म विभक्त किया जा सकता है—

१ धातु २ क्रियापद सरचना ३ सयुक्त क्रिया

७ २ धातु

जो अश मूलत क्रियापदो के सभी रूपो म विद्यमान रहता है उसे धातु कहते हैं यथा–पढ़ो पढ़ पढ़ियो पढ़सो पढ़लें आदि रूपो म √पढ़ अश सवत्र विद्यमान है अत यह धातु है। प्रयोग एव रचना की दृष्टि म बीकानेरी धातुओ को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है—



उपर्युक्त वर्गीकरण में सर्वप्रथम बीकानेरी धातुओं को मूल एवं यौगिक दो भागों में विभक्त किया गया है। मूल धातुओं को कर्मत्व के आधार पर अकर्मक एवं सकर्मक दो भागों में विभक्त किया गया है। पुनश्च अकर्मक एवं सकर्मक धातुओं को अन्त्य ध्वनि के आधार पर स्वरान्त एवं व्यंजनान्त दो भागों में विभाजित किया गया है। स्वरान्त धातुओं में आ ऊ ऍ ए एवं ओ में अन्त होने वाली धातुएँ ही उपलब्ध होती हैं। इनसे इतर स्वरों में अन्त होने वाली धातुएँ उपलब्ध नहीं होतीं। आक्षरिकता की दृष्टि से सभी स्वरान्त धातुएँ एकाक्षरी हैं। व्यंजनान्त धातुओं में अर्द्धस्वर य व तथा ह म्ह एवं ल्ह को छोड़कर शेष सभी व्यंजनों में अन्त होने वाली धातुएँ उपलब्ध होती हैं। आक्षरिकता की दृष्टि से व्यंजनान्त धातुएँ एकाक्षरी एवं द्व्यक्षरी दो रूपों में उपलब्ध होती हैं। मूलतः बीकानेरी में धातुएँ द्व्यक्षरात्मकता में अधिक उपलब्ध नहीं होतीं एवं सामान्यतः द्व्यक्षरी धातुओं के दोनों स्वर ह्रस्व होते हैं। प्रायोगिक दृष्टि

म बीकानेरी म अधिकाश मूल धातुए म० पु० एक वचन प्रत्यय विध्यर्थ म प्रयुक्त होती है यथा /तू पढ़/ /तू आ/ /तू सू/ /तू रो/ /तू दू/ आदि। इन रूपों म पद रचना की दृष्टि से /०/ प्रत्यय का योग स्वीकार किया जा सकता है। यहा बीकानेरी बोली म बहुलता से प्रयुक्त अकर्मक सकर्मक स्वरात एव व्यजनात मूल धातुए रूप-गठन एव ध्वन्यात्मक गठन के आधार पर प्रस्तुत की जा रही है—

७ २ १ मूल धातुए

७ २ १ १ स्वरात धातुए

अ— √आ

हअऽ— √खा गा चा ठा जा ना वा (गुहाना) भा (रुचिकर लगना) ना जी पी सी सू हूँ नू (पाछना) सू वें र बें सें, द वा जा धो नो पा रा

हअ — √हा, गला~गो उलो~ना नचा~चो

७ २ १ २ व्यजनात धातुए

७ २ १ २ १ एकाक्षरी व्यजनात धातुए

अ/ह √अड् उठ नर

अऽ/ह √ऊग ऊभ ऊर आर आर ओर

अग/ह √कर बढ कत वर रम तुर खज खट खप खस खद्
खुभ गुन गुम खर खर जत गग गर गच गुम् गज
घर घर घन घम घुट घुम चर चर चर चन धग
चप चट चग चुग छर द्रग छा ठर तुन जच जर्
जप जग जड जग जुर जुन भर भन भर भुग
भुर टन टव टुर ठग् ठग रम डर डट् डम ढर
तन् ढुन तव नड तप तल नर नुन नथ ज नप
नन घर धम धुर नग रग पर पर पच रव प पर

पुत पर पन वट पल वठ पग पन भग भम भच

भन मन मग भट मुन मुच मन मज रम् रट रप

रर लम्ब लप जुक लुन मन मज मन मुग हक हट

हम हन हग१ ।

हग१/ह— १ कूच कून कूद काप खीच गूम गूट गूज गूध गूद गाठ घीम घूम घोन जाख चान चाट चीर चूक चूग चूस चूर चाग छुर छोट जाग जीत जीम् जोंग भाख भीख भूम् टूर टाच ठम ठर ठोक डाक डाट डूब तन तीब थूक नीग दूग धाप धूज धोर नीर नेंत न्हान~नाँख पान पीर पीम पूज पूछ पेंर पोंच फाक फान फून फव फान बाच बोन भूक भूज भूल मान माग राज गच मूज मूक सूत् लाग लाद् नीप् सीच सीज् मूग सोच हान हाक ।

७ २ १ २ २ द्वयक्षरी यजनान्त धातुए

अ/हअ/ह— √ अकड अखर अटर अगाग् उकल् उखए् उतर उसए उफग् उबल् उखड उपड उगल उचक् उछर् उजड उथन उधड उलड उफन उछर ।

अ/नउ/ह √ उडीक ।

अऽ/हअ/ह √ टुतर ।

हअ/हअ/ह १ कतर कपन कचर कुचर खुतर बगड पतन पटक फनर चमक् चरक ममन मचक् नमट रगड समज सरक समल लचक भगड ।

नअ/हअ/ह १ मगीग मगोन् ।

७.२.१.२.३ उपर्युक्त व्यंजनान्त धातुओं में आन्तरिक ध्वनि विकार से नाम धातु रूप व्युत्पन्न होते हैं। धातु की ध्वनि में इस परिवर्तन के परिणाम-स्वरूप अ० आ० स० क० हो जाती है। इस आन्तरिक विकार प्रक्रिया में /अ > आ/, /अ > ए/ उ > ओ अ > ओ-ट > ड/ कत् > पच/ /अ > आ/ में परिवर्तन हो जाते हैं। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

८.०.१.२ [illegible] व्यंजनान्त धातुएं

मूल धातु रूप	आन्तरिक ध्वनि विकार	व्युत्पन्न रूप
कट	अ > आ	काट
लद्		लाद्
मर्		मार
बन्		बान्
मट	अ > ए	मेट
घर्	"	घेर्
सद्	"	सेद्
रह		रेह
खुल	उ > आ	खोल्
जुत	"	जोत्
रुप	"	रोप्
घुल्		घोल
छुट	उ > आ-ट > ड	छोड़
फुट		फोड़
बक	अ > ए-क > च	बेच
टट	ट > त-ऊ > आ-ट > र	तार
चट	अ > आ-ट > ड	चाड़

बँध	अ > आँ	बाँध
मड	"	माँड
खच्	"	माँच

७ २ १ २ ई २ द्वयक्षरी व्यंजनान्त धातुएं

द्वयक्षरी व्यंजनान्त धातुओं में आंतरिक ध्वनि विकार केवल उन्हीं धातुओं में होता है जिनका ध्वन्यात्मक लेखन अ/हस/ह अथवा ह्स/हस/ह है एवं इस ध्वनि विकार में केवल द्वितीय स्वर दीर्घ कर दिया जाता है तथा द्वितीय स्वर सदा ही /अ/ होता है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं—

मूल धातुरूप	आन्तरिक ध्वनिविकार	व्युत्पन्न धातु रूप
उकल	अ > आ	उकाल
नकल	"	नकाल
बगाड	"	बगाड
मतर	"	मतार
पसर	"	पसार

७ २ २ यौगिक धातुएं

मूल धातुओं में प्रत्ययों के योग से यौगिक धातुओं की रचना होती है। धातुओं के अतिरिक्त संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि शब्द रूपों में भी प्रत्यय योग से कुछ धातुओं की रचना होती है। अतः यौगिक धातुओं को रचना की दृष्टि से दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—

१ प्रेरणार्थक धातुएं   २ नाम धातुएं

७ २ २ १ प्रेरणार्थक धातुएं

मूल धातुओं में /आ/ एवं /वा/ प्रत्ययों के योग से प्रेरणार्थक धातुएं व्युत्पन्न होती हैं। अर्थ की दृष्टि से प्रेरणार्थक धातुओं के दो रूप उपलब्ध होते हैं—

१ प्रथम प्रेरणार्थक धातुएं २ द्वितीय प्रेरणार्थक धातुएं। प्रथम प्रेरणार्थक धातु द्वारा प्रेरक कर्ता अपने से भिन्न व्यक्ति को क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है यथा /छोरे नें पढा/ वाक्य में प्रेरक कर्ता किसी अन्य व्यक्ति को पाठन क्रिया करने के लिए प्रेरित करता है। द्वितीय प्रेरणार्थक धातु द्वारा प्रेरक कर्ता दूसरे व्यक्ति द्वारा किसी तीसरे व्यक्ति से क्रिया सम्पादित कराने की प्रेरणा देता है यथा छोरे ने पढवाव/ वाक्य में प्रेरक कर्ता किसी दूसरे व्यक्ति के माध्यम से किसी तीसरे से व्यक्ति लड़के को पढवाने के लिए प्रेरित करता है।

बीकानेरी में /आ/ प्रथम प्रेरणार्थक प्रत्यय है एवं /वा/ द्वितीय प्रेरणार्थक प्रत्यय है। धातुओं में प्रत्यय योग से पूर्व आन्तरिक ध्वनि विकार होता है। कुछ धातुएं ऐसी भी हैं जिनमें केवल प्रथम अथवा द्वितीय प्रेरणार्थक प्रत्यय का योग ही उपलब्ध होता है अन्य धातुओं के समान प्रयोगानुरूप दोनों प्रत्ययों का प्रयोग उपलब्ध नहीं होता यथा √गा में केवल प्रथम प्रेरणार्थक प्रत्यय योग ही उपलब्ध होता है गा+आ=गाआ द्वितीय प्रेरणार्थक प्रत्यय का योग उपलब्ध नहीं होता। कुछ धातुएं ऐसी भी हैं जिनके प्रेरणार्थक रूप उपलब्ध नहीं होते यथा √आ √जा √ला √हो आदि। यहां स्वरान्त एवं व्यंजनान्त धातुओं में प्रथम व द्वितीय प्रेरणार्थक धातुओं के उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

७ २ २ १ १ प्रथम प्रेरणार्थक धातुएं

क— स्वरान्त धातुएं

स्वरान्त धातुओं में अधिकतर प्रथम प्रेरणार्थक प्रत्यय का योग उपलब्ध होता है एवं आकारान्त धातुओं में प्रत्यय योग से पूर्व आन्तरिक ध्वनि विकार एवं /व/ श्रुति का आगम उपलब्ध होता है तदनुसार /आ>अ/ में परिवर्तित हो जाता है। √खा एवं √पी धातुओं में प्रेरणार्थक रूपों में /ख/ एवं /प/ का परिवर्तन भी उपलब्ध होता है। यहां कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

मूल धातु	आंतरिक ध्वनि विकार	प्रेरणार्थक प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
जा	अ > अ/ज /व/	आ	जवा
खा	/ख "	आ	खवा
गा	/ग "	आ	गवा
छू	×	आ	छूआ/छुवा
चू	×	आ	चूआ/चुवा
सी		आ	सीआ/सीवा
दे	ऍय "	आ	दआ/दवा
सू	सोग	×	सोग
धा	/धुप	—	धावा/धुपवा

(ख) व्यंजनान्त धातुएँ

व्यंजनान्त धातुओं में प्रथम प्रेरणार्थक प्रत्यय के योग होने पर आभ्यन्तरिक ध्वनि विकार होता है जिसके फलस्वरूप (आ > अ, अ > ए, उ ~ ओ, अ ~ आ/ में परिवर्तित हो जाते हैं। आभ्यन्तरिकता की दृष्टि से प्रथम प्रेरणार्थक प्रत्यय योग होने पर कभी-कभी धातु उपसर्गी रूप ग्रहण करके धातु नया रूप हो जाती है। यहाँ पर प्रेरणार्थक व्यंजनान्त धातुओं के कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

मूल धातु	आंतरिक ध्वनि विकार	प्र. प्र. प्र.	व्युत्पन्न रूप
कट	×	आ	कटा
पढ़	×	आ	पढ़ा
रट	×	आ	रटा
नाच	आ > अ न	आ	नचा
जाग	/ज	आ	जगा
चाट	' /च	आ	चटा
पीस	×	आ	पीसा
माच	×	आ	माचा
नोच	×	आ	नोचा

पुन	उ>आ/पा	आ	पाना
रुप	" /रा	आ	रापा
नुर	" /ना	आ	नोरा
पूछ	×	आ	पूछा
पूध	×	आ	पूधा
फूट	×	आ	फूटा
आड	×	आ	आडा
टाक	×	आ	टाका
बाच	—	आ	बाचा
मक	अ>ए/मे	आ	मका
बेच	' /व	आ	वचा
बध	अ>आँ/बाँ	आ	बाँधा
मग	' /माँ	आ	माँगा

कुछ एकाक्षरी व्यंजनान्त धातुओं में प्रथम प्रेरणार्थक प्रत्यय /आ/ का परिवर्तित रूप /ओ/ भी उपलब्ध होता है एवं प्रत्यय योग में पूर्व /ई>अ/ /ऊ>उ/ आन्तरिक ध्वनि विकार होता है यथा—

मूल धातु	आन्तरिक ध्वनि विकार	प्रथम प्रे प्र	व्युत्पन्न रूप
भीज	ई>अ/भ	आ~ओ	भजो
भीग	/भ		भगा
सूत	ऊ>उ/स	आ~ओ	सुता
रूठ	/र	आ~ओ	रुठा

७ ३ ३ १ २ द्वितीय प्रेरणार्थक धातुएं

द्वितीय प्रेरणार्थक प्रत्यय योग से पूर्व भी आन्तरिक ध्वनि विकार उपलब्ध होता है जिससे धात्वक्षर दीर्घ स्वर /आ > उ/ जैसे ह्रस्व स्वरों में परिवर्तित हो जाते हैं। यहाँ कुछ उदाहरण प्रस्तुत किये जा रहे हैं—

मूल धातु	आन्तरिक ध्वनि विकार	द्वि प्रे प्र	व्युत्पन्न रूप
पढ	×	वा	पढवा
रट	×	वा	रटवा
लग्	×	वा	लगवा
थाम	आ > अ/थ	वा	थमवा
राम	/र	वा	रमवा
चीर	ई > इ /चि	वा	चिरवा
मीच	/मि	वा	मिचवा
मून	ऊ > उ /मु	वा	मुनवा
गूथ	" /गु	वा	गुथवा
सूक	/सु	वा	सुकवा
उसण	×	वा	उसणवा
नतर	×	वा	नतरवा

यहा पर उल्लेख्य है कि बीकानेरी म केवल द्वि प्रे प्र योग होने पर ही शब्द के आदि म स्पष्ट ह्रस्व /इ/ ध्वनि सुनाई पड़ती है अन्यत्र नही ।

७ २ २ २ नाम धातुए

जब सज्ञा विशेषण क्रिया विशेषण आदि म प्रत्यय सलग्न कर धातु रूपो की रचना की जाती है तो उन धातुओ का नाम धातुओ की सज्ञा स अभिहित किया जाता है बीकानेरी म / आ/ नाम धातु व्युत्पादक प्रत्यय है । नाम धातुओ के कुछ उदाहरण निम्नलिखित है—

सज्ञा	+	नाम धातु व्युत्पादक प्रत्यय	=	व्युत्पन्न नाम धातु
सरम्		आ		सरमा सरमाव
कोम ~ कम		"		कमा, कमाव
बात ~ बत				बता
बात ~ बत		ल/आ ~ आव		बतला बतलाव

सर्वनाम		
आप~अप	णा/आ~आव	अपणा, अपणाव
विशेषण		
खोडो	आ~आव	खोडा खोडाव
प्रत्यय		
ऊँट्	आ	ऊंधा
शि वि	ना धा व्यु प्र	व्युत्पन्न नाम धातु
खटखट	आ~आव	खटखटा खटखटाव
बडबड	'	बडबडा बडबडाव

बीकानेरी में कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो क्रिया एवं संज्ञा दोनों ही रूपों में प्रयुक्त होते हैं यथा /जणे जणे री फटकार खोटी लागसी/ तथा /बा बनै फटकारै/ वाक्यों में प्रथम वाक्य में फटकार संज्ञावत प्रयुक्त है एवं द्वितीय वाक्य में क्रिया के रूप में। ऐसी स्थिति में फटकार संज्ञा को मूल आधार मानकर /०/ प्रत्यय योग से नाम धातु व्युत्पन्न स्वीकार की जा सकती है। कुछ उदाहरण इस प्रकार है—

संज्ञा शब्द	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न नाम धातु
थूक	०	थूक
चूक	०	चूक
बधार	०	बधार
पँचोंण	०	पँचोंण

७ ३ क्रियापद संरचना

धातु में तिङ् अथवा कृत् प्रत्ययों के योग से क्रिया पदों की रचना होती है। रचनात्मक दृष्टि से बीकानेरी क्रियापदों को मुख्यतया दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है — १ समापक क्रियापद २ असमापक क्रियापद। समापक क्रियापद वाक्यों में कर्ता कर्म अथवा भाव से अन्वित रहते हैं एवं असमापक क्रियापद संज्ञा विशेषण अथवा क्रियाविशेषणवत प्रयुक्त होते हैं यथा—/छोरी नैंचती ही/ लड़की नाचती थी वाक्य में /ही/ समापक क्रियापद है जिसमें

कर्तृवाच्य अपूर्ण भूत एवं स्त्रीलिंग एक वचन का बोध होता है। परन्तु/ये बातें ... ने ... / वाक्य शब्दों को रोक दिया अन्तर में /बैठो/ समापिका क्रियापद है जो क्रियार्थक प्रयुक्त है। अतः यहाँ समापिका क्रियापदों पर विचार किया गया है तत्पश्चात् असमापिका क्रियापदों पर।

७ ३ १ समापिका क्रियापद

धातु में काल पक्ष वाच्य लिंग वचन एवं पुरुष के अनुरूप तिङ् अथवा कृत प्रत्ययों के योग से समापिका क्रियापदों की रचना होती है। बीकानेरी में तीन काल (वर्तमानकाल भूतकाल भविष्यत् काल) पाँच पक्ष (नित्यार्थ निश्चयार्थ संभावनार्थ सन्देहार्थ आज्ञार्थ) तीन वाच्य (कर्तृवाच्य कर्मवाच्य भाववाच्य) दो लिंग (पुल्लिंग एवं स्त्रीलिंग) दो वचन (एकवचन-बहुवचन) एवं तीन पुरुष (उत्तम मध्यम एवं अन्य) हैं। परन्तु ये सभी कोटियाँ एक दूसरे से स्वतन्त्र नहीं हैं वरन् ये एक कोटि का एक दूसरे से अन्योन्याश्रय सम्बन्ध है यथा— /थारो सुनो हो/ वाक्य में /सुनो हो/ क्रियापद में अपूर्ण भूत निश्चयार्थ कर्तृवाच्य अन्य पुरुष पुल्लिंग एकवचन का बोध होता है। यद्यपि ये समस्त कोटियाँ काल संरचना के अन्तर्गत ही विवेचित हो सकती हैं परन्तु विवेचन की सुविधा एवं स्पष्टता हेतु इन समस्त कोटियों को यहाँ पृथक विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है—

७ ३ १ १ काल संरचना

रचनात्मक दृष्टि से बीकानेरी कालों को दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

१ तिङन्तमूलक काल संरचना
२ कृदन्तमूलक काल संरचना

७ ३ १ १ १ तिङन्तमूलक काल संरचना

बीकानेरी में वर्तमान सामान्य भविष्यत् सामान्य एवं आज्ञार्थक रूपों की रचना धातुओं में तिङ् प्रत्ययों के योग से होती है। तिङ् प्रत्ययान्त क्रियापद-वाक्यान्तर्गत लिंग से प्रभावित नहीं होते अपितु वचन एवं पुरुष से प्रभावित होते हैं। बीकानेरी में उत्तम पुरुष एक वचन के रूपों को छोड़कर शेष स्वरान्त धातुओं

म तिङ प्रत्यय योग से पूर्व /व/ ध्वनि का आगम हो जाता है। बोली म उपलब्ध तिङन्त रूपो की रचना का विवेचन इस प्रकार है—

७ ३ १ १ १ १ वर्तमानकालिक तिङन्त रूप रचना

धातुओ म उ पु ए व मे /ऊ/ उ पु ब व म /ओं/ म पु ए व म /ऍ/, म पु ब व म /ओं/, प्र पु ए व एव ब व म /ऍ/ के योग से वर्तमानकालिक तिङन्त रूपो की रचना होती है। इनकी रूप रचना एव उदाहरण इस प्रकार है—

क रूप रचना

	स्वरान्त धातु √खा		व्यजनान्त धातु √ पढ	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उ पु	खाऊ	खावों	पढू	पढों
म पु	खावें	खावों	पढ़ें	पढ़ों
प्र पु	खावें	खावें	पढ़ें	पढ़ें

ख उदाहरण

/हू ग्रोम्वा खाऊ/ मैं आम खाता हू /ह ग्रोम्वा खावों/ हम आम खाते हैं /तू ग्रोम्वा खावें/ तू आम खाता है /ये ग्रोम्वा खावों/ तुम आम खाते हो /वो ग्रोम्वा खावें वह आम खाता है /वे ग्रोम्वा खावें/ वे आम खाते है /हू कताब पढू/ मै पुस्तक पढ़ता हू आदि।

विविध परिस्थितियो म वर्तमानकालिक तिङन्त रूपो का प्रायोगिक स्थितिया इस प्रकार है—

१ वर्तमान काल की अपूर्णता या नैरन्तर्य का व्यक्त करने के लिए व का नि रूपो का प्रयोग व एव पु के अनुरूप होता है यथा /हरियो न्हावे/ हरि स्नान कर रहा है।

२ प्रश्नवाचक वाक्यो म व का नि रूपो का प्रयोग होता है यथा— हू खाऊ ?

पन्ना ।

विविध परिस्थितियों मे आज्ञार्थक तिङन्त रूपों की प्रायोगिक स्थिति इस प्रकार है–

१ आदर वाचक वाक्यो म बहुवचन के रूपो का प्रयोग एक वचन म भी होता है यथा–/थ आस्रो' / आप आइय' /थ दखिया/'आप पालना ।

२ परोक्ष विधि के रूपो से उपदेश, प्रार्थना, आज्ञा आदि के साथ साथ भविष्यत काल के अर्थ का भी बोध होता है, यथा–/ये भावना आँखा लाया / आप आते हुए आम लाना'

७ ३ १ १ २ कृदन्त मूलक काल सरचना

बीकानेरी में कृत प्रत्यय चार हैं–१ वर्तमान कालिक कृत /त / २ भूत कालिक कृत प्रत्यय/य / ३ भविष्यत कालिक कृत प्रत्यय/ ए /ळ / ये कृत प्रत्यय वाक्यान्तर्गत लिंग एव वचन के अनुरूप विभक्ति प्रत्यय ग्रहण करते हैं पुरुष के अनुरूप नहीं । इन कृत प्रत्ययो के योग म निर्मित कालो को कृदन्तीय काल कहा जा सकता है । ये कृत प्रत्यय वाक्यान्तर्गत प्रयोगानुरूप नहीं केवल लिंग एव वचन द्योतक विभक्ति प्रत्यय ग्रहण कर अर्थ का बोध कराते हैं एव कभी कभी लिंग वचन बोधक विभक्तियों के साथ साथ सहायक क्रियाओं को ग्रहण करते हैं । इस आधार पर कृदन्तीय कालो को दो वर्गों मे विभक्त किया जा सकता है—१ मूल कृदन्तीय काल २ सयुक्त कृदन्तीय काल ।

७ ३ १ १ २ १ मूल कृदन्तीय काल

मूल कृदन्तीय काल वाक्यान्तर्गत सहायक क्रियाओ का योग ग्रहण नहीं करते । अर्थ की दृष्टि से इनके निम्नलिखित भेद उपलब्ध होते हैं–

१ भूत पूर्ण २ भूत अपूर्ण ३ सकेतार्थ अपूर्ण

७ ३ १ १ २ १ १ भूत पूर्ण

√ + भू० का० कृ० प्र/य/+नि० व० बो० प्र० पु० ए०/–

आ /, पु० ब० / आ /, स्त्री० ए० व० / ई /, स्त्री० ब० व०/य आँ/ के योग से पूर्ण निश्चयार्थ रूपों की रचना होती है। पुरुष भेद इस काल के रूपों में नहीं होता। यहाँ यह उल्लेखनीय है कि व्यंजनांत धातुओं में लि० व० बो० प्र० के योग से पूर्व /य/ के स्थान पर /इय/ का योग होता है पर स्त्री० लि० ए० व० के रूपों में /य/ अथवा /इय/ का योग नहीं होता। केवल /-ई/ का ही योग होता है।
इसकी रूप रचना एवं उदाहरण इस प्रकार है—

क रूप रचना

व्यंजनांत धातु पढ़ व स्वरांत धातु आ

(अ) पु० ए० व० धातु पढ़ + इय + ओ=पढ़ियो धातु आ + य + आ =आया

(आ) स्त्री ए० व० धातु पढ़ + ई=पढ़ी धातु आ + ई = आई

(इ) पु० ब० व० धातु पढ़ + इय + आ=पढ़िया धातु आ + य + आ =आया

(ई) स्त्री ब० व० धातु पढ़ + इय + आं =पढ़िया धातु आ + य + ओ आयो

ख उदाहरण

वो पढ़ियो / 'वह पढ़ा' /वा पढ़ी /, राम घरे आयो/ 'राम घर आया' /छोरा अठै आ'/ 'लड़के यहाँ आए' / वे पढ़िया / 'वे पढ़े' /वे पढ़ियो / 'वे पढ़ीं'।

७, ३ १ १ २ १ ७ भूत अपूर्ण

धातु + व० का० कृ० प्र०/त/ + लि० व० बो० प्र० पु० ए० /-ओ/ /पु० ब० / आ/ स्त्री० ए० व० / ई/ एवं स्त्री० ब० वचन / य/आं /के योग से भूत अपूर्ण के रूपों की रचना होती है। पुरुष भेद इस काल के रूपों में नहीं होता। इस रूप संरचना में स्वरांत धातुओं में, लिंग व० बो० प्र० के योग से पूर्व /व/ श्रुति का योग होता है एवं व्यंजनात्मक धातुओं में नहीं। इसकी रूप रचना व उदाहरण इस प्रकार है—

व्यंजनान्त धातु लड़ स्वरांत धातु डू

(अ) पु० ए० व० धातु लड़ + त + आँ = लड़ताँ धातु डू + व् + त् + आँ = डूवताँ

(आ) स्त्री० ए० व० धातु लड़् + त + ई = लड़ती धातु डू + व + ती = डूवती

(इ) पु० ब० व० धातु लड़ + त + आ = लड़ता धातु डू + व + ता = डूवता

(ई) स्त्री ब० व० धातु लड़ + त + य + आँ = लड़तयाँ धातु डू + व् + त् + आँ = डूवताँ

ख उदाहरण

मोतीयाँ लड़ताँ / मोतीलाल लड़ता था / मनडियाँ गायाँ डूवताँ / अमुक नाम का व्यक्ति गायें दुहता था / गटियाँ र सिवनी दा ड री वास्तें लड़ना। गड़्यां और गिरजी चोनों के खातिर लड़ते थे / 'गीता गायों डूवती / गीता गायें दुहती थी।

७ ३ १ १ २ १ ३ संकेतार्थ अपूर्ण

वर्तमूलक भूत अपूर्ण काल के रूपों (पढ़ताँ-पढ़ता आदि) के साथ /-ताँ/ निपात एवं ...नवष भूत अपूर्ण के रूप से संकेतार्थ अपूर्ण की रचना होती है। संकेतार्थ अपूर्ण व भूत अपूर्ण के रूपों में अन्तर उपलब्ध नहीं होता वाक्य गठन में अन्तर उपस्थित होता है यथा—

ओ बी ई दापनाँ अठ पढ़ताँ (वह भी विचार यहाँ पढ़ता था)

ओ बों पढ़ता ताँ फेर क्या होवताँ (वह पढ़ता तो फल क्या होता)

७ ३ १ १ २ ० संयुक्त कृदन्तीय काल

संयुक्त कृदन्तीय काल वाक्यान्तर्गत सहायक क्रियाओं का योग ग्रहण कर विविध कालों का बोध कराते हैं। प्रयोग की दृष्टि से इसके चार भेद उपलब्ध होते हैं—१ वर्तमान कालिक कृत प्रत्यय + सहायक क्रिया। २ भूत कालिक कृत प्रत्यय + सहायक क्रिया। ३ भविष्यत्कालिक कृत प्रत्यय + सहायक क्रिया। ४ पूर्वकालिक कृत प्रत्यय + क्रियासंयोग + सहायक क्रिया।

बीकानेरी म स० क० वा० मे √ ह ७ थ सहायक क्रियाओ का योग रहता है। अत इनकी रूप रचना यहा पहल प्रस्तुत की जा रही है। यहा यह उल्लेख नीय है कि/ह७थ/ सत्तार्थक तथा /हो/ विकार दर्शक धातुओं® के रूप सहायकक्रियाओ के रूप मे प्रयुक्त होते हैं।

१ √ ह वतमान सामा य

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	हू	हो
मध्यम पुरुष	है	हो
अ य पुरुष	ह	है

√ ह भूत सामा य

	पु० ए० व०	पु० ब० व०	स्त्री ए० व०	स्त्री० ब० व०
उत्तम पुरुष	हो था	हा था	हो, थी	हयों ह्यो
मध्यम पुरुष	,,	,,	,,	,
अ य पुरुष	,	,	,,	,,

[सूचना—बीकानेरी मे धातु ह के सपरिवतक धातु थ का भूत सामा य मे सम रूप से प्रयाग हाता है यथा हू हा (मैं था), हूँ थो (मैं था)]

धातु हो भविष्यत सामान्य

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	होस	होसा
म यम पुरुष	,,	,
अन्य पुरुष	होसी	हासी

धातु भविष्यत सभावनार्थक

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	होऊ	होवा
मध्यम पुरुष	हाव	होवा
अन्य पुरुष	हावे	हाव

® /ह ७थ/तथा/ हो/धातुए दो स्वतन्त्र धातुए हैं। एक स्थिति सूचक है दूसरी दशा या विकार सूचक।
(धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास पृ ३०५)

७ ३ १ १ २ २ १ वर्तमानकालिक कृत् प्रत्यय+स क्रि

अर्थ की दृष्टि से व का क प्र +स क्रि के योग से उत्पन्न तीन भेद उपलब्ध होते हैं—१ भूत अपूर्ण २ सदेहार्थ अपूर्ण ३ सभाव-नार्थ अपूर्ण । इनका क्रमिक विश्लेषण इस प्रकार है—

७ ३ १ १ २ २ १ १ भूत अपूर्ण

धातु—व का क प्र मू का पु प्र /-आँ आ/या मू का स्त्री प्र /-ई य/ओ/+धातु के भूत सामान्य क रूपो के योग से भूत अपूर्ण काल की सरचना होती है यथा/हूँ पन्ताँ हाँ/ मैं पन्ता या' म्न पन्त्यों थ्या / हुम पन्ती थी/

७ ३ १ १ २ २ १ २ सदेहार्थ अपूर्ण

धातु+व का क प्र +मू का पु प्र /-ओ-आ/ या मू का स्त्री प्र /-ई य/ओँ/+ धातु ह के भविष्यत सामान्य के रूपो के याग से सदेहार्थ अपूर्ण काल की रचना हाती है यथा /बाँ पढताँ होसी/ 'वह पन्ता होगा' /व पन्त्यों हासी / वे पन्ती होगी ।

७ ३ १ १ २ २ १ ३ समावनार्थ अपूर्ण

धातु + व का क प्र +मू का पु प्र /-आँ-आ/ या मू का स्त्री प्र /-ई य/ओँ/ +धातु के भविष्यत सभावनार्थक के रूपा के योग से सदेहार्थ अपूर्ण काल की सरचना होती है । वाक्यारम्भ में/ होयसक/ या /सायद/ अव्यय का भी प्रयोग हाता है यथा—/सायद हूँ पन्ताँ हाऊ/' शायद मैं पन्ता होऊ /होयसकँ म्हे पन्त्यों होवा/ हो सकता है हम पढती हों ।

७ ३ १ १ २ २ २ भूत कालिक कृत् प्रत्यय +स क्रि

अर्थ की दृष्टि से मू का क प्र+ स क्रि के योग से उत्पन्न चार भेद उपलब्ध होते हैं—१ वतमान पूर्ण २ भूत पूर्ण ३ समावनार्थ पूर्ण ४ सदेहार्थ पूर्ण । इनका क्रमिक विश्लेषण इस प्रकार है—

७ ३ १ १ २ २ २ १ वर्तमान पूर्ण

धातु+मू क क प्र + लि व बो प्र +धातु ह के वतमान

क रूप+धातु ह के वत सा के योग से वतमान पूर्ण काल की रचना होती है। पूर्वकालिक क प्र /र/व/इ/ का प्रयोग वकल्पिक है, यथा /हूँ पढर आया हूँ। 'मैं पढकर आया हूँ।' हू पढियाग्रा ~ पढियाया हू। मैं पढ कर आया हू।

७ ३ १ १ २ २ ४ २ भूतपूर्ण

√+प का क प्र /र/दा/इ/+ धातु के भू का क रूप + √ ह क भू सा के रूपा के योग से भूतपूर्ण काल का द्योतन होता है, यथा /बो पढर गयो थो। 'वह पढकर गया था।' हू आइयायो था। 'मैं जाकर आया था।

इन रूपों के अतिरिक्त धातु+पू क प्र +वतमान भू भ का क कृ +सहायक क्रिया के योग से प्रसगानुरूप क्रिया की पूर्वकालिकता का बोध होता है। इन प्रयोगो में धातु आ, दे, रास जा, ला, का प्रयोग मुख्यत होता है यथा –/जायर आ, आइयो। 'जाकर आओ।' बठैं जावतो आयर देखे। वहा जाते हुए आकर देखना। अठैं राखर द। 'यहा रखकर द।' 'लाये।' लाकर दे। देखयो। 'देखकर गया। यहा /o/ पूर्वकालिक क प्रत्यय का योग है।

७ ३ १ ३ अर्थ

जिस क्रिया व्यापार म विधान की रीति का बोध हो, व्याकरण के क्षेत्र मे उसे 'अर्थ' की सज्ञा से अभिहित किया गया है। वयाकरणा ने अर्थ के निम्नलिखित पाच भेद किय हैं—१ निश्चयार्थ २ विध्यर्थ ३ सभावनार्थ ४ सदहार्थ ५ सकेतार्थ।

७ ३ १ ३ १ निश्चयार्थ

जिस व्यापार द्वारा विधान का निश्चय व्यक्त होता है उसे निश्चयार्थ कहते हैं। इसके द्वारा निश्चय, अवधारण एव अभ्यास का बोध होता है। बीकानेरी बोली म निश्चयार्थ के उपलब्ध रूप निम्नलिखित है—

वतमान सामान्य, भविष्यत सामान्य वतमान अपूर्ण भूत अपूर्ण, वत

मान पूण भूत पूण के र्थो म निश्चय का बोध होता है। इन सभी रूपो का निड तमूलक काल सरचना एव यन्त तमूलक काल सरचना मे विश्ल पण किया जा चुका है। यहां यह विशेष उल्लखनीय है कि बोली म तर-युक्त रूपो के साथ-/ईज/प्रत्यय व निश्चयक सजा के साथ /यड/एँ/ला, सा ई ल्यो / का प्रयोग विशपत होता है यथा—/पऩोसीज/ /पऩ्ला पडेला/भाग्नि।

७ ३ १ ० २ विध्यथ

जब वाक्या तगत कत न परायणता अथवा दायित्व हेतु किसी प्रकार का आदेश हो तो उसे विध्यथ की सज्ञा स अभिहित किया जाता है काय सपादन की प्रत्य त्ता अथवा अप्रत्यक्षता के आधार पर इसके दो भेद होते हैं—१ प्रत्य त विध्यथ २ अप्रत्य त विध्यथ। इनका विश्लपण आख्यातक तिङ तमूलक काल सरचना म किया जा चुका है।

७ ३ १ २ ३ सभावनार्थ व सदेहार्थ

जब व क्या तगत काय यापार की रीती द्वारा काय की सभावना का बोध होता है तो उसे सभावनाथ की सज्ञा दी जाती है। एव जब सदेह का बोध होता है तो उसे सदेहाथ की सज्ञा दी जाती है। इनका विश्लपण काल सरचना म किया जा चुका है।

७ ३ १ २ ४ सकेतार्थ

सकेताथ द्वारा क्रिया की दो घटनाओ की आश्रितता का सकेत मिलता है जिनका पारस्परिक काय कारण सम्बन्ध विवक्षित हो। सकेताथ का भी विश्लपण काल सरचना मे किया जा चुका है।

७ ३ १ ३ वाच्य

बीकानेरी बोली मे भारतीय आय भाषाओ के समान तीन वाच्य प्रयुक्त होते हैं–१ कतृ वाच्य २ कमवाच्य ३ भाववाच्य। क्रिया के जिस रूप स यह बोध होता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्त्ता है तब उसे

कत वाच्य कहते हैं। जिस रूप से यह बोध होता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्म है तब उसे कर्म वाच्य कहते हैं। क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्त्ता अथवा कर्म नहीं है अपितु क्रिया स्वतन्त्र पद्धति ग्रहण करती है तब उसे भाव वाच्य कहते हैं। कत वाच्य में क्रियायें सकर्मक और अकर्मक दोनों हो सकती है परन्तु कर्म-वाच्य तथा भाववाच्य में क्रिया क्रमशः सकर्मक तथा अकर्मक होती है।❀

बीकानेरी बोली में कर्मवाच्य के कुछ रूप परम्परित अर्थात संस्कृत भाषा के अनुरूप कर्मवाच्य में कर्त्ता करण कारक में एवं क्रिया कर्म के अनुरूप ग्रहण करती है यथा–/ म्हूसू रोटी खाईजसी। 'मेरे द्वारा रोटी खाई गई।' / म्हूसू रोटयाँ खाईजसी। मेरे द्वारा रोटियाँ खाई गई। एवं कुछ रूप स्वकीय विकसित प्रवृत्ति लिए हुए हैं अर्थात क्रिया तो कर्म के अनुरूप है पर कर्त्ता का करण कारक में नहीं होता यथा/ हूँ देखियो गयो या म्हेजावाँ में देखा गया। भाव वाच्य के रूप परम्परानुरूप ही है अर्थात कर्त्ता में तृतीया एवं क्रिया अ पु ए व म। यहाँ बोली में काव्य एवं ग्रंथ के अनुरूप उपलब्ध कर्मवाच्य एवं भाव वाच्य के रूप क्रमशः प्रस्तुत किये जा रहे हैं।

७ ३ १ ३ १ तिङन्तीय काल वर्तमान सामान्य

(क) कर्मवाच्य

कत्ता करण कारक + √ + वाच्य बोधक प्र /ईज/* + अ पु बा ति प्र /ऐं/ के योग से या √+ईज+कर्म के अनुरूप व का क्रिया के योग से वर्तमान सामान्य के कर्म वाच्य की रचना होती है यथा–/म्हूसू आँम्बाँ खाईजै/'मेरे द्वारा आम खाया जाता है।/हूँ देखीजूं। 'मैं देखा जाता हूं।' म्हे देखीजो। 'हम ऐसे जाते हैं।' इस रूप में कर्त्ता

❀ कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण, पृ ७४६

* बीकानेरी में कर्मवाच्य एवं भाववाच्य बोधक प्रत्यय/ईज/ का सीधा विकास संस्कृत के कर्म एवं भाववाच्य के रूपों में है यथा स पठ्यते प्रा पढिज्जइ पढीजै।

लुप्त रहता है ।

(ख) भाववाच्य

कर्ता करण कारक + √ + वा बा प्र /ईज/ + प्र पु बा नि प्र /एँ/ के याग से वर्तमान सामान्य भाव वाच्य क रुपो की रचना होती है, यथा– /म्हे मू चालीजे क यानी ।' मेरे ■ चला नहा जाता ।

७ ३ १ २ १ २ भविष्यत् सामान्य

(क) कमवाच्य

कर्ता करण कारक + धातु + वा बा प्र /ईज/ + प्र पु वो ति प्र /सी/म या √ + वा बो प्र /ईज/ + कम के अनुरूप भ सा वि रुप के योग ■ कमवाच्य भविष्यत सामान्य के रूपो की रचना होती है, यथा–/म्हें सू रोटी खाईजसी । मेरे द्वारा रोटी खाई जायेगी ।' हरिय सू ग्राम्बा खाईजसी । हरि से ग्राम खाये जावेंगे ।' हू दखीजीस । 'मैं देखा जाऊंगा । व ग्वाजसी । वे देख जायगे ।

(ख) भाववाच्य

कर्ता करण कारक + धातु + वा बो प्र / 'ईज / + प्र पु बो ति प्र /सी/ के योग से भाव वाच्य भविष्यत सामान्य के रूपो की रचना होती है यथा— / थ सू चालीजसी कोयनी / तेरे से चला नहीं जायेगा ।

७ ३ १ ३ १ ३ भविष्यत् सभावनार्थ

कम वाच्य

कर्ता करण कारक + धातु + वा बो प्र + /ईज/ + जा धातु के प्र पु ति ति ए व के रूपो से या धातु + वा बो प्र /ईज/ + कम के अनुरूप व का ति रुप या धातु + वा बो ■ /ईज/ + जा धातु के व का ति रुप से कम वाच्य भविष्यत सामान्य के रूपो की रचना हाती है यथा / सायद म्हेरू ग्राम्बा खाईज जावें / शायद मरे ग्राम खाए जाय /शायद थे सू पोणी पीज जाव / शायद उससे पानी पिया जाव / /सायद् हूँ देखीजू / शायद मैं देखा जाउ । सायद म्हे देखीजा शायद हम देखे जायें / सायद हूँ देखीज जाऊ । दोनो ही रूप बोली म

प्रचलित है।

७ ३ १ ३ २ कृदन्तीय काल

७ ३ १ ३ २ १ मूल कृदन्तीय काल

७ ३ १ ३ २ १ १ भूत पूर्ण

कमवाच्य

कर्ता करण कारण + धातु + वा वा प्र + / ईज/ + कर्मानुरूप धातु ग के भूतकालिक रूप स या धातु + वा वा प्र /ईज /+ कर्मानुरूप धातु ग के रूपों के योग से कमवाच्य भूतपूर्ण की रचना होती है यथा— /म्हॅसू कताई पढ़ीजगी / मेरे से पुस्तक पढ़ी गई। थॅसू पॉणी पीज ग्यॉ / 'तेरे से पानी पिया गया' /हू देखीजग्यॉ / मैं देखा गया। स्वराघात, बलाघात एव स्वरो के आरोह अवरोह के आधार पर इन रूपो से प्रश्नवाचकता एव आश्चय का भी बोध होता है, यथा–/ थॅसू दूध पीज ग्यॉ ?/ तेरे स दूध पिया गया क्या ? / वॅसू खाईज ग्यॉ/आश्चय/ उससे खा लिया गया।

भाववाच्य

धातु+वा वा प्र /ईज/ +धातु ग कमानुरूप भूतकालिक रूपो से भाव वाच्य भूतपूर्ण की रचना होती है यथा–/थॅसू चालीज ग्यॉ/ तेरे से चला गया।

७ ३ १ ३ २ १ २ भूत अपूर्ण

कमवाच्य

धातु + वा वा प्र /ईज/ + व का क प्र /त/ + कर्मानुरूप भू का लिग वचन बो० प्रत्यय के योग स कमवाच्य भूत अपूर्ण की रचना होती है यथा–/वॅसू मॉम्बा खाईजता / 'उसस आम खाये जाते थे / वॅसू सर्यॉ खाईजत्यॉ कोयनी / उससे सेवें नहीं खाई जाती थी'

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र / ईज/ + व का क प्र /त्/ + मू का प्र / श्रा॑/ के योग से भाव वाच्य भूत अपूर्ण की रचना होती है, यथा म्हसू चालीजतो / मुझ से चला जाता था ।

७ ३ १ ३ २ १ ३ सकेतार्थ अपूर्ण

कमवाच्य

धातु + वा बा प्र / ईज / + √ जा + व का क प्र, / त / + लिंग वचन बो प्रत्यय /श्रा, श्रा ई य श्रा /+/ ता॑/ निपात क योग से सकेतार्थ अपूर्ण कमवाच्य की रचना होती है यथा-/जे वे॑सू श्रा॑म्बा ल्याईज जावता ता ठीक र॑वता॑ / 'यदि उससे आम लाये जाते तो अच्छा रहता'

भाववाच्य

धातु + वा बोध प्र / ईज / + धातु हो + व का क प्र /त/ + /श्रा॑/ +/ता निपात के योग से भाववाच्य सकेतार्थ अपूर्ण की रचना होती है यथा-/जे सीता सू चालीजता॑ हा वता॑ तो श्रठै॑ क्यो ब॑ठती / 'यदि सीता से चला जाता होता तो यहाँ क्या बैठती ।

७ ३ १ ३ २ २ सयुक्त कृदन्तीय काल

७ ३ १ ३ २ २ १ वर्तमानकालिक कृत् प्रत्यय+सहायक क्रिया

७ ३ १ ३ २ २ १ भूत अपूर्ण

कमवाच्य

धातु +वा बाध प्रत्यय /ईज/ + व का क प्र /त/ + लिंग वचन बाध प्रत्यय+था॑ ■ क भूत सामान्य क रूपों के योग स भूत अपूर्ण कमवाच्य की रचना होती है । √ ह का प्रयोग वक्ल्पिक एव बलाघात पर निभर है । यथा /म्हसू राटो साईजती हा / 'मेरे द्वारा रोटी खाई जाती थी / तू देखीजता हा / मैं देखा जाता था ।

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र /ईज/ + व का कृ प्र /त/ + /था/ + धातु हू भूत सामान्य के रूपो के योग से भाववाच्य भूत अपूर्ण की संरचना होती है, यथा-/म्हूँ चालीजतो हो थो/ मुझ से चला जाता था ।

७ ३ १ ३ २ २ १ २ संभावनार्थ अपूर्ण

भाववाच्य

धातु + वाच्य बो० प्रत्यय / + व का व प्र /त/ + लिंग वचन बोध प्रत्यय + धातु हू भविष्यत संभावनार्थ के रूपो के योग से संभावनार्थ अपूर्ण कर्मवाच्य की रचना होती है, यथा/सायद म्हूँसू रोटी खाईजती होव / शायद मेरे से रोटी खाई जाती हो / सायद हू देखीजतो होऊ / शायद मैं देखा जाता होऊ /हो सके म्हे पढ़्या होवो / हो सकता है हम पढ़ते हों ।

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र + व का क प्र + था / + धातु हो भविष्यत संभावनार्थ अ पु के रूपो के योग से भाव वाच्य संभावनार्थ अपूर्ण काल की रचना होती है, यथा होयसके म्हूँसू चालीजतो होव / हो सकता है मुझ से चला जाता हो ।

७ ३ १ ३ २ २ १ ३ संदेहार्थ अपूर्ण

कर्मवाच्य

धातु + वा बो प्र, /ईज/ + व का क प्र /त/ + लिंग वचन बोध प्रत्यय + धातु हो भविष्यत सामान्य के रूपो के योग से संदेहार्थ अपूर्ण कर्मवाच्य की रचना होती है, यथा। / वेंसू क्लाब्यो पढ़ी जती का होमी नी / उससे पुस्तकें पढ़ी नही जाती होगी । / [redacted] देखीजतो होइस / मैं देखा जाता हूगा ।

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र /ईज/ + व का व प्र /त/ + /थो,

+ हो घातु के भविष्यत सामान्य प्र पु के रूपों के योग से भाववाच्य सदेहार्थ अपूर्ण काल की रचना होती है, यथा बँसू चालीजतो होसी/'उससे चला जाता होगा'

७ १ ३ २, २ २ भूतकालिक कृत् प्रत्यय + सहायक क्रिया

७ ३ १ ३ २ २ २ १ सभावनार्थं पूर्ण

कर्मवाच्य

धातु + वा बो प्र / ईज / + धातु ग से भूतकालिक रूपों का सश्लिष्ट प्रयोग + धातु हो से सभावनार्थ पूर्ण कर्मवाच्य की रचना होती है, यथा—/बो सू घर आईजग्या होवें / उनसे घर आया गया हो' हूं देखीजियो होऊ / मैं देखा गया होऊ ।

भाववाच्य

धातु + वा बो प्र /ईज/ + धातु ग के भूतकालिक रूप का सश्लिष्ट प्रयोग + धातु हो के सभावनार्थ रूपों के योग से सभावनार्थ पूर्ण भाववाच्य की रचना होती है, यथा /बँसू चालीजग्या होवें । उससे चला गया हो ।

सदेहार्थ पूर्ण

कर्मवाच्य

धातु + वा० बो० प्रत्यय /ईज/ + धातु ग के भूत का रूप + धातु हो भविष्यत सामान्य के रूपों के योग से सदेहार्थ पूर्ण कर्म वाच्य की रचना होती है, यथा- /म्हेस गलती हायगी होसी । मुझ से गलती हो गई होगी /हूँ दखीजग्यो होस्स / मैं देखा गया हूगा ।

भाव वाच्य

धातु + वा० बो० प्रत्यय /ईज/ + धातु ग के भू का रू + धातु हो भ सा प्र पु के योग से भाववाच्य सदेहार्थ पूर्ण की रचना होती है, यथा -म्हँसू चलीजग्यो होसी / मुझ से चला गया होगा'

७ ३ १ ४ लिंग, वचन, पुरुष

बीकानेरी में लिंग, वचन, पुरुष विधायकरूप निम्नलिखित हैं—

मूलकाल

तिङ्मूलक

पुरुष	वर्तमान सामान्य		भविष्यत् सामान्य	
	एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
उ० पु०	-/ऊ/	-/आँ/	-/ँस/	-/स/आँ/
म० पु०	-/ए/	आँ/	,,	-/स्/आँ/
अ० पु०	-/एँ/	/एँ/	-/स/ई/	-/स/ई/

आज्ञार्थक रूप			भविष्यत् सम्भावनार्थ		
	एक व०	बहु व०		एक व०	बहु व०
प्र० म० पु०	-०	-आँ	उ० पु०	-/ऊ/	-/व/आँ/
प० म० पु०	/ए	/इज/ए/ य/आ/	म० पु०	/व/ए/	-/व/आँ/
			अ० पु०	/व/एँ/	-/व/एँ/

कृत मूलक

लिंग	भूत सामान्य स्वरान्त धातु		भूत सामान्य व्यंजनान्त धातु	
पुंलिंग	/य/आँ/	-/य/आ/	-/इय/आँ/	-/इय/आ/
स्त्रीलिंग	-/ई/	/य/आँ/	-/ई/	-/य/आँ/

७ ३ २ असमापक क्रियापद

धातुओं के पश्चात् व का, भू का, म का एवं पू का प्रत्ययों व नि व का प्रत्ययों के योग से असमापक क्रियापदों (कृदन्त पदों) की रचना होती है। इन क्रियापदों का प्रयोग अन्य पद भेदों (संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि) की भांति होता है। रूप गठन की दृष्टि से असमापक क्रियापदों को दो भागों में विभक्त किया जा सकता है—१ परिवर्तनशील असमापक क्रियापद २ अपरिवर्तनशील असमापक क्रियापद। परिवर्तनशील असमापक क्रियापदों का प्रयोग सामान्यतः संज्ञा अथवा विशेषण की भांति होता है। इस आधार पर इसके तीन वर्ग बनाए जा सकते हैं—

1 भविष्यत कालिक कृत प्रत्यय /ण/ के योग से निष्पन्न सज्ञार्थ या विशेषणार्थक असमापक क्रियापद 2 वर्तमानकालिक कृत प्रत्यय, /त/ के योग से निष्पन्न अपूर्ण विशेषणार्थक असमापक क्रियापद 3 भूतकालिक कृत प्रत्यय /य/इय/ के योग से निष्पन्न पूर्ण विशेषणार्थक असमापक क्रियापद अपरिवर्तनशील असमापक क्रियापदो का प्रयोग सामान्यत क्रियाविशेषणो की भाति होता है । इनके पूर्वकालिकता एव तात्कालिकता के आधार पर दो दो वर्ग बनाए जा सकते हैं । पूर्वकालिक क्रियाविशेषणार्थक असम० क्रियापद 2 तात्कालिक क्रियाविशेषणार्थक असम क्रि ।

७ ३ २ १ परिवर्तनशील असमापक क्रियापद

७ ३ २ १ १ सज्ञार्थक असमापक क्रियापद

√ + भ का क प्र /ण/ + मू श्रा वि प्र /श्रा/ ति श्रा वि प्र /ऍ/ के योग मे पुलिग सज्ञार्थक असम क्रि की रचना होती है । स्त्री में इन रूपो की रचना नही होती । कुछ उदाहरण इस प्रकार है–थारै पढ़णे मे कई फायदा कायनी । बठै थारो जावणों ठीक रैसी । वहा तुम्हारा ठीक रहेगा । वहा तुम्हारा जाना ठीक रहेगा थारै जावणे मे कई फायदो कोयनी । तुम्हारे जाने मे कोई फायदा नही है ।

७ ३ २ १ २ अपूर्ण विशेषणार्थक असमापक क्रियापद

√ + /इ/ विवरण + भ का क प्र /ण/ + मू श्रा वि प्र /श्रो/ति श्रा वि प्र /ए/ के योग से पुलिग विशेषणार्थक अ स क्रि की रचना होती है । यथा-/ छोरो पढणियो होवणो चईजे । लडका पढने वाला होना चाहिये ।' पढणिया छ रा कदे फेल को होवैनी । पढने वाला लडका कभी फेल नही होता ।

७ ३ २ १ ३ अपूर्ण विशेषणार्थक असमापक

धातु+य का क प्र /त/+लि व बो प्र,/श्रा, श्रा, ई, य/ श्रो/ के योग मे अपूर्ण विशेषणार्थक असमापक क्रियापद स्पष्ट होते हैं, यथा/बटते छोरे न बचा। 'जलते लडके को बचाओ ।

७ ३ २ १ ४ पूर्ण विशेषणार्थक असमापक क्रियापद

धातु + भू का क प्र /य्/इय्/ + स्वार्थक प्रत्यय /ओ/ड/ + लिंग वचन बो० प्रत्यय के योग से पूर्ण विशेषणार्थक अस० क्रिया की रचना होती है यथा—/गोमियोडी दाळ मत खाए/ 'गिरी दाल मत खाना' इसी प्रकार तळियारा, दळियोडी खायोडी, मारियोडी आदि ।

७ ३ २ २ अपरिवर्तनशील असमापक क्रियापद

७ ३ २ २ १ पूर्वकालिक क्रियाविशेषणार्थक असमापक क्रियापद

धातु+पूर्वकालिक कृतप्रत्यय/र/के योग से पूर्वकालिक क्रिया विशेषणार्थक असमापक क्रियापदों की रचना होती है । इसका रूप गठन द्विप्रकारीय है—१ धातु+पू का क प्र /र/ २ धातु +लिं व बो परॉं (पु ए व), परी (स्त्री एक वचन), परा (पुरुष बहु वचन) + परयां (स्त्री बहु वचन) + पू का क प्र /र/ दोनों ही प्रयोग बोली में समरूपेण प्रचलित है, यथा–/थू पढ परॉंर आए, थू पढर आए । तू पढकर आना । हू बठे देखपरीर, देखर आई हू / मैं यहां देखकर आई हूं ।

७ ३ २ २ २ तात्कालिक क्रियाविशेषणार्थक असमापक क्रियापद

धातु + वर्तमानकालिक कृत प्रत्यय /त/ + मू प्रा वि प्र /ए/ + तात्कालिक कृत प्रत्यय /ई/ के योग से तात्कालिक क्रिया विशेषणार्थक असमापक क्रियापद की रचना होती है, यथा–/जएरर डसतेई मरग्यॉं सांप के डसते ही मर गया ।

७ ४ सयुक्त क्रिया

सयुक्त क्रियाओ मे मुख्य क्रिया का कोई कृद त रहता है और सहकारी क्रिया के काल के रूप रहते हैं । जहा कृदन्त की क्रिया मुख्य होती है और और काल की क्रिया उस कृद त की विशेषता सूचित करती है, वहाँ दोनो को सयुक्त क्रिया कहते हैं । यह बात वाक्य के अथ पर अवलबित रहती हैं । इसलिए सयुक्त क्रिया का निश्चय वाक्य के अथ पर से करना चाहिए।※ वस्तुत सयुक्त क्रियाओ मे अभिप्राय ऐसी दो क्रियाओ के सश्लिष्ट योग स हैं जिनका योग होने पर एक क्रिया मुख्य एव दूसरी गौण हो जाती है तथा अभिनव अथ की अभि यक्ति होती है । बीकानेरी सयुक्त क्रियाओ को योग क्रम एव प्रयोग के आधार पर दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं । १ मुख्य क्रियापद + गौण क्रियापद=सयुक्त क्रिया २ कृद तीय रूप+सहकारी क्रिया=सयुक्त क्रिया ।

७ ४ १ मुख्य क्रिया + गौण क्रिया = सयुक्त क्रिया

बगाड	दी (भू का)	बगाडदी
भूल	जा (वि प्र वि)	भूल जा
के	-राख (प्र वि)	केराख
डूब	-ग्यो (भू का)	डूबग्यो
फूट	ग्या (भू का)	फूटग्या
मन	ग्यो (भू का)	मनग्यो

७ ४ २ कृद तीय रूप+सहकारी क्रिया = सयुक्त क्रिया

पढ़ता	जा	पढ़ता जा
देखता	रै	देखता रै
सुणता	जा	सुणता जा
जावण	लागी	जावण लागी
गुमण ण न	दे	गुमदे

※ कामताप्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण, पृ० 310 ।।

अध्याय / ८

वाक्य सरचना

८ १ सामान्य विवेचन

वाक्य आकाक्षा, योग्यता एव सन्निधि स युक्त पदों का सघात है, वह अविभाज्य, एकार्थक व पूर्ण भावाभिव्यजक भाषायी चरम इकाई है। भारतीय व्याकरण शास्त्र में सम्भवतसवप्रथम वार्तिककार ने वाक्य के स्वरूप का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार 'आख्यात साव्ययकारकविशेषण वाक्यम्। एकतिङ*' अर्थात साव्यय, सकारक, सकारकविशेषण और सक्रियाविशेषण आख्यात वाक्य है। जैमिनि के अनुसार वह पद समूह वाक्य है जो एकार्थक हो और विभक्त दशा मे साकाक्ष हो—'अर्थैकत्वादेक वाक्य साकाक्ष चेद् विभागे स्यात*' कालान्तर म वाक्य-स्वरूप-प्रतिपादन के सन्दभ मे आठ मतवाद प्रचलित हुए जिनका भर्तृहरि ने निम्नलिखित कारिकाओ म निर्देश किया है।

> आख्यातश ब्द सघातो जातिसघात वर्तिनी।
> एकोऽनवयव शब्द क्रमो बुद्ध्यनुसहृति ॥
> पदमाद्य पृथकसर्वपद साकाक्षमित्यपि।
> वाक्य प्रति मतिर्भिन्ना बहुधा न्यायवादिनाम् ॥*

भर्तृहरि द्वारा उक्त कारिका में निर्दिष्ट आठ मतवादों के अनुशीलन से विदित होता है कि तत्काल मे वाक्य के स दर्भ मे अखण्ड पक्ष एव खण्ड पक्ष दो वाद प्रचलित थे जिनका पुण्यराज ने भी उल्लेख किया है।*

---

1 वार्तिक, महाभाष्य 2/1/1/
2 जैमिनि : मीमासा सूत्र 2/1/46
3 भर्तृहरि वाक्यपदीयम्
4 डा रामसुरेश त्रिपाठी सस्कृत व्याकरण दर्शन पृ 334

७.४ संयुक्त क्रिया

संयुक्त क्रियाओं में मुख्य क्रिया का कोई कृदन्त रहता है और सहकारी क्रिया के काल के रूप रहते हैं। जहाँ कृदन्त की क्रिया मुख्य होती है और और काल की क्रिया उस कृदन्त की विशेषता सूचित करती है, वहीं दोनों को संयुक्त क्रिया कहते हैं। यह बात वाक्य के अर्थ पर अवलंबित रहती है। इसलिए संयुक्त क्रिया का निर्णय वाक्य के अर्थ पर से करना चाहिए।* वस्तुतः संयुक्त क्रियाओं से अभिप्राय ऐसी दो क्रियाओं के संश्लिष्ट योग से है जिनका योग होने पर एक क्रिया मुख्य एवं दूसरी गौण हो जाती है तथा अभिनव अर्थ की अभिव्यक्ति होती है। बीकानेरी संयुक्त क्रियाओं को योग क्रम एवं प्रयोग के आधार पर दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं। १. मुख्य क्रियापद + गौण क्रियापद = संयुक्त क्रिया २. कृदन्तीय रूप + सहकारी क्रिया = संयुक्त क्रिया।

७.४.१ मुख्य क्रिया + गौण क्रिया = संयुक्त क्रिया

बगाड़	दी (भू. का.)	बगाड़दी
भूल	-जा (वि. प्र. वि.)	भूल जा
के	-राख (प्र. वि.)	कै'राख
डूब	-ग्यो (भू. का.)	डूबग्यो
कूद	ग्यो (भू. का.)	कूदग्यो
मल	ग्यो (भू. का.)	मलग्यो

७.४.२ कृदन्तीय रूप + सहकारी क्रिया = संयुक्त क्रिया

पढ़ताँ	जा	पढ़ताँ जा
देखतां	रै	देखतां रै
सुणतां	जा	सुणतां जा
आवण	लागी	आवण लागी
गुमण-न	द	गुम'द

---

* कामताप्रसाद गुरु : हिन्दी व्याकरण, पृ० 310 11

अध्याय / ८

वाक्य सरचना

८ १ सामान्य विवेचन

वाक्य आकाक्षा, योग्यता एव सन्निधि से युक्त पदो का सघात है, यह अविभाज्य, एकाथक व पूर्ण भावाभिव्यञ्जक भाषायी चरम इकाई है। भारतीय याकरण शास्त्र मे सभवतसवप्रथम वातिककार ने वाक्यके स्वरूप का प्रतिपादन किया। उनके अनुसार 'आख्यात साव्ययकारकविशेषण वाक्यम्। एकतिङ*' अथात साव्यय, सकारक, सकारकविशेषण और सक्रियाविशेषण आख्यात वाक्य है। जमिनि के अनुसार वह पद समूह वाक्य है जो एकायक हो और विभक्त दशा म साकाक्ष हो —'अर्थैकत्वादक वाक्य साकाक्ष चेद् विभागे स्यात*' कालान्तर मे वाक्य-स्वरूप-प्रतिपादन के स दभ मे आठ मतवाद प्रचलित हुए जिनका भत हरि ने निम्नलिखित कारिकाओ म निर्देश किया है।

> आख्यातशब्द सघातो जातिसघात वर्तिनी।
> एकोऽनवयव शब्द क्रमो बुद्धयनुसहृति ॥
> पदमाद्य पृथक्सवपद साकाक्षमित्यपि।
> वाक्य प्रति मतिभि ना बहुधा यायवादिनाम् ॥*

भत हरि द्वारा उक्त कारिका म निर्दिष्ट आठ मतवादो के अनुशीलन से विदित होता है कि तत्काल मे वाक्य के स दभ मे अखण्ड पक्ष एव खण्ड पक्ष दो वाद प्रचलित थे जिनका पुण्यराज ने भी उल्लेख किया है।*

1 वार्तिक महाभाष्य 2/1/1/
2 जमिनि मीमासा सूत्र 2/1/46
3 भतहरि वाक्यपदीयम्
4 डा रामसुरेश त्रिपाठी सस्कृत व्याकरण दशन पृ 334

–1 बाँ जासी (सामान्य) 2 बाँ जासी (आश्चर्य)
3 बाँ जासी (प्रश्न) 4 बा जासी (खेद) 5 बा जासी (मुद्रायुक्त घृणा)
6 बाँ जासी (निश्चय)

उपर्युक्त उदाहरण में प्रथम वाक्य में सुरलहर की दृष्टि से दोनों पदों की स्थिति सामान्य है। द्वितीय वाक्य में /बाँ/ पद की स्थिति आरोहमूलक व बल युक्त एवं /जासी/ पद की अवरोहमूलक व बल रहित है। जिससे आश्चर्य का भाव व्यक्त होता है। तृतीय उदाहरण में /सी/ की स्थिति आरोहमूलक एवं बलपूर्ण है जिससे प्रश्नवाचकता का बोध होता है। चतुर्थ उदाहरण में /सा/ की स्थिति अवरोहमूलक है एवं बल रहित है जिस से खेद का भाव अभिव्यक्त होता है। पंचम उदाहरण में /आ/ एवं /सी/ दोनों की स्थिति अवरोह मूलक एवं बलात्मक है। इसके उच्चारण में वक्ता मुद्रा को भी व्यक्त कर लेता है इससे घृणा का भाव अभिव्यंजित होता है षष्ठ उदाहरण में /सी/ की स्थिति अवरोहमूलक है। इससे निश्चय का बोध होता है।

इस उदाहरण में सुर लहर के साथ साथ वक्ता की मुख मुद्रा भी विविध प्रकारीय भावों की अभिव्यक्ति में सहायक होती है।

८ ३ वाक्य वर्गीकरण

रचनात्मक दृष्टि से बीकानेरी वाक्यों का निम्नलिखित प्रकार से वर्गीकरण किया जा सकता है- 1 साधारण वाक्य 2 मिश्रवाक्य 3 संयुक्त वाक्य

८ ३ १ साधारण वाक्य

क्रियापद की व्यक्तता व अव्यक्तता के आधार पर इसके दो भेद बनाए जा सकते हैं–1 अव्यक्त क्रिया वाले साधारण वाक्य 2 व्यक्त क्रिया वाले साधारण वाक्य।

८ ३ १ १ अव्यक्त क्रिया वाले साधारण वाक्य

इस प्रकार के वाक्य आह्वानवाची होते हैं। इस प्रकार के वाक्यों में मात्र उद्देश्य ही व्यक्त रहता है विधेय नहीं। इसके दो उपभेद किये जा सकते हैं—

1 सम्बोधन पद रहित संज्ञा वाले आह्वान वाक्य

■ सम्बोधन पद सहित सना वाले आह्वान वाक्य

८ ३ १ १ १ सम्बोधन पद रहित सज्ञा वाले आह्वान वाक्य

इस प्रकार के वाक्या में दूरस्थ व्यक्ति के आह्वान म सुर लहर की स्थिति आरोह मूला हाती है तथा श्रोता की प्रतिक्रिया /आयो/ /हो/ होती है यथा–/मदन/ /हो आया/ दूरस्थ व्यक्ति के आह्वान मे बल की स्थिति अन्त्य वर्णों पर हाती है। निकटस्थ व्यक्ति के आह्वान म सुरलहर की स्थिति अवरोह मूला एव बल रहित हाती है तथा श्राता की प्रतिक्रिया /हूँ, हो ँ/ होती है, यथा–/मदन/ /ह, हा ँ/

८ ३ १ १ २ सबोधन पद सहित सज्ञा वाले आह्वान वाक्य

इस प्रकार के वाक्यों मे /आ/, /आँ/, /ए/ /एँ/ /अरे/, /रे/ सम्बोधन पदों का सना प द के साथ प्रयोग होता है । /अरे/ का प्रयोग वाक्य के प्रारम्भ में तथा /रे/ का प्रयाग वाक्य के अन्त में होता है यथा /अरे/ मदन/ /मदन रे/ शेष /आ/ /आँ/ /ए/ /एँ/ का प्रयाग निकटस्थता एव दूरवर्तिता पर आधृत है । यदि निकटवर्ती का आह्वान करना या पुकारना होगा ता /आ/ /ए/, /आँ/ /एँ का प्रयोग पहले होगा । साथ ही /आ, आँ, ए, ए/ का प्रयाग श्राता पर आधृत है । जो इस प्रकार यदि श्रोता एक बार मे प्रत्युत्तर द देना है ता /ओ/ /एँ/ का ही प्रयोग होता है पर श्रोता के प्रत्युत्तर न देने पर द्वितीय बार /आ/ /ए/ का प्रयोग हाता है । /ओ/ का प्रयाग पुलिग के लिए एव /ए/ का प्रयाग स्त्रीलिंग के लिए होता है यथा /आँ मदन/ /हूँ/ /आँ मदन ओ मदन /हूँ/ एँ सीता ए सीता हूँ/ दूरस्थ व्यक्ति के आह्वान मे /आँ, ओ, एँ ए का प्रयोग पश्चातवर्ती हाता है, यथा /सीता ए/

८ ३ १ २ व्यक्त क्रिया वाले साधारण वाक्य

व्यक्त क्रिया वाले वाक्यो के ये प्रकार है—1 मात्र क्रिया वाले

वाक्य 2 आज्ञार्थक प्रत्ययान्त वाक्य 3 सन्देहार्थक वाक्य 4, प्रश्नवाचक वाक्य 5 निषेधात्मक वाक्य 6 बलात्मक वाक्य।

८ ३ १ २ १ मात्र क्रिया वाले वाक्य

इस प्रकार के वाक्यो मे मात्र एक ही क्रियापद द्वारा आज्ञा, आग्रह घृणा, तिरस्कार आदि भावो की व्यंजना होती है। यथा /पढ/ क्रियापद के सामान्य प्रयोग से प्रेरणा, बलात्मक प्रयोग से प्रत्यक्ष आज्ञा, द्विरुक्ति मूलक प्रयोग से त्वरितता आदि भाव व्यक्त होते हैं।

८ ३ १ २ २ आज्ञार्थक प्रत्ययान्त वाक्य

अर्थ एव सुर लहर के आरोह-अवरोह के आधार पर इसके तीन भेद है—1 धीर सुरान्त / —▷ / वाक्य 2 अवरोही सुरान्त वाक्य 3 अवरोही +1 वाक्य। इनका विश्लेषण इस प्रकार है—

१ धीर सुरान्त /—▷/ वाक्य

इस प्रकार के वाक्य सामान्य व प्रत्यक्ष आज्ञा का द्योतन करते है जसे / तू घर जा / तुम घर जाओ / तू अठे आ/ तू थारा डूरा1 भर नै।

२ अवरोही सुरान्त वाक्य

इस प्रकार के वाक्य आशीर्वादात्मक होते हैं, यथा—ठाकोरजी थारों भलो कर / भगवान तुम्हारा भला करे। भगवान तने बेटो दव।

1 'डूरा' यह शब्द पेट का वाचक है। /ड़₀/ ध्वनि बीकानेरी मे पाच छ शब्दो मे ही प्रयुक्त होती है। यह ध्वनि मूर्द्धन्य /ड/ की भाति और न उत्क्षिप्त /ड/ की भाति उच्चरित होती है बल्कि इसका स्वतन्त्र अस्तित्व है जिसका उच्चारण वर्त्स्य है।

३ अवरोही + १ अंत वाले वाक्य

इस प्रकार के वाक्य प्रार्थनात्मक, आग्रह वाचक या अनुनय-विनय वाचक होते हैं /दवाई लें बेटा/ । लेलें/ दवाई ले लो बेटा ।

८ ३ १ २ ३ सन्देहार्थक अव्यय युक्त वाक्य

/सायद्/, यास्तों—यास/ /चाएस्तों—चाए/, /कॅस्तों—कॅस/ प्रत्ययों के प्रयोग से सन्देहार्थक वाक्य सृष्ट होते हैं । सुर-सरणि प्रयोग पर निर्भर है यथा—/सायद बों गयों/ /यास्तों बों गयों परों होसी यास हएँ आसी ।

८ ३ १, २ ४ प्रश्नवाचक वाक्य

मालाव्य बोली में प्रश्नवाचक वाक्यों की रचना दो प्रकार से होती है । प्रथम सुरलहर के प्रयोग के आधार पर एवं द्वितीय प्रश्नवाचक अव्ययों का प्रयोग करके प्रश्नवाचक वाक्य सृष्ट होते हैं ।

क सुरलहर के प्रयोग के आधार पर

इसमें भी सुरलहर के प्रयोग के आधार पर सामान्य प्रश्न निराशात्मक प्रश्न, आश्चर्यात्मक प्रश्न एवं घृणात्मक प्रश्न वाचक वाक्य सृष्ट होते हैं । यथा—/बो आयों ? / वह आया /बो आसी ? / वह आयेगा (सामान्य प्रश्न) बो आया ? बों आसी ? (निराशात्मक वाक्य) बो आयों ? बों आसी ? (आश्चर्यात्मक वाक्य) बो आया ? बो आसी ? (घृणात्मक वाक्य) उक्त सारे वाक्य रचनात्मक दृष्टि से एक होते हुए भी प्रयोजन सुर प्रयोग एवं अर्थ की दृष्टि से पृथक हैं । प्रथम वाक्य में सुर लहर की स्थिति अन्त्य पद में आरोहमूला है । द्वितीय वाक्य में अन्त्य पद की स्थिति वक्रारोहित एवं अवरोहमूला है । तृतीय वाक्य में अन्त्य पद की स्थिति वृ...

सहित एव आरोहमूला है । चतुथ वाक्य म प्र त्य पद की स्थिति विकत मुख मुद्रा से अभिव्यक्त होता है एव त्वरितता से युक्त है।

ख प्रश्नवाचक अव्यय युक्त वाक्य

प्रयोग के आधार पर इसके तीन भेद उपलब्ध होते हैं । 1 /को नी, कोयनी, क्या/ अ ययो से युक्त वाक्य । 2 प्रश्नवाचक सवनामो व विशेषणो से युक्त वाक्य । 3 प्रश्नवाचक क्रिया विशेषणो से युक्त वाक्य ।

अ /को नी कोयनी, क्या/ अव्ययो से युक्त वाक्य

निषेधात्मक प्रश्नवाचक वाक्यो मे /को—नी/ /कोयनी/ का एव सामा य प्रश्न के /क्या/ का प्रयोग होता है । अ त्य पद की स्थिति आरोह मूला एव पूववर्ती क्रिया बलात्मक होती है यथा– /वो॑ आया॑ कोयनी ? वह आया नही क्या ? वो॑ को जो॑वनी ? वह नही जायेगा क्या ? थू नाईस क्या ? तू जाएगा क्या ?

ब प्रश्नवाचक सवनामो एव विशेषणो से युक्त वाक्य

इसमे /कसा॑क/ 'कसा' प्रकार वाचक,/कतो /कितना (परिणाम वाचक) /कत्ता/ कितने (सख्या वाचक) आदि विशेषणों का प्रयोग होता है । अ त्य सुर की स्थिति अवरोहमूला है । कसा॑क कप०ा॑ चइज॑ । कसा कपडा चाहिए' कतो॑ कपडो॑ चइज । कितना कपडा चाहिए । आदि । प्रश्नवाचक सवनामो में/कूण/का प्रयोग होता है यथा — कूण जासी कौन जाएगा ?

स प्रश्नवाचक क्रियाविशेषणो से युक्त वाक्य

आलोच्य बोली मे /कणे॑/, /क्यां॑/ को कर/ /कद/ /कठे/ आदि क्रिया विशेषणो के क्रिया के पूव प्रयोग होने से प्रश्नवाचक वाक्य सृष्ट होते हैं । इन वाक्यो मे क्रियाविशेषण पद पर बल रहता है एव अ त्य सुर अवरोही होता है । यथा–थू कद जाईस । तू कब जाएगा ? राम कठे जाव । राम कहा जाता है ? तू घरे का कर जाईस । तू घर कैसे जायेगा ? तू क्यो पढे॑ । तू क्यो पढ़ता है ?

निषेधार्थक अव्ययों से युक्त वाक्य

प्रयोग के आधार पर निषेधार्थक अव्यय-युक्त वाक्यों को दो वर्गों में विभाजित जा सकता है– 1 सामान्य निषेधात्मक वाक्य 2 प्रेरणार्थक या आज्ञावाचक निषेधात्मक वाक्य।

अ सामान्य निषेधात्मक वाक्य

इस प्रकार के वाक्यों में /को + क्रिया + नी/, /कोयनी/ /नई/ का प्रयोग होता है। सुर लहर की स्थिति सामान्य होती है, यथा– /हूँ को जाऊंना/ मैं नहीं जाऊंगा या मैं नहीं जाता। /हूँ पढ़ूँ कोयनी/ मैं पढ़ता नहीं हूँ। हूँ नई जाऊंला। मैं नहीं जाऊंगा। निषेधात्मक अव्यय पर बल देने से निश्चयात्मकता का बोध होता है।

ब प्रेरणार्थक या आज्ञावाचक निषेधात्मक वाक्य

इस प्रकार के वाक्यों में /मत/ /मति/, /ना/ अव्ययों का प्रयोग होता है। निषेधात्मक अव्यय पर बल रहता है, यथा– /तू मत जाइजो/ तुम नहीं जाना। /तू जाए ना/ तू जाना नहीं। /मति कर/ मत करो आदि।

द बलात्मक वाक्य

इस प्रकार के वाक्यों में किसी एक पद पर अधिक बल /E/ रहता है अथवा /तो/ निपात का प्रयोग होता है जिससे निश्चयात्मकता व केवलार्थकता का बोध होता है। बल वाक्य के किसी भी पद पर हो सकता है, यथा– मदन घरे जासी। मदन (और कोई नहीं) घर जाएगा। /मदन घरे जासी/ मदन घर (और कहीं नहीं) जाएगा। मदन घरे जासी। मदन घर जाएगा (निश्चय ही) /तो/ निपात के द्वारा भी केवलार्थकता व निश्चयात्मकता की अभिव्यक्ति होती है– यथा– /हूँ तो बताव

उपर्युक्त प्रमुख साधारण वाक्य प्रकारों के अतिरिक्त सभी वाक्य

ख स्थानवाचक — इस प्रकार के वाक्यों में /जठे—बठे/ का प्रयोग होता है, जैसे — /जठे बो जासी बठे ही चोर फिरसी । जहाँ वह जाएगा, वहाँ चोर फिरेगा । जठे थू जासी बठे ही आ जा । जहाँ मैं था वहीं आ जा ।

ग दिशावाचक — इस प्रकार के वाक्यों में /जठीने—बठीने/ का प्रयोग होता है, यथा — /राम जठीने जासी बठीने ही जाईस । राम जिधर जाएगा, उधर ही जाऊँगा ।

घ रीतिवाचक — इस प्रकार के वाक्यों में /ज्यूँ ज्यूँ—त्यूँ त्यूँ/ तथा /ज्यों—त्यों, जैसे तैसे—वैसे/ का प्रयोग होता है, यथा — /राम इयाँ सोच रयो है जाणे लाखाँ रुपया रो घाटो लागग्यो है / राम ऐसे सोच रहा है मानो लाखों रुपयों का नुकसान हो गया है । ज्यूँ ज्यूँ ... त्यूँ त्यूँ ... मनता गया त्यों-त्यों घाट बलता गया । जैसे जैसे संन्यासी का ... मिलते गये तैसे-तैसे मोटा होता गया । ... राम मार्यो है बियाँ ई तू मार / जिस तरह से राम मारा है, उसी तरह तुम मारो ।

ङ संकेतार्थक — इस प्रकार के वाक्यों में /जे ... तो/ का प्रयोग होता है, यथा — /जे तू पढ़तो तो पास होयजावतो । यदि तू पढ़ता तो पास हो जाता ।

८.३.५ संयुक्त वाक्य

प्रधान वाक्य तथा उसके एक या एकाधिक समानान्तर वाक्यों के समूह को संयुक्त वाक्य कहते हैं । प्रयोग के आधार पर संयुक्त वाक्यों के दो वर्ग बनाए जा सकते हैं — 1. ऐसे संयुक्त वाक्य जिनमें प्रथम वाक्य किसी विशेष पद से प्रारम्भ नहीं होता । 2. ऐसे वाक्य जो किसी विशेष पद से प्रारम्भ होते हैं ।

1 — इस प्रकार के वाक्यों में /पर और पण/ का प्रयोग वाक्यों को संयुक्त करने में होता है यथा — /हूँ पीसर बो रुळसी / मैं पहुँचूँगा और वह भटकेगा । हूँ जावतो और बो आवतो । मैं जाता था और वह आता था । राम कसन पढ्यो पण मदन को पढ्यो नी । रामकिशन

पढ गया पर मदन नही पढा ।

2 ऐसे वाक्य कालवाचक, निषेधाथक अव्ययो से प्रारम्भ होते हैं यथा– पे ला हू जाईस फेर तू जाए । /प ला फेर, फेर कालवाचक/ पहले म जाऊगा, फिर तू जाना । /ना हू पढू ना बा पढे / ना ना निषधाथक/ न मैं पढ़ता हूँ न वह पढता है । क्स्ता के स यास्ता यास, चाएस्ता चाए विभाजक /केस्ता तू पढ क्से वने पढन दे / या तो तू पढ या उसको पढने दे । यास्ता तू ग्राय जाए यास थारे भाई मैं भेज दिये/ या तो तू आ जाना या तेरे भाई का भेज देना । चाए ता तू देखले चाए थार भाइ ने देखायले । या ता तू देखो या तेरे भाई को दिखा दे ।

८ ४ वाक्य विशेषण

प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष रूप से प्रत्येक वाक्य मे एक उद्देश्य, एक विधेय एव एक सयोजक क्रिया निहित रहती है । वाक्य विश्लेषणाथ यहा इन्ही का क्रमश विवेचन प्रस्तुत किया जा रहा है–

८ ४ १ उददेश्य

सज्ञा या सज्ञा स्थानापन्न पद या वाक्याश उद्देश्य हो सकता है यथा

सज्ञा /राम घरे जावे/ राम घर जाता हैं।

सवनाम - /हैं पाणी पीऊ / मैं पानी पीता हू ।

विशेषण - /लाडिये ने बुलाय ला । लगडे को बुला लाग्रो ।

क्रियाविशेषण– /बा मायं बार एक सरीसा है / वह बाहर–भीतर एक सा है ।

सम्बध वाचक– /रामवाळो भागग्यो/ राम वाला (लडका) भ ग गया ।

क्रियाथक सज्ञा / रमणो ठीक कायनी/ खेलना अच्छा नहा है ।

वाक्याश /घणी गुण्डाई चोखी कायनी/ ज्यादा गुण्डापन अच्छा नही है ।

उक्त सभी अगो का विस्तार एव लाप सम्भव है जिसका विश्लेषण विस्तार एव लोप शीषको के अ तगत किया गया है ।

चाँगाँ/ ऐसा सुदर। (वि) चाँखोसीक/चोखाँई/ नि०) यहा यह उल्लेख नीय है निपातीय प्रयोग पश्चातवर्ती है। /चालणम चोखाँ/ देखणमे भूडाँ (त्रि स +अधि का) क्रि स के स्थान पर कभी-कभी वत का क का प्रयाग भी होता है, यथा-दोखत रा सऊकार।

८ ५ ३ क्रिया विस्तार

क्रियाविशेषण एव क्रियाविशेषण वाक्याश द्वारा क्रिया का विस्तार होता है यथा— /अबँ जासी/ /कद जासी/ (क्रि वि) /अबारई गयो / /प्रायरगयाँ/ /झट-झट खा/ (क्रि वि वा) इसी प्रकार क्रि वि की द्विरुक्ति, वत का क + ई के प्रयोग से, पूवकालिक क +क्रि वि आदि के प्रयोग मे क्रिया का विस्तार होता है।

८ ६ लोप

आलोच्य बाली मे सामा यत जिन पदा या वाक्याशों का लोप होता है वे इस प्रकार हैं- मात्र सना अवशिष्ट—प्रश्न- /कूण गया / ? उत्तर- /छाराँ/ (कर्ता) प्रश्न थनें क्या दीयो। उत्तर—श्रोँम्बा (मन) श्राँम्बा (दीयाँ) (कम) केवल विशेषण अवशिष्ट-प्रश्न छाराँ कमाँक ह-उत्तर- (कूरा) प्रश्न-कस्माँ छोराँ गयाँ उत्तर—लाडियाँ। प्रश्न—कदा जणा भेळा होया हैं उत्तर—च्यार जणा। सना विशेषण अवशिष्ट— प्रश्न— कूण आयरया हैं। गोराडाँ छाराँ। मात्र क्रिया अवशिष्ट (तू) पन

८ ७ ग्रन्वय

ग्रालोच्य बोली म ग्र वय के सम्बन्ध म निम्नलिखित नियम निर्धारित किये जा सकते हैं–

1 कर्त्ता के लिंग वचन के ग्रनुसार त्रिया के लिंग वचन होते हैं, यथा -छोरा॑ गया॑ (पु ए व) छोरा गया (पु ब व) छोरी गई (स्त्री ए व) छोरयां॑ गया (स्त्री ब व) ।

2 सामान्यत सभी कर्ताग्रो को एकत्र करके उनके पश्चात सख्यावाची विशेषण ग्रथवा सवधाचक सवनाम /सब/ /सैं॑न/जोड दिया जाता है, यथा-/रा॑मर मदन ढोए गया / छोरा-छोरी सैं॑न /सब गया /

3 यदि कम परसग रहित हो तो क्रिया के लिंग-वचन कम के ग्रनुसार होते हैं, यथा– म्हे॑ रोटो खाई । सीता तेल ढोळ दियो॑ ।

4 यदि कम परसग सहित हो तो क्रिया सवदा पु ए व मे होती है, यथा–/म्हे॑ बै॑नै॑ पूछिया / मा छोरे॑ नैं॑ मारियो॑ ।

5 यदि वाक्य रचना मे दो कम होते हैं व परसग रहित होते हैं तो क्रिया निरटवर्ती कम के ग्रनुसार लिंग वचन धारण करती है यथा म्हे॑ सागरपूडी लाई । यह नियम वकल्पिक है यथा म्हे॑ चावळ दाळ खायो ।

6 /सब/ /सैं॑न/ म सभी कर्मों का ग्र तर्भाव हो जाता है यथा /बै॑ चावळ, दाळ, माड पापड सब खाया ।

८ ८ पदक्रम

पदक्रम के स दभ म निश्चित नियम निर्धारित नही किये जा सकते क्योंकि बलात्मकता, प्रश्न ग्रादि म पदक्रम परिवर्तित होता रहता है फिर भी पदक्रम के सबध म सामान्य नियम निर्धारित किए जा सकते हैं । ग्रालोच्य बोली म सामा य पदक्रम इस प्रकार है-पहले कर्त्ता, फिर कम एव फिर क्रिया, यथा- /रा॑म घरे जावै॑/ कहानी म कभी-कभी क्रियापद का भी पहले प्रयोग होता है । 2 विशेषण का प्रयोग सज्ञा स पूर्व एव पश्चात दोनों ही स्थलों पर होता है, यथा चोखा ग्रा॑म्बा लाए । ग्रा॑बा चोखा लाए ।

अध्याय/९ निष्कर्ष एवं उपलब्धियाँ

पिछले अध्यायो मे बीकानेरी का सर्वाङ्गीण भाषातात्विक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन की उपलब्धियो के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किए जा सकते हैं—

1 निम्नलिखित ध्वनियां बीकानेरी का निजी वैशिष्टय द्योतित करती है—/ अ, ए ऑ, ब, द ड, ळ / अ- आचार्य पाणिनि ने अकुहविसर्जनीयाना कण्ठ -सूत्र मे 'अ' को कठ्य कहा है। बीकानेरी मे यह ध्वनि पूर्णत कठ्य है। /अ/ से यह ध्वनि भिन्न है। /अ/ का उच्चारण बोली मे हिंदी की भांति ही अर्द्ध विवृत ह्रस्व मध्य है यथा—हिंदी अभी की अजार परंतु /अ/ ध्वनि अर्द्ध सवृत पश्च ह्रस्व स्वर है। हिंदी की ऐ, इ एव कभी कभी अ का उच्चारण बीकानेरी म इसी ध्वनि में होता है, यथा—हि ऐसा की असो, हि कितना की कतो हि इतना की असो हि० रक्षा रखना। अग्रेजी शब्द मे कास के 'क' म यह ध्वनि उच्चरित होती है। इस ध्वनि का प्रयोग केवल शब्दादि मे ही होता है। /ए/ यह अर्द्ध विवृत अग्र ह्रस्व स्वर है। इसका उच्चारण अग्रेजी Men Pen क प (प+ए) में की भांति होता है इस ध्वनि का प्रयोग शब्द के आदि मध्य एव अन्त्य तीनो स्थानो पर होता है यथा— देंण, रण कण सर बन जाये आदि। /ऑ/ यह अर्द्ध विवृत ह्रस्व पश्च स्वर है। इसका उच्चारण अग्रेजी शान on की भांति है यथा— पॉन, जॉर आदि इसके अतिरिक्त शेष सम्पूर्ण स्वर हिंदी की ही भांति है। /ब/ /द/ /ड/ का उच्चारण क्रमश ब द ड से भिन्न है। /ड/ ध्वनि वर्त्स्य है। इस ध्वनि के बोली मे मुझे चार शब्द ही उपलब्ध हुए है। ड्मा, डर, डर, ड्रा। जो क्रमश मट्ठ सांड लगाने की ध्वनि, व पेट के वाचक हैं। /ळ/ ध्वनि उत्क्षिप्त है जो पार्थिवक से इसका पार्थक्य सिद्ध करती है। यथा काल (कल) काळ (मृत्यु) गाल (कपोल) गाळ (गाली)।

2 बीकानेरी मे सज्ञा पदो का निर्माण प्रातिपदिक अश मे लिंग-वचन-कारक सबध दर्शी विभक्त प्रत्ययो के योग से होता है। सज्ञा

पदो के तीन रूप हैं मूल, विकारी एव सबोधन । मूल रूप बिना परसर्गों के ही वाक्यो मे प्रयुक्त होते हैं । विकारी रूप परसर्ग ग्रहण करते हैं । सबोधन रूप भावावेश पुकारने आदि मे प्रयुक्त होते हैं । बीकानेरी मे कुछ रूप कर्मकारक, अधिकरण कारक म बिना परसर्गो की सहायता के प्रयुक्त होते है, यथा— /घरे जाऊ / घर को जाता हू, /घरे कोयनी/ घर मे नही है । इन्हे सस्कृत के कारकीय रूपो में अवशिष्ट रूप ही स्वीकार किया जा सकता है एव इनका प्रयोग भी सरल है । बीकानेरी मे दो लिंग, दो वचन है । परसर्गों मे कर्मकारक /ने /करण का व अपादान/सू /सम्प्र /रै /सम्ब /रो रा री/ अधि /मे, मोय ऊपर, पर/ सम्बो /हे, ओ, अरे, रे/ है ।

बीकानेरी मे /हूँ, म्हे/ उ पु /थू थे/ म पु /आँ आ अँ, बा/ सकेत वाचक, /जका/ सबध वा /कुण/ प्र वा / कोइ/ अनि वा /आप/ आदर व निज वा एव /सब, सगळे/ सर्ववाचक सर्वनाम है । सार्वनामिक रूपो की रचना प्रक्रिया उन सज्ञा पदो के अनुरूप ही है, जिनके वे स्थानापन्न है ।

4 विशेषण पदो मे केवल ओकारान्त विशेषण ही अपने निर्माण के अनुरूप लिंग व बोधक विभक्ति प्रत्यय ग्रहण करते हैं । शेष विशेषण पद अपने विशेष्य से सर्वथा अप्रभावित रहते हैं ।

5 बीकानेरी मे सस्कृत की भाँति ही कृत व तद्धित प्रत्यय पद विभक्ति प्रक्रिया मे सहायक होते हैं । सुप प्रत्ययो द्वारा नाम पदो की एव तिङ प्रत्ययो द्वारा क्रियापदो की रचना होती है ।

6 बीकानेरी मे क्रियापद तिङ एव कृत् प्रत्ययो के योग से निर्मित होते हैं । तिङ प्रत्ययो से केवल वर्तमान, भविष्यत काल एव आज्ञार्थक रूप ही सृष्ट होते है एव वाक्यान्तर्गत सहायक क्रियाएं भी ग्रहण करते हैं ।

बीकानेरी का अपना निजी शब्द कोश है जो इसे अपनी भगिनियों से पृथक करता है ।

निष्कर्षत यही कहा जा सकता है कि बीकानेरी बाली रचना एव विश्लेषण की दृष्टि से सस्कृत व्याकरण परपरा से प्रभावित होते हुए भी निजी वैशिष्ट्य रखती है ।

बोली का नमूना

करकर री कोंणी

एक माजी थी ही । वेंरे एक पैलवान बेटो हो । वो एक दिन खेत गयोड़ो हो । खेत रे मांय खेजड़ो हो । खेजड़े रे ऊपर हाथी चढ़ग्यो । बऊ सासू ने कैयो देखो सासूजी खेजड़ो माथे ऊंदरो चढ़ग्यो । सासू कैयो तणसूं ला नांखदे । बठीनें ला एक दूसरो पैलवान आवतो हो । वे सुणर सोचियो के हुये घररी लुगायों हाथी ने ऊंदरो कैर तणखे सूं हांके जणे मनख तो घणा पैलवान होसी । वे पूछियो 'माजी थारो बेटो कठे है' । जणे वे कई म्हारो बेटो खेत में गयोड़ो है । इते एक दूसरो पैलवान फेर आयग्यो । आपस में दोए कुश्ती लड़ने लाग्या । माजी बेटे रे भातो लेर आवती । वे कई घरती कुड़ती क्यो लड़ो, म्हारी हथाल्यों ऊपर लड़ोनी । माजी भातो तो माथे ऊपर ले लियो और वे दोनो हथाल्यो ऊपर लड़न लाग्या । खेत सनें पांची तो बेटो डेढ सो सोठण्यो चरावतो । वे जाणियों मा भाज दोयां जने मनें मरावनें लेइयाई । वो माथे रो बोथियोड़ो चम्रो खोलर डेढ सो सोठण्यां री गोठड़ी बणायर दोड़ियो । इतें एक चीलक गोंठरी झपटो मारर उठाय लेगी । आगे राजा री राणी माथ धोमर सुकावती थी । गोंठ वेंरी आंख में पड़गी । वा रोड़ती सासू सनें गई के सासूजी आंख में करकर पड़गी । सासू काढण लागी तो डेढ सो सोठण्यां री टोळी निकळी सेन सोठण्यो तो दाहगी । एक सोढ वेंरें कबर पकड़ ली । वे कई के एक तो पाळीस । वे कबर वेंने बोध ली । वा अकास में घर'न आवती । एक दन कबर वेंरी नस माथें चढर गयो परो । वां दस गज री खासड़ो तोडर लायां । मानें केंयो न्याव बणाइस । मा केंया आधी तो खायले । न्याव बणायर तरनें लाग्यां'र न्याव में पाणी भरीजण लाग्यां'र कबर दोड़ियां ओय रौंड करकर मराय देवती प । वे सोंढ नें छोड़ दी । सांढ पाछी आपरें टाल में गई परी ।

एक बुढिया थी । उसके एक पहलवान पुत्र था । उस बुढिया के घर में एक वक्ष था । एक दिन उसका पुत्र खेत गया हुआ था । घर में जो वक्ष था उस पर हाथी चढ गया । पहलवान की पत्नी ने कहा—सासूजी वक्ष पर चूहा चढ गया है । सास ने कहा तिनके से उतार दो । उसी समय उस ओर से एक पहलवान निकल रहा था । उन दोनो की बात सुनकर उसने सोचा इस घर की स्त्रिया हाथी को चूहा कहकर तिनके से फेंक रही है फिर पुरुष तो बहुत वीर होंगे । ऐसा सोचकर उसने कहा-माजी तेरा पुत्र कहा है ? बुढिया ने कहा । मेरा पुत्र खेत गया हुआ है । उसी समय एक और पहलवान आ गया । वे दोनो पहलवान आपस में लडने लग गये । बुढिया अपने पुत्र के खाना लेकर खेत जा रही थी । उन दोनो को आपस मे लडते देखकर बुढिया ने कहा जमीन पर क्यो लड रहे हो मेरी हथेलियो पर आ जाओ । वे दोनो उसकी हथेलियो पर लडने लगे । बुढिया चलती गई । जब वह खेत पहुँची तो उसके पुत्र ने दोनो पहलवानो को लडते देखा । उसने सोचा— मा आज मुझे पिटवाने के लिए इन दो को लाई है । वह डेढ सौ ऊटनिया चरा रहा था । उसने अपने सिर पर बांधे हुए चद्दर को उतारा एव उन डेढ सौ ऊटनियो को उसमें बाधकर भागने लगा । उसी समय एक चील उस गठरी को झपट कर ले गई । एक राजा की रानी अपना गीला सिर सुखा रही था । उसने ऊपर की ओर देखा तो वह गठरी गिरकर उसकी आख म गिर गई । वह चिल्लाती सासू के पास गई । उसने कहा सासू जी आख मे किरकिर गिर गई । सासू निकालन लगी तो डेढ सौ ऊटनिया निकली उनमे से एक राजा ने रख ला । वह ऊटनी आकाश मे चरने जाती थी । एक दिन राजा उसकी गदन पर चढकर आकाश मे गया । वहा से वह एक दस गज की काकडी तोडकर लाया । उसने अपनी मा से कहा कि मैं इसकी नाव बनाऊगा । मा ने कहा आधी तो खालो आधी की नाव बना लो जब नाव बनी तो वह तरने गया एव वहा नाव म पानी आने लगा । राजकुमार वहा से भागा एव ऊटनी को कोसने लगा ।

सहायक ग्रंथ-सूची

	लेखक का नाम	ग्रंथ का नाम
1	आचार्य यास्क	निरुक्त
2	आचार्य पाणिनि	अष्टाध्यायी
3	कात्यायन	वार्तिक
4	पतञ्जलि	महाभाष्य
5	भट्टोजि दीक्षित	लघुसिद्धांत कौमुदी
6	भर्तृहरि	वाक्यपदीयम्
7	कच्चायन	कच्चायन व्याकरण
8	जगदीश कश्यप	पालि महाव्याकरण
9	वररुचि	प्राकृत प्रकाश
10	हेमचन्द्र	प्राकृत व्याकरण
11	पुरुषोत्तम देव	प्राकृतानुशासन
12	हेमचन्द्र	अपभ्रंश व्याकरण
13	हेमचन्द्र	देशी नाममाला
14	कामताप्रसाद गुरु	हिन्दी व्याकरण
15	किशोरीदास वाजपेयी	हिन्दी शब्दानुशासन
16	दुनीचन्द्र	हिन्दी व्याकरण
17	सुनीतिकुमार चटर्जी	भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी
18	,,	राजस्थानी भाषा
19	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	हिन्दी भाषा का इतिहास
20	,,	ब्रजभाषा व्याकरण
21	डॉ० उदयनारायण	हिन्दी भाषा उद्भव और विकास
22	,,	भोजपुरी भाषा और साहित्य
23	श्यामसुन्दरदास	भाषा विज्ञान
24	बाबूराम सक्सेना	सामान्य भाषा विज्ञान
25	डॉ० मुरारीलाल	हिन्दी में प्रत्यय विचार
26	डॉ० चन्द्रभान रावत	मथुरा जिले की बोली

एक बुढ़िया थी। उसके एक पहलवान पुत्र था। उस बुढ़िया के घर में एक वृक्ष था। एक दिन उसका पुत्र खेत गया हुआ था। घर में जो वृक्ष था उस पर हाथी चढ़ गया। पहलवान की पत्नी ने कहा—सासूजी वृक्ष पर चूहा चढ़ गया है। सास ने कहा तिनके से उतार दो। उसी समय उस ओर से एक पहलवान निकल रहा था। उन दोनों की बात सुनकर उसने सोचा 'इस घर की स्त्रियां हाथी को चूहा कहकर तिनके से फेंक रही है फिर पुरुष तो बहुत जोर होंगे। ऐसा सोचकर उसने कहा-माजी तेरा पुत्र कहां है? बुढ़िया ने कहा। मेरा पुत्र खेत गया हुआ है। उसी समय एक और पहलवान आ गया। वे दोनों पहलवान आपस में लड़ने लग गये। बुढ़िया अपने पुत्र के खाना लेकर खेत जा रही थी। उन दोनों को आपस मे लड़ते देखकर बुढ़िया ने कहा जमीन पर क्यों लड़ रहे हो मेरी हथेलियों पर आ जाओ। वे दोनों उसकी हथेलियों पर लड़ने लग। बुढ़िया चलती गई। जब वह खेत पहुँची तो उसके पुत्र ने दोनों पहलवानों को लड़ते देखा। उसने सोचा— मां आज मुझे खिलाने के लिए इन दो को लाई है। वह डेढ़ सौ ऊंटनियां चरा रहा था। उसने अपने सिर पर बांधे हुए चद्दर का उतारा एवं उन डेढ़ सौ ऊंटनियों का उसमें बांधकर भागने लगा। उसी समय एक चील उस गठरी को झपट कर ले गई। एक राजा की रानी अपना गीला सिर सुखा रही था। उसने ऊपर की ओर देखा तो वह गठरी गिरकर उसकी आंख म गिर गई। वह चिल्लाती सासू के पास गई। उसने कहा सासू जी आंख में किरकिर गिर गई। सासू निकालने लगी तो डेढ़ सौ ऊंटनियां निकली उनमे से एक राजा न रख ली। वह ऊंटनी आकाश मे चरने जाती थी। एक दिन राजा उसकी पूंछ पर चढ़कर आकाश मे गया। वहा से वह एक दस गज की लकड़ी तोड़कर लाया। उसने अपनी मां से कहा कि मैं इसकी नाव बनाऊंगा। मां ने कहा आधी तो जलाओ आधी की नाव बना लो जब नाव बनी तो वह तैरने गया एवं वहां नाव मे पानी आने लगा। राजकुमार वहां स भागा एवं ऊंटनी को कोसने लगा।

सहायक ग्रथ-सूची

	लेखक का नाम	ग्र थ का नाम
1	आचार्य यास्क	निरुक्त
2	आचार्य पाणिनि	अष्टाध्यायी
3	कात्यायन	वार्तिक
4	पतञ्जलि	महाभाष्य
5	भट्टोजि दीक्षित	लघुसिद्धात कौमुदी
6	भर्तृहरि	वाक्यपदीयम
7	कच्चायन	कच्चायन व्याकरण
8	जगदीश कश्यप	पालि महाव्याकरण
9	वररुचि	प्राकृत प्रकाश
10	हेमचन्द्र	प्राकृत व्याकरण
11	पुरुषोत्तम देव	प्राकृतानुशासन
12	हेमच द्र	उपभ्र श व्याकरण
13	हेमचन्द्र	देशी नाममाला
14	कामताप्रसाद गुरु	हिन्दी व्याकरण
15	किशोरीदास वाजपेयी	हि दी शब्दानुशासन
16	दुनीच द्र	हि दी व्याकरण
17	सुनीतिकुमार चटर्जी	भारतीय आर्य भाषा और हि दी
18	" "	राजस्थानी भाषा
19	डॉ० धीरेन्द्र वर्मा	हि दी भाषा का इतिहास
20	"	ब्रजभाषा व्याकरण
21	डॉ० उदयनारायण	हिन्दी भाषा उद्भव और विकास
22	"	भोजपुरी भाषा और साहित्य
23	श्यामसुन्दरदास	भाषा-विज्ञान
24	बाबूराम सक्सेना	सामान्य भाषा विज्ञान
25	डॉ० मुरारीलाल	हिन्दी मे प्रत्यय विचार
26	डॉ० चन्द्रभान रावत	मथुरा जिले की बोली

27	डा० कैलाशचन्द्र अग्रवाल	शेखावाटी बोली एक वर्णनात्मक अध्ययन
28	रामेश्वरप्रसाद	बुन्देली का भाषा शास्त्रीय अध्ययन
29	डा० भोलानाथ	भाषा विज्ञान
30	,,	हिन्दी भाषा
31	डा० भोलाशंकर व्यास	संस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन
32	डा० चन्द्रभान रावत	हिन्दी भाषा रूप और विश्लेषण
33	डा० हरदेव बाहरी	हिन्दी भाषा उद्भव रूप और विकास
34	डा० सरनामसिंह	हिन्दी भाषा रूप और विकास
	,,	हिन्दी की तद्भव शब्दावली
35	शिवनाथ	हिन्दी कारकों का विकास
36	डा० नामवरसिंह	हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योगदान
37	हीरालाल माहेश्वरी	राजस्थानी भाषा और साहित्य
38	सीताराम लालस	राजस्थानी शब्द कोश
39	डा० पुरुषोत्तम मेनारिया	राजस्थानी भाषा की रूपरेखा
40	डा० एल० पी० तेसीतोरी	पुरानी राजस्थानी
41	सीताराम लालस	मारवाडी व्याकरण
42	डा० मोतीलाल मेनारिया	राजस्थानी भाषा और साहित्य
43	सीताराम लालस	राजस्थानी व्याकरण
44	पं० नरोत्तमदास	राजस्थानी व्याकरण
45	डा० कन्हैयालाल	हाडौती बोली और साहित्य
46	डा० गौरीशंकर हीराचंद ओझा	बीकानेर राज्य का इतिहास
47	कर्नल टाड	राजस्थान का इतिहास
48	गौरीशंकर आचार्य	बीकानेर एक परिचय
49	डा० करणीसिंह	बीकानेर के राज्य घराने का केन्द्रीय सत्ता से संबंध